श्री आत्मानंद ग्रंथमाला नं १९

॥ श्री ॥

प्रश्नोत्तरपुष्पमाला.

श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वर शिष्य पंडित
श्रीलक्ष्मीविजयजी, तच्छिष्य मुनिराज
श्रीहंसविजयजीविरचित, २०९

प्रश्नोत्तरसंग्रह

अनेक भव्य जीवोना हितार्थे
छपावी प्रसिद्ध करनार
श्रीजैन आत्मानंद सभा,
भावनगर.

मुंबई-निर्णयसागर प्रेस

वीर संवत् २४३७ आत्म संवत् १६ विक्रम संवत् १९६७

Printed by B R Ghanekar at the Nirnaya sagar Press,
23 Kolbhat Lane, Bombay, and Published by
Vallabhdas Tribhuvandas for Shri
Jain Atmanand Sabha,
BHAVNAGAR.

अर्पणपत्रिका.

स्वर्गवासी शेठ नगीनदास कपुरचंद झवेरी

सुरत

आप व्यावहारिक तेमज धार्मिक स्थितिमा उच्च प्रवृत्तिवाला हता आपनु हृदय धार्मिक, शांत, दयालु, परोपकारी अने साधर्मी बंधुओने सहाय करवानी भावनाथी वासित हतुं जीवदया, ज्ञानोद्धार अने एवा अनेक कार्योमा, मळेली लक्ष्मीनो सद्व्यय करी आपना उत्तम जीवनने उज्ज्वल कर्युं हतु एवा आपना परलोकवासी सद्गुणालंकृत आत्माने ज्ञानमय शांति आपनारो, अने भव्यात्माने आनद आपनारो आ प्रश्नोत्तरपुष्पमाला ग्रंथ आपना स्मरणीय हृदयमा आरोपित करी, तेनी प्रेरणा करनार आपना वडिल प्रिय पुत्र फकीरभाइना पुत्रकर्तव्यने अभिनदन आपी अमे अति आनदित थइए छीए

ली०

श्रीजैन आत्मानंद सभा,

भावनगर.

प्रस्तावना.



निरंतर परोपकारमाज परायण एवा मुनिमहाराज के जेमणे पोतानी जींदगी अन्य जीवोना हितार्थे गालवानोज निरधार करेलो छे तेओ पोताने मलता अवकाशनो उपयोग एवा सुकार्योमा करे छे के जेथी स्वपर हित थाय छे बीजा वधा कार्यो करता ज्ञानाभ्यास करीने तेनो अन्य भव्य जीवोने लाभ आपवो ए कार्य एटलु वधु लाभकारक छे के तेना लाभनी श्रेणि दीर्घ काल पर्यंत चालती होवाथी तेनु प्रमाण करी शकातु नथी आवा अपरिमित लाभने माटेज पूर्वपुरुषो अनेक ग्रंथो रची गया छे के जेनो लाभ अत्यारे चतुर्विध संघ पोतपोताना क्षयोपशमना प्रमाणमा ले छे अवसर्पिणी कालना प्रभावथी बुद्धिनी मदता थवाने लीधे पूर्वाचार्यप्रणीत अनेक शास्त्रो अत्यारे वाची के समजी शकाता नथी, एवा दुर्घट समयमा दीपकनी जेम अल्प बुद्धिमान जीवो पण लाभ मेलवी शके तेवा विचारथी श्रीमद्विजयानंद सूरीश्वर प्रसिद्धनाम मुनिराज श्रीआत्मारामजी महाराजना शिष्य पंडित श्रीलक्ष्मीविजयजीना शिष्य मुनिराज श्रीहंसविजयजीए कोड कोड सुबोध श्राद्धनी पृछाथी तेमज स्वमतिकल्पनाथी २०९ प्रश्नो उत्पन्न करीने

तेना उत्तरो शास्त्राधार साथे लखी काढी तेने एक लघु ग्रथनु रूप आप्यु छे

आ ग्रथ बाल जीवोनेज नहि, पण सामान्य बुद्धिमान जीवोने पण घणो उपकारक छे, तेनु खास कारण ए छे के दरेक उत्तर शास्त्राधारपूर्वक आपवामा आव्या छे एकदर जुदा जुदा ३० शास्त्रोना आधार आपवामा आव्या छे जेनी अदर सूत्र, टीका, चूर्णि, भाष्य तथा अनेक ग्रथोना आधारो छे ते दरेकना नामोनु लीस्ट आ साथे सामेल राखवामा आव्यु छे तेमा कुवलय माला, लोकप्रकाश, सेनप्रश्न तथा हीरप्रश्नना आधारो घणाप्रश्नोना सबधमा आपवामा आव्या छे

आ ग्रथनी अदर आवेला २०९ प्रश्नोनी अनुक्रमणिका आ साथे आपवामा आवेली छे, जे वाचवाथी आ ग्रथनु उपयोगीपणु स्वत सिद्ध थइ शके तेम छे, जेथी ते सबधी अहीं विशेष लखवानी आवश्यकता नथी तोपण खास लक्ष खेंचवा लायक बाबतो नीचे प्रमाणे छे

प्रारभमा पचपरमेष्ठीना गुणो सबधी प्रश्नो छे त्यारबाद श्रावकना सामायिकादि करणीना उपकरणोनी सिद्धता करी छे ४६ मा प्रश्नना उत्तरमा स्त्रीकेवलीने खास पुष्टि आपी छे ५९ ने ६० मा प्रश्नमा श्राद्ध करवानो निषेध केटलीक रमुजी

कथाओ तथा सवालो लखीने दृढ कर्यो छे ६९ मा प्रश्नना उत्तरमा पद्धीओनी अरजी आपेली छे ते खास वांचवा लायक छे तेमा तथा त्यार पछीना त्रण प्रश्नोना उत्तरोमा खास शिकारनो निषेध प्रमाणपूर्वक सिद्ध कर्यो छे ए भाग साद्यत वांचवा लायक छे प्रश्न १७७ तथा १४२ ना उत्तरोवडे उपधान तथा योगनी आवश्यकता सिद्ध करी छे १६८–१६९ने १७१ आ त्रण प्रश्नोना उत्तरमा कच्छ मोटी खाखर, भुज तथा भद्रेश्वरना जिनालयमांहेना शिलालेखोना भाषांतर तथा साराश घणा विस्तारथी आपेला छे मोटी खाखरना शिलालेखनी तो आखी नकल पण आपी छे न्यायना विषयने पण छोडी दीधो नथी छेवटना १९८ तथा १९९ प्रश्नोत्तरमा शब्द आकाशनो गुण नथी ए हकीकत तथा गुरुलघु अने अगुरुलघुनुं स्वरूप वहु सारी रीते बतावी आप्यु छे, अने तेने माटे श्रीमलयगिरिजी महाराजनी करेली आवश्यकवृत्तिनी पाठ साथे साक्षी आपी छे प्रथम ढुंढक तरीके ओलखाता अने हालमा स्थानकवासी अथवा साधुमार्गी तरीके ओलखाताने छता जैनभाइओने पण भूली गया नथी तेने पण वे चार प्रश्नोमा याद कर्या छे २९ मा प्रश्नना उत्तरमा पंजाबमा नाभानी सरकारे करेलो फेंसलो, अक्षरशः

आप्यो छे, अने प्रश्न १११–११२ ना उत्तरमां तेने समजाववा माटेज असज्झायनु स्वरूप प्रगट कर्यु छे मृत्यु पाळख करवामा आवता जमणवारनी कनिष्ठता शास्त्राधार साथे प्रश्न ५५ ना उत्तरमा बतावी आपी छे मुनिराजने विहार करवा सबधी केटलोएक विवेक प्रश्न १०७ थी १०८ सुधीमा प्रदर्शित कर्यो छे आ सिवाय पण केटलीक बीना खास ध्यान खेंचवा लायक छे परतु ते दरेकनु वर्णन अहीं करवा जता प्रस्तावना वधी पडे छे, तेथी तेने माटे अनुक्रमणिकाज साद्यत वाची जवानी भलामण करवी योग्य लागे छे

आ ग्रथ वहोळे भागे कच्छ देशना विहार प्रसगेज लखायो छे, पूर्ण पण त्या करवामा आव्यो छे, तेथीज आ ग्रथमा कच्छ देशमा आवेला उपयोगी शिलालेखोनो समावेश थइ शक्यो छे

ग्रथना प्रारभमा मूकेला त्रण श्लोको पैकी त्रीजो श्लोक पद्यबद्ध छे तेना पहेला पदमा 'प्रश्नोत्तर मणीवकमाला' कहेवा वडे ग्रथनु नाम सूचव्यु छे मणीवक शब्द पुष्पवाची होवाथी 'प्रश्नोत्तर पुष्पमाला' एवो शब्दार्थ नीकळे छे.

विवेकी वाचक गणो! आ अपूर्व ग्रथनी आ बीजी आवृत्ति छे आ ग्रथ जैनसमाजमा एटलो वधो उपयोगी थइ पड्यो छे, अने तेनी उपयो-

गिता अने महत्वता एटली वधी जणायेली छे के तेनो वहोला प्रमाणमा लाज लेनाता, थोडी मुदतमा ते खपी जता अने वारवार तेनी मागणी थता मुनिराज श्रीहसविजयजी महाराज अने पन्यासजी सपतविजयजी महाराजनी आज्ञानुसार आ सजा तरफथी आ तेनी वीजी आवृत्ति प्रकट करवामा आवी छे प्रथम आवृत्ति श्रीजैन धर्म प्रसारक सजा तरफथी प्रकट करवामा आवी हती वधारे सरलताथी लाज जैनबधुओ ले, तेवा खास हेतुथी उक्त महात्माओनी आज्ञा मुजब प्रथमनी आवृति करता आ वीजी आवृत्तिना कद टाईप विगेरेमा घटतो फेरफार करेलो छे, अने प्रथममा २०१ प्रश्नोत्तर हता तेने वदले आमा ७०५ प्रश्नोत्तरनो समावेश करवामा आवेलो छे

आवा उपयोगी ग्रथ अमारी सजा तरफथी वहार पडे तेमा अमोने मोटु मान छे, जेथी आ अत्युत्तम ग्रथ प्रगट करवानी आज्ञा आपनार उक्त मुनिमहाराजाओना अमे सपूर्ण आजारी छीए

सदरहु ग्रथना उत्तजेनार्थे रु० ५१ शा रायचद फुलचजी कालीयावाडीवाला, रु० ५१ शा मनु पीताम्बरदास नवसारीवाला तेमज रु० ५० शा. लल्लुजाइ जीवणजी नवसारीवाला तरफथी मली

रु० १५२ श्रमोने मळ्या छे, तेथी तेओए करेली मदद माटे श्रमो उपकार मानीए छीए

श्रा ग्रंथ निर्णयसागर प्रेसमा छपावेलो होवाथी तेमज तेना प्रुफ विगेरे बहु सभालपूर्वक तपासेल होवाथी तेमा जूल रहेवानो संजव बहु ओछो छे छता दृष्टिदोषादि कारणथी रही गयेल थोडीक जूलोनु शुद्धिपत्र साथे श्रापेलु छे, ते प्रमाणे सुधारीने वाचवा जलामण करीए छीए

ग्रथना उपयोगिपणा विगेरेना संबधमा वधारे जलामण करवा करता श्रा ग्रथज साद्यत वाची जवानी विनति करीए छीए जेथी लेखक, प्रकट करनार श्रने वाचनार बधुश्रोनो प्रयास फलीजूत थशे, एम श्रमोने संपूर्ण श्राशा छे

श्रात्मानद जुवन
श्रात्म संवत् १६
श्रशाड वदी ७
बुधवार

श्रीजैन श्रात्मानद सजा,
जावनगर

अनुक्रमणिका.





आ ग्रंथमां जे जे अन्य ग्रंथो अने सूत्रादिनी साक्षीओ आपेली छे तेनां नाम.

प्रवचन सारोद्धार.
निगम प्रवचन
योगशास्त्र.
कुवलयमाला
आचार दिनकर
अनुयोगद्वार चूर्णि
विवाह चूलिया.
व्यवहार चूर्णि
मुहपत्ति प्रकरण.
अनुयोगद्वारवृत्ति
दशवैकालिक सूत्र
अगचूलिया
आचाराग सूत्र
आवश्यक सूत्र.
ओघनिर्युक्ति
श्रीउत्तराध्ययन सूत्र
उत्तराध्ययन दीपिका
पद्मपुराण
वंदिता सूत्रनी अर्थदीपिका टीका.
उत्तराध्ययननी कमलसयमी टीका.
तीर्थ कल्प
कुरियरय समीर वृत्ति
पर्वतिथि विचार
सौभाग्य पंचमी कथा
श्रीकल्प सूत्र
जीवविचार वृत्ति (क्षमा कल्याण)
जीवविचार बृहद्वृत्ति (रत्नाकर पाठक)
हैमलघुप्रक्रियावृत्ति
अनुयोगद्वार सूत्र
श्राद्धविधि
दशवैकालिक बृहद्वृत्ति.
श्राद्धगुण विवरण.
मुद्रित कुमुदचंद्र नाटक.
श्राद्धनी आवश्यकता (नानी बुक)
हिंसादि अष्टक

लिखकमजरीनीप्रस्तावना	मध्याह्न व्याख्या
दशवैकालिक चूर्णि	शुद्धोपयोग विचार
लोकप्रकाश	प्रमाणमीमांसा
उपदेशचिंतामणि	संवेगद्रुमकंदली
श्रीपालचरित्र(नयविमल)	धर्मलाभाष्टक
मेघमाला	बृहद् भाष्य
समवसरणप्रकरण	कथाकोष
सिंदूर प्रकर	निशीथ भाष्य
सेनप्रश्न	वृदारु वृत्ति
हीरसौभाग्य महाकाव्य	अध्यात्म कल्पद्रुम
भगवती सूत्र वृत्ति	महाभारत.
सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र	तत्त्वतरंगिणी
सूर्यप्रज्ञप्ति टीका	व्यवहारसूत्रवृत्ति
स्थानांग सूत्र टीका	गच्छाचार सूत्र
स्थानांग सूत्र	गच्छाचार टीका
लोकतत्त्व निर्णय	आवश्यकवृत्ति (मल
जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	गिरि)
हीरप्रश्न	श्राद्धविधि विनिश्चय



॥ श्री ॥

प्रश्नोत्तरपुष्पमाला.



आद्यांतिमौ जिनौ नत्वा, जितमारौ रणांगणे ॥ तथा धर्मधुराधारौ, गणेशौ चादिमांतिमौ ॥ १ ॥

विजयानंदसूरींद्रं, देवसूरिसमप्रभम् ॥ श्रीलक्ष्मीविजयाभिख्यं, तथैव गुरुपुंगवम् ॥ २ ॥

प्रश्नोत्तरमणीवकमालां, मालामिव श्रियाम् ॥ कुर्वे हंसाभिधानोहं, स्वान्योपकृतिहेतवे ॥ ३ ॥

प्रश्न. १ श्रीदेवाधिदेवना बार गुण[१] दर्शावो.

उत्तर अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि-
दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ॥

---

१ पद्यच्छद छे.

भामंमलं दुंदुभिरातपत्रं
सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ १ ॥

ए काव्यमां प्रदर्शित आठ महाप्रातिहार्य अने चार मूल अतिशय मली श्रीअरिहंत भगवंतना बार गुण थाय छे ते आ प्रमाणे

१ अशोकवृक्ष	७ देवदुंदुभि
२ देवोनी पुष्पवृष्टि	८ त्रण छत्र
३ दिव्य ध्वनि	९ अपायापगमातिशय
४ चामर	
५ सिंहासन	१० ज्ञानातिशय
६ भामंमल	११ पूजातिशय
	१२ वचनातिशय

प्रश्न २ उपर दर्शावेला अष्ट महाप्रातिहार्यने सत्प्रातिहार्य कहेवानुं शु प्रयोजन छे ?

उत्तर श्रीतीर्थंकर भगवान्ने केव-

१ पडिहार देवोना कृत्यने प्रातिहार्य कहेवामा आवे छे

ळज्ञान थया बाद कोइ जग्याए समव-
सरण न थाय, तोपण पूर्वोक्त आठ तो
देशनासमये साथे सतत विद्यमान रहे छे.
वास्ते तेउं सत्प्रातिहार्य तरीके उंलखाय छे.

प्रश्न ३ श्रीसिद्ध परमात्माना आठ
गुणनुं वर्णन करो

उत्तर १ केवलज्ञान ५अक्षय स्थिति
२ केवलदर्शन ६ अरूपी.
३ अव्याबाध सुख ७ अगुरुलघु.
४ क्षायिक सम्य- ८ अनंत बल.
क्त्व यथाख्यात चारित्र

ज्ञानावर्णादि अष्ट कर्मनो क्षय थ-
वाथी अनुक्रमे उक्त आठ गुणो सिद्ध
परमात्मामां प्रगट थाय छे

प्रश्न ४ श्रीआचार्य महाराजना छ-
त्रीश गुणनुं दिग्दर्शन करावो

उत्तर पंचिदिअ सूत्रपाठमां प्रसिद्ध
छे ते श्रीआचार्य महाराजना छत्रीश गुण
जाणवा बीजा पण अनेक प्रकारे छत्रीश.

गुणो निवेदन कर्या छे. ते मांहेलो एक प्रकार दर्शावीए छीए.

॥ यदुक्तं प्रवचनसारोद्धारे ॥

अठविहा गणिसपइ, चउग्गुणा नवरि हुंति वत्तिस ॥ विणओय चउभेओ, छत्तीसगुणा इमे गुरुणो॥१॥

आ गाथानो सांराश एवो छे के अष्टविधगणि संपदाना चार चार भेद करतां बत्रीश थाय छे तेनी साथे विनयना चार भेद मेलवतां गुरुना छत्रीश (३६) गुण थाय छे ते अष्ट गणि संपदा अने चार प्रकारना विनयनां नाम आ प्रकारे छे

१ आचारसंपत्	४	७ प्रयोगसपत्	४
२ श्रुतसपत्	४	८ संग्रहपरिज्ञासंपत्	४
३ शरीरसपत्	४		३२
४ वचनसपत्	४	१ आचारविनय	
५ वाचनासपत्	४	२ श्रुतविनय	
६ मतिसपत्	४	३ विक्षेपणविनय	

४ दोषपरिघातविनय ३६

ए छत्रीश गुणनो विस्तार प्रवचनसारोद्धारथी जाणवो

प्रश्न ५ श्रीउपाध्यायजी महाराजना पचीश गुण कया ?

उत्तर अगीयार अंग तथा बार उपागनुं पठन पाठन करे अने चरणसित्तरी १ तथा करणसित्तरी १ पाले ए सर्व मली पचीश गुण थाय छे

प्रश्न ६ अगीयार अंग तथा बार उपांगनां नाम कहो

उत्तर क्रमथी अगीयार अंग तथा बार उपागना नाम नीचे मुजब जाणवां

॥ अगीयार अग यथा ॥	॥ बार उपाग यथा ॥
१ आचारांग सूत्र	१ उववाइ सूत्र
२ सूयगडांग सूत्र.	२ रायप्पसेणी सूत्र.
३ ठाणांग सूत्र.	३ जीवाभिगम सूत्र.
४ समवायांग सूत्र.	४ पन्नवणा सूत्र

५ विवाहपन्नत्ति अपर नाम जगवती सूत्र.	५ जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र
६* ज्ञाताधर्मकथा सूत्र	६ चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र ७ सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र निरयावलिया सुयखध
७ उपासकदशा सूत्र	८ कप्पिया
८ अतगम्दशा सूत्र	ए कप्पवडसिया
ए अणुत्तरोववाइ सूत्र	१० पुप्फिया
१० प्रश्नव्याकरण सूत्र	११ पुप्फचूलिया
११ विपाक सूत्र	१२ वन्हिदशा

प्रश्न ७ चरणसित्तरीना ७० जेद कया ?

उत्तर. ५ पच महाव्रत

१० दश प्रकारनो श्रमणधर्म.

१७ सत्तर प्रकारे सयम

१० दश प्रकारे वैयावृत्य

ए नव प्रकारे ब्रह्मचर्यगुप्ति

---

* उग अगना चे उपाग डे

३ ज्ञानादि त्रिक एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्र.
१२ बार प्रकारनो तप.
४ क्रोधादि चारनो निग्रह.
ए ७० नेदने चरणसित्तरी कहेवामां आवे छे.

॥ यदुक्तम् ॥

वय ५ समणधम्म १० संजम १७, वेयावच्चं १० च वंनगुत्तीर्ज ए, नाणाइतिगं ३ तव १२ कोह- निग्गहाइ ४ चरणेयं ॥

प्रश्न. ८ करणसित्तरीना ७० नेद कया ?

उत्तर ४ चार प्रकारनी पिंमविशुद्धि. ५ समिति. १२ नावना. १२ प्रतिमा एटले प्रतिज्ञा, अनिग्रह विशेष ५ इंद्रियना निरोध. २५ पच्चीश प्रकारे पडिले

हण ३ *गुप्ति ४ चार प्रकारना अभि-ग्रह एटले नियम विशेष

उक्त ७० नेदने करणसित्तरी कहे-वामा आवे ठे

॥ यदुक्तम् ॥

पिडविसोही ४ समिई ५, नावन १२ पडिमा १२ य इंदिअनिरोहो ५ ॥ पडिलेहण २५ गुत्तीर्ज, अभि-ग्गहो ४ चेव करण तु ॥ १ ॥

प्रश्न ए मुनिराजना २७ गुणो कया ?

उत्तर ६ पच महाव्रत अने ठट्ठु रात्रिनोजन विरमण ए ठ व्रतनु पालन करवु

६ ठ कायना जीवोनी रक्षा करवी

६ पाच इंडियो अने लोजनो निग्रह करवो.

१ क्षमा करवी

१ नावविशुद्धि करवी

---

* पचीश उपगरणनी पडिलेहण श्रीप्रवचन-सारोद्धारमा कहेली ठे

१ पडिलेहणादि करवामां विशुद्धि राखवी.
१ संयमयोग एटले संयमव्यापार युक्त थवुं.
३ अकल्याणमां वर्त्तता मन, वचन, कायानुं राकवुं
१ शीत आदिकनी पीमाउने सहन करवी.
१ मरणांत उपसर्ग सहन करवा तत्पर रहेवु
ए साधु महाराजना सत्तावीश गुण जाणवा.

॥ यदुक्तम् ॥

उव्वय उकायरक्का, पंचिंदियलोहनिग्गहो खंती ॥ नावविसुःधी पमिलेहणाइ करणे विसुःधीय ॥ १ ॥ संजमजोएजुत्तय, अकुसलमणवयणकायसरोहो ॥ सीयाइपीडसहणं, मरणउवसग्गसहणं च ॥

प्रश्न १० चारित्रना कोइ अधिष्टायक देवदेवी उे के केम ?

उत्तर ब्राह्मी, सुंदरी, विजया, जयती अने योगकला ए पांच देवीउं छे ॥ यडुक्तं श्रीनिगमप्रवचने नयसारोध्धारे श्रीमच्छाशनीनगुणानंदचूडामणौ चतुर्थाध्याये ॥

ब्राह्मीसुंदरीविजयाजयंतीयोगकलेति नाम्न्यो विशुध्धपंचमहाव्रताधिष्ठात्र्य इति ॥

प्रश्न ११ जीवन्मुक्त कोण ?

उत्तर जीवन्मुक्त केवली जगवान् यडुक्त निगमप्रवचने तृतीयाध्याये ॥

जीवन्मुक्ताः केवलिनो विदेहमुक्ता सिध्धाश्चेति ॥

प्रश्न १२ केटलाएक लोको एम कहे छे के व्याघ्रादिक हिंसक प्राणीउंने मारवा जोइए, कारणके एक हिंसक प्राणीने मारवाथी घणा जीवोनी रक्षा थाय छे ते योग्य छे के केम ?

उत्तर. पूर्वोक्त कहेवुं अयुक्त छे, कारणके प्राणीमात्रथी कांइने कांइ हिंसा तो थइ जाय छे, तेथी ते सर्वने मारवा जोइशे अने तेम करवा जतां तो लाभने बदले मूल हानि थवानी

॥ यदुक्तम् श्रीयोगशास्त्रांतरश्लोकसंग्रहे ॥

केचिद् वदंति हंतव्याः, प्राणिनः प्राणघातिनः॥हिंस्रस्यैकस्य घाते स्याद्, रक्षणं भूयसां किल ॥१॥ तदयुक्तमशेषाणां, हिंस्रत्वात्प्राणिनामिह ॥ हंतव्यता स्यात्तल्लाभमिच्छोर्मूलक्षतिः स्फुटम् ॥ २ ॥

प्रश्न १३ कोइ एम कहे छे के दुःखी जीवोने मारी नाखवा जोइए, कारणके तेमने मारवाथी तेमनां दुःखनो अवश्य विनाश थाय छे आ कथन दुरस्त छे के नहीं?

उत्तर ए कथन डुरस्त नथी, कारणके एम करवाथी तो बाल, वृद्ध अने ग्लान प्रमुख तमाम डु खीने मारवानो प्रसंग आवे, अने ते अल्प डु खी जीवो मरीने नरकमा जाय तो तेमने त्यां अनतु डु ख सहन करवु पडे

॥ यदुक्तम् श्रीयोगशास्त्रे ॥

संसारमोचकास्त्वाहुर्डःखिनां वध इष्यते ॥ विनाशे डःखिनां डःखविनाशो जायते किल ॥ १ ॥ तदप्यसांप्रत ते हि, हता नरकगामिन· ॥ अनतेषु नियोज्यते, डःखेषु स्वल्पडु खका· ॥ २ ॥

प्रश्न १४ सम्यग्दृष्टि जीव तिर्यंचनु आयुष्य वांधे के नहीं ?

उत्तर सम्यग्दृष्टि जीव तिर्यग् आयु अनुजवे (जोगवे) पण वांधे नहीं, कार-

एके प्रथम आयुष्य वंधायुं होय तो ते सम्यक्त्वी जीव तिर्यग्गतिमां पण जाय छे.

यडुक्तम् श्रीपरमानंदसूरिशिष्य श्रीरत्नप्रज्ञसूरिविरचित कुवलयमालायाम् ॥

सम्यग्दृष्टिजीवस्तिर्यगायुरनुज्ञवति न पुनर्बध्नाति ॥ यतः ॥

ज्ञवेद्वैमानिकोवश्यं, जंतुः सम्यक्त्ववासितः ॥ यदि नोद्बांतसम्यक्त्वो, बद्धायुर्न पुराथवा ॥ १ ॥

प्रश्न १५ पंच महाव्रतधारी यतिजीने नाणुं अपाय के नहीं ?

उत्तर. यतिउने ज्ञोजन, वस्त्र, पात्र, औषध अने पुस्तक आपी शकाय पण ड्रव्य आपी शकाय नहीं, कारणके ते ड्रव्य लेनार ने देनार वने नरकगामी कहेला छे.

॥ यदुक्तं श्रीआचारदिनकरे ॥

यतिज्यो ज्ञोजनं वस्त्रं, पात्रमौष-

धपुस्तके ॥ दातव्यं ऽन्यदानेन, तौ द्वौ नरकगामिनो ॥ १ ॥

प्रश्न १६ देव गुरुने वंदन कर्या विना पाणी पीवु कल्पे के केम ?

उत्तर ज्यासुधी विधिपूर्वक चैत्यवंदन अने साधुवदन न कर्युं होय त्यासुधी प्रथम प्रहरे पाणी पण पीवु कल्पतुं नथी

॥ यदुक्तमाचारदिनकरे ॥

तत्थ तुमे पुव्वण्हे, पाणंपि न चेव ताव पायव्व॥ नो जाव चेइयाइ, साहू-विय वंदियाविहिणो ॥ १ ॥

प्रश्न १७ कोइने सामायिक तथा प्रत्याख्यान लेवानो पाठ न आवडतो होय अने कोइ उच्चरावनार पण न होय तो सामायिक तथा पच्चक्खाण करवु के नहीं ?

उत्तर कदापि कोइने बुद्धिनी मंदताने लीधे सामायिक पच्चक्खाण मुख-

पाठे न आवडतुं होय, तो तेणे पण मानसिक अभिग्रहथी सामायिक पच्चख्खाण करवु परंतु एटलुं विशेष ठे के दंडक उच्चारपूर्वक अंगिकार करेलुं सामायिक पच्चख्खाणना आगार उच्चारणना सबबे अतिचारना आगमनथी भग्न थतुं नथी, पण मनथी आदरेलुं तो अतिचारथी भग्न थाय ठे तेने माटे प्रायश्चित्त ग्रहण करवुं

॥ यदुक्तं श्रीआचारदिनकरे ॥

कदाचित्कस्यचित्प्रज्ञामंदेन सामायिकप्रत्याख्यानदंडकं मुखपाठे नायाति तेन चित्ताभिग्रहेनैव सामायिकप्रत्याख्याने करणीये परं चायं विशेषः यथा दंडकोच्चारणेनादृतं सामायिकं प्रत्याख्यानं च अतिचारागमनैरभग्नं भवति तन्मध्याकारोच्चारण-

वशात् मनसादृते तु दंडकोच्चारणव-र्जिते सामायिकप्रत्याख्याने जग्ने ञवतः तद्भग्ने प्रायश्चित्तविधिप्रक्रमोक्त प्रायश्चित्तमाचरणीयम् ॥

प्रश्न १७ श्रावकने सामायिकमां तथा पोसहमां स्थापनाचार्य अने चरवलो मुहपत्ति राखवानुं कोइ सिद्धातमा कह्युं ठे के केम ?

उत्तर. श्रीअनुयोगद्वार सूत्रनी चूर्णिमां सामायिक करनारने चार उपगरण राखवानु फरमान ठे तेमा कह्यु ठे

॥ तत्पाठो यथा ॥

सामाइयकडस्स समणोवासगस्स चउविहेधम्मोवगरणेपन्नते तजहा-ठवणायरिअत्ति मुहपत्तीअत्ति जवमालियत्ति दंडपाउपुछणगंचत्ति ॥

॥ तेमज व्यवहार सूत्रनी चूर्णिमां भगवान् श्रीमहावीर स्वामी फरमावे छे के हे गौतम! मुहपत्तिनु पमिलेहण कर्या विना जे कोइ वंदना दे तेने गुरुप्रायश्चित्त आवे. आ उपरथी सिद्ध थाय छे के सामायिक प्रतिक्रमणमां मुहपत्ति अवश्य राखवी जोइए, कारणके प्रतिक्रमणमां वारंवार गुरुवंदन करवु पडे छे

॥ तथाच तत्पाठः ॥

जो मुहपत्तीयं अपडिलेहित्ता वंदणं देई गोयमा तस्स गुरुअं पायछितं हविज्जा ॥

तथा सिंहश्रावके पोषधशालामां जइ स्थापनाचार्यनुं स्थापन करवापूर्वक मुहपत्तिनी पडिलेहण करी पोसह ग्रहण कर्यो एवो पाठ श्रीविवाहचूलियामां छे ते आ प्रमाणे.

॥ तथाच तत्पाठः ॥

गंतु पोसहसालाए, ठवित्तु ठवणायरिय ॥ मुहपत्तिअं पमज्जतो, सीहो गिण्हइ पोसहं ॥ १ ॥

प्रश्न. १९ केटलाएक एम कहे छे के मुहपत्ति तो साधुनु उपगरण छे, वास्ते श्रावकोए उत्तरासगना छेडाथी सामायिक पोसहादि करवुं तेनुं केम ?

उत्तर मुखवस्त्रिकास्थापन प्रकरणमां आ वावतनो एवो खुलासो कर्यो छे के यतिनु उपगरण होवाथी मुहपत्ति मूकी देवामा आवती होय तो श्रावकोए वस्त्र पण पहेरवु न जोइए, केमके ते पण साधुनुं उपगरण छे अने उत्तरीय वस्त्र मूकवानो विधि तो श्रीआवश्यकचूर्णि प्रमुख अनेक शास्त्रमां वतावेलो छे, तेथी कया वस्त्रांचलथी सामायिकादिक धार्मिक

क्रिया करवी ? उतरासण विना तो ते बनी शके तेम नथी जुवो आवश्यकचूर्णिमां आटली वस्तुओ मूकवानुं फरमान छे

॥ तद्यथा ॥

सामाइअं करंतो, सउो कुंडल किरीड मणि वर्द्द ॥ तंबोल पुप्फ पंगुरण–माइ वोसिरइ सव्वंपि ॥ १ ॥

तथा ओढवानुं वस्त्र मूकी दइ अने मुहपत्ति ग्रहण करी पोसह प्रमुख करवानुं श्रीव्यवहारचूर्णिमां पण कह्युं छे.

॥ तत्पाठो यथा ॥

पावरणं मुत्तूणं, गिण्हीता मुहपत्तिअं ॥ वउकाय विसुद्धीए, करेइ पोसहाइयं ॥ १ ॥

तथा कुंडकोलिय श्रावके उत्तरिय वस्त्र मूकीने पोसह कर्यो एवो पाठ सातमा श्रीउपासकदशांग सूत्रमां छे ते पूर्वोक्त

सावियाचा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदठोवउत्ते तदप्पिअकरणे अन्नउ कच्छइ मणं अकुव्वमाणे उभओकालं आवस्सयं करिंति ॥

॥ एतद् वृत्त्येकदेशो यथा ॥

तदर्पितकरणः करणानि तत्साधकतमानि देहरजोहरणमुखवस्त्रिकादीनि तस्मिन्नावश्यके यथोचितव्यापारनियोगेनार्पितानि नियुक्तानि येन स तथा सम्यग् यथास्थानन्यस्तोपकरण इत्यर्थः ॥

प्रश्न २३ केटलाएक ढुंढक अने तेरापथीओ एम कहे छे के मुहपत्ति दोराथी मुख उपर निरंतर बांधी राखवी जोइए ते योग्य छे के केम ?

उत्तर मुहपत्ति हमेश मुख उपर दोराथी बांधी राखवी ते कुलिंग छे तथा वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध छे. वास्ते तेम करवु योग्य नथी.

प्रश्न २४ कोइ सूत्रमां मुहपत्ति हाथमां राखवानो पाठ छे ?

उत्तर नीचे आपेला सूत्रपाठोथी मुहपत्ति हाथमां राखवी सिद्ध थाय छे. जुओ श्रीदशवैकालिक सूत्रना पांचमा अध्ययनना प्रथम उद्देशानी ८३ मी गाथामां (हथ्थग) एटले मुहपत्ति एवो प्रकट पाठ छे, पण मुखग एवो पाठ नथी

॥ तद्यथा ॥

अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिछन्नंमि संवुडे ॥ हथगं संपमज्जित्ता, तथ भुंजिज्ज संजए ॥ ८३ ॥

॥ अवचूरिः ॥

अनुज्ञाप्य तत्स्वामिन मेधावी साधुः प्रतिछन्ने कोष्टकादौ सवृत उपयुक्त. साधुरिर्याप्रतिक्रमणं कृत्वा तदनुहस्तकं मुखवस्त्रिकारूपमादायेति वाक्यशेषः ॥ सप्रमृज्य विधिना तेन काय तत्र भुञ्जीत संयतः ॥ ८३ ॥

तथा श्रीअंगचूलिया सूत्रमां दीक्षासमये मुहपत्ति हाथमां आपवानो पाठ छे

॥ तद्यथा ॥

तओ सूरी दंतीदंतुन्नएहिं पिट्ठोवरिकुप्परसंठिएहिं करेहिं रयहरणंगवित्ता वामकरानामिआए मुहपत्तिं लवंति धरितुसम्मं उवओगपरोसीस अञ्झवणयकायं इक्कि-

क्कवयं नमुक्कारपुव्वं तिन्निवारे उच्चरावेइ ॥

तथा श्रीआचारांग सूत्रना वीजा श्रुतस्कंधमां वीजा अध्ययनना त्रीजा उद्देशामां खांसी तथा वगासुं प्रमुख आवे तो हाथथी मुख ढांकवु कहेलुं ठे वास्ते ढुंढक नाइर्उए पक्षपात मूकी अने दृष्टि निमीलन करी जरा विचार करवो जोइए के मुख वांधवानी आज्ञा होय तो सूत्रकार मोंढे हाथ राखवानु फरमान केम करे ? माटे मध्यस्थताथी नीचे आपेलो ते पाठ तपासवो

॥ तद्यथा ॥

से भिक्खुवा भिक्खुणीवा ऊसासमाणेवा निसासमाणेवा कासमाणेवा ठीयमाणेवा जंभायमाणेवा

उड्डोएवा वायणिसग्गेवा करेमाणेवा पुव्वामेव आसयंवा पोसयवा पाणिणा परिपेहित्ता ततो संजयामेव ओसासेज्जा जाववायणिसग्गेवा करेज्जा ॥

तथा श्रीआवश्यक सूत्र अने श्रीओघनिर्युक्तिमा कायोत्सर्ग करतां जमणा हाथमा मुहपत्ति राखवानो विधि छे

॥ तथाहि ॥

मुहपोत्तीयंउज्जुहत्थे ॥

तथा अर्थापत्तिथी पण मुखवस्त्रिका हाथमा राखवी सिद्ध थाय छे, कारणके श्रीउत्तराध्ययन सूत्रना १२ मा अध्ययनमा एवो लेख छे के हरिकेशबल मुनिने आवता जोइ ब्राह्मणो आ प्रमाणे बोलवा लाग्या के आ बीजत्स

रूप धारण करनारो कालो विकराल अर्थात् लांवा दंतोष्ठवालो कोण आवे छे ? आ लेखथी सावीत थाय छे के मुहपत्ति वांधी होत तो तेमना दांत अने होठ शी रीते मालूम पडत ? वास्ते तेमना हाथमां मुहपत्ति होवी जोइए. एवुं अजाण वालको पण समजी शके तेम छे परंतु ढुंढक तेरापंथीउं समजी शकता नथी ते तेमनां कर्मनो दोष छे तेमना हितने माटे पाठ देखाडवो ए अमारी फरज छे, माटे उपकार बुद्धिथी श्रीउत्तराध्ययन सूत्रना बारमा अध्ययननी गाथा लखीए छीए.

॥ तद्यथा ॥

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे, काले विकराले पोक्कनासे ॥ ओमचेलए पंसुदिशायभूए, संकर दूसं परिहरिय कंठे ॥ ६ ॥

॥ एतद्दीपिका यथा ॥

कतरः कोय आगच्छति अतिशयेन क इति कतर· एकार प्राकृतत्वात् परमयं कीदृगः दीप्तरूपो बीभत्सरूपो दीप्तवचनं बीभत्सार्थवाचक पुनः कीदृशः कालः कालवर्णः पुनः कीदृग् विकरालो विकृतांगोपागधर· लंबोष्ठदतुरत्वादिविकारयुक्त· पुनः कीदृश· पोक्कनास· पोक्का अग्रे स्थूलोन्नता मध्ये निम्ना चिप्पटा नासा यस्य स पोक्कनास· पुनः कीदृग् अवमचेल अवमानि असाराणि चेलानि वस्त्राणि यस्य स अवमचेलः मलाविलत्वेन जीर्णत्वेन त्याज्यप्रायवस्त्रधारीत्यर्थ· पुनः कीदृग पाशुपिशाचभूत पाशुना

रजसा पिशाचभूतः पांशुपिशाचभूतः धूल्यावगुंठितशरीरत्वेन मलिनवस्त्रत्वेन भूततुल्य इत्यर्थः एतादृशः कोयं शंकरदूष्यकंठे परिधृत्य अत्रागछति समीपे आगतं दृष्ट्वा एवं ऊचुरित्यर्थः शंकर उत्करटकस्तत्रस्थं दूष्यं वस्त्रं शंकरदूष्य यद्यपि तस्य साधोर्वस्त्रं उत्करटकस्य नास्ति तथापि तेषां अत्यंतघृणोत्पादकत्वेन तैरुक्तं कोयं उत्करटकस्य वस्त्रं कंठे परिधृत्य पिशाचसदृशो भ्रमन्नत्रागछति स हि हरिकेशीसाधुः कुत्रापि आत्मीय उपकरणं न मुंचति सर्वं वस्त्रोपधिउपकरणादिकं गृहीत्वैव भिक्षाद्यर्थं भ्रमतीति भावः ॥

प्रश्न. २५ कोइ राजसभा अथवा पंक्ति-

तोनी सभामां शास्त्रार्थथी मुखवस्त्रिका हाथमां राखवी सिद्ध थयेल छे के ?

उत्तर घणी जगोए मध्यस्थ पंडितो समक्ष आ बाबतनो निर्णय थयेलो छे. तेनो ताजो दाखलो नाभा राजसभानो छे पंजाबमां नाभानरेश समक्ष थयेल चर्चाना फेंसलाथी पण मुखवस्त्रिका हाथमा राखवी सिद्ध थइ चुकी छे ते फेंसलानी नकल पांच पंडितोनी सही साथे इहां रजु करीए छीए

॥ फेंसला शास्त्रार्थनाभा ॥

श्रीमान् मुनिवर वल्लभविजयजी पण्डितश्रेणि सरकार नाभा इस लेखद्वारा आपको विदित करते हैं गत संवत्सरमें आपने हमारे यहां श्री १०८ श्रीमान्महाराजाधिराज नाभानरेशजीके हजूरमें छै (६) प्रश्न निवेदन करके कहा था कि " यद्यपि जैनमत और

जैनशास्त्रभी सर्वथा एक है, परंन्त कालांतरसें हमारे ओर ढुंढियोंमे परस्पर विवाद चला आता है बलकि कईएक जगापर शास्त्रार्थभी हुए है, परंतु यह बात निश्चय नहीं हुई कि अमुक पक्ष साधु है । श्रीमहाराजकी न्यायशीलता और दयालुता देशांतरोमें विख्यात है इससे हमे आशा है कि हमारेभी परस्पर विवादका मूल आपके न्याय प्रभावसे दूर होजावेगा जगतदिच्छासें इन दिनोमें ढुंढियोंके महंत सोहनलालजी यहां आये हुये है उनके सन्मुखही हमें इन ठे ६ प्रश्नोका उत्तर जैनमतके शास्त्रानुसार उनसे दिलाया जावे "

आपके कथनानुसार उक्त महंतजीको इस विषयकी इत्तला दी गई आपने इत्तला पाकर साधु उदयचंदजीको अपने स्थानापन्नका अधिकार देकर उ-

नके हानिलाभको अपना स्वीकार करके शास्त्रार्थ करना मान लियाथा ॥

तदनतर श्री १०८ श्रीमन्महाराजाधिराजजीकी आज्ञानुसार हमलोगोको शास्त्रार्थके मध्यस्थ नियत किया गया तिस पिछे कई दिनतक हमारे सामने आपका और उदयचंदजीका शास्त्रार्थ होता रहा। शास्त्रार्थके समयपर जो प्रमाण आपने दिखलाये सो शास्त्रविहित थे। आपकी उक्ति और युक्तियेंभी निःशकनीय और प्रमाण्य थी। प्राय करके श्लाघनीय है ॥

उक्त शास्त्रार्थके समयपर और इस डेढ वर्षके अंतरमेंभी जो इस विषयको विचारा है उससे यह बात सिद्ध नहीं हुई कि जैनमतके साधुओंको वार्त्तालापके सिवाय अहोरात्र अखड मुखबधन और सर्व काल मुखपोतिकाके मुखपर

रखनेकी विधि है। केवल भ्रांति है। केवल वार्त्तालापके समयही मुखवस्त्रको मुखपर रखनेकी आवश्यकता है। हमारे बुद्धिबलकी दृष्टिद्वारा यह बात प्रकाशित होती है कि आपका पक्ष ढुंढियोंसे बलवान् है ॥

यद्यपि आपका और ढुंढियोंका मत एक है और शास्त्रभी एक है। इसमेंभी संदेह नहीं साधु उदयचदजी, महात्मा और शांतिमान् है, परंच आपने जैनमतके शास्त्रोंमें अतीव परिश्रम किया है और आप उनके परम रहस्य और गूढार्थको प्राप्त हुए है। सत्य वोही होता है जो शास्त्रानुसार हो और जिसमें उसके कायदोंसें स्वमत और परमतानुयायिओंको शका ना हो शास्त्रके विरुद्ध अंधपरंपराका स्वीकार करना केवल हठधर्म है ॥

कि आपका पक्ष उनकी अपेक्षासे
लवान् है। आपकी विद्याकी स्फूर्त्ति और
रूढ धर्माचारकी नेष्ठा अतीव श्रेष्ठतर
प्राय करके जैनशास्त्र विहित प्रतीत
होता है और है। इत्यल २० पोह स
१९६२ मु रियासत नाभा ॥

हस्ताक्षर पण्डितोंके:
पडित भैरवदत्त.
पडित श्रीधर राज्य-पडित नाभा.
पडित. दुर्गादत्त.
पडित वासुदेव.
पडित वनमालिदत्त ज्योतिषी.

प्रश्न २६ कोई अन्यमतना शास्त्रमां जैन मुनिना वेष विगेरेनु वर्णन छे के नहीं ?

उत्तर पद्मपुराणमा महादेव पार्व-

तीनो संवाद छे तेमां पार्वतीए महादेव पासे सवाल कर्यो के 'हे महादेवजी! जैन मुनिओ केवा होय, केवो आहार करे, केवु कर्त्तव्य करे अने तेमनो अवतार शामाटे थयेलो छे? ते निवेदन करो' आ प्रमाणे पार्वतीनो सवाल थतां महादेव बोल्या के 'हे देवि! दंडकंवल सहित, उनना रजोहरणवाला, शुद्ध आहारना लेवावाला, अने शास्त्रानुसार चालवावाला, तुंबी अर्थात् तरपणी हाथमां राखवावाला, भिक्षाभोजन करनारा अने श्वेत वस्त्र छे जेमनां एवा जैन मुनिओ कदापि क्रोध करता नथी, अने जीवो उपर हमेश दया करे छे. तेमनो अवतार, प्रति युगमां में मुक्ति कारण धर्मनो फेलावो करवा अने पापनुं निकदन करवा करेलो छे.

---

१ हालना पीत वस्त्र कारणिक छे.

॥ तदुक्तं पद्मपुराणे ॥

ते कीदृशा किमाहारा. कर्म्म कुर्वंति कीदृश ॥ अवतार. कथं तेषां, महादेव निगद्यतां ॥ १ ॥ दंम्कंवलसंयुक्ता, अजलोमप्रमार्जनाः ॥ गृह्णंति शुद्धमाहारं, शास्त्रदृष्ट्या चरति च ॥ २ ॥ तुंबीफलकरा भिक्षा – भोजिनः श्वेतवासस ॥ न कुर्वंति कदा कोपं, दयां कुर्वंति जंतुषु ॥ ३ ॥ मुक्तिकारणधर्माय, पापनि कदनाय च ॥ अवतारः कृतोमीषां, मया देवि युगे युगे ॥ ४ ॥

प्रश्न २७ सुपात्रदानना विषयमां उत्तम, मध्यम अने जघन्य पात्र कोण ?

उत्तर उत्तम पात्र साधु, मध्यम पात्र सुश्रावक अने जघन्य पात्र अविरति श्रद्धालु श्रावक जाणवा

॥ तथाहि ॥

उत्तमपत्तं साहु, मऊमपत्तं सुसावगा जणिया ॥ अविरयसम्मदिठी, जहन्नपत्तं मुणेयवं ॥ १ ॥

प्रश्न. ५० महाश्रावक केवा होय ?

उत्तर दीन डुःखीयामां दयावडे करीने, तथा साधु साध्वी, श्रावक श्राविका, जिनालय, जिनप्रतिमा, जिनागमादि पुस्तकरूप सात क्षेत्रमां जक्तिथी धन वावरतो अने व्रतमां रहेलो महाश्रावक कहेवाय ठे

॥ यदुक्तम् ॥

एवं व्रतस्थितो जक्त्या, सप्तक्षेत्र्यां धनं वपन् ॥ दयया चातिदीनेषु, महाश्रावक उच्यते ॥

प्रश्न ५ए साधर्मी वात्सल्य करवाथी शो लाज ?

उत्तर जे मनुष्य नावथी पोताना स्वधर्मी नाइउंतु अन्न वस्त्रादिकथी वात्सल्य करे ठे एटलुंज नहीं बल्के आदि शब्दथी कष्टमा पडेलाने धनादि सर्व प्रकारनी मदद आपी सुखी करे ठे, अने तेमना बालक बालिकाने विद्याध्ययनना सर्व साधनो मेलवी आपे ठे तेनो जन्म सफल थाय ठे, कारणके एक तरफ साधर्मी वात्सल्य अने एक तरफ सर्व प्रकारना धर्म ए बंने बुद्धितुलामा बराबर उतरे ठे, वास्ते डुष्कालपीडित स्वधर्मीनुं साधर्मी वात्सल्य तो अवश्य करवु जोइए, केमके पुत्रजन्म अने विवाहादि मंगलो तो घर घरमां थाय ठे, परतु संघार्चनादि मंगल तो कोइ नाग्यवान्ना घरमाज थाय ठे

॥ तथाहि ॥

साधर्मिकाणा वात्सल्यं, नोज-

नाछादनादिभिः ॥ यस्तनोति नरो भावात्, तज्जन्म सफलं भवेत् ॥१॥ एगत्थ सव्वधम्मा, साहम्मियवच्छलं तु एगत्थ ॥ बुद्धितुलाए तुलिया, दोविअ तुलाई तुलियाइं ॥ २ ॥ पुत्रजन्मविवाहादि, मंगलानि गृहे गृहे ॥ परं भाग्यवतां पुंसां, श्रीसंघार्चादि मंगलम् ॥ ३ ॥

प्रश्न ३० श्रीजिनपतिनु ध्यान न करे तेनी केवी हालत थाय छे ?

उत्तर जे दुर्बुद्धि मनुष्ये उत्तम भक्तिवडे करीने निश्चित इच्छित फल आपनार जिनपतिनुं ध्यान नथी कर्युं ते महाव्याधिग्रस्त, सडेलां वस्त्रवालो, दीनवदन, भूखे मरतो, वांछाथी सेंकडो घर तरफ जोनारो, आ लोकमां दुःखार्त्त थइ संसारने विषे परिभ्रमण करे छे ॥

॥ तथाहि ॥

महाव्याधिग्रस्तः, शटितवसनो दीनवदनो, बुभुक्षाक्षामात्मा, परगृहशतप्रेक्षणपरः ॥ स दुःखार्तो लोके, भ्रमति हि नवे येन कुधिया, न सद्भक्त्या ध्यातो, ननु जिनपतिश्चिंतितफलः ॥ १ ॥

प्रश्न ३१ जिनालये दर्शन करवा जनारने शु लाभ थाय छे ?

उत्तर हु जिनभुवने दर्शन करवा जइश एवु ध्यान करनारो एक उपवासनु फल हांसल करे छे ऊभो थाय त्यारे बे उपवासनु, जवानी तैयारी करे त्यारे त्रण उपवासनुं, श्रद्धावंत रस्ते जवा माडे त्यारे चार उपवासनु, जिनघरने बारणे पहोंचे त्यारे पाच उपवासनुं, मध्य मरूपमा पदर उपवासनु अने जिनरा-

जनां साक्षात् दर्शन थये एक महिनाना उपवासनुं फल पामे छे

॥ यदुक्तम् ॥

यास्याम्यायतनं जिनस्य लभते ध्यायंश्चतुर्थं फलं षष्ठं चोत्थित उद्यतोऽष्टममथो गंतु प्रवृत्तोध्वनि ॥ श्रद्धालुर्दशमं बहिर्जिनगृहात्प्राप्तस्ततो द्वादशं, मध्ये पाक्षिकमीक्षिते जिनपतौ, मासोपवासं फलम् ॥ १ ॥

प्रश्न ३१ चक्रवर्ती केटला थया छे ?

उत्तर राजा महाराजाओमां शार्दूल समान बार चक्रवर्ती थया छे तेमनां नाम नीचे मुजब—

१ भरत.	४ सनत्कुमार.
२ सगर.	५ श्रीशांतिनाथ.
३ मघवा.	६ श्रीकुंथुनाथ.

७ श्रीअरनाथ. १० हरिषेण.
८ सुभूम. ११ जय.
९ महापद्म. १२ ब्रह्मदत्त.

॥ तथैव प्रोक्तं प्रवचनसारोद्धारे ॥

भरहो १ सगरो २ मघव ३ सणंकुमारोय रायसद्दूलो ४ ॥ संती ५ कुंथूअ ६ अरो ७ हवइ सुभूमोय कोरव्वो ८ ॥ १ ॥ नवमोय महापउमो ९ हरीषेणो चेव रायसद्दूलो १० जयनामोय नरवई ११ वारसमो वंभदत्तोय १२ ॥ २ ॥

प्रश्न ३३ कन्याविक्रयनी जैनोमा छूट छे के केम ?

उत्तर कन्याविक्रय जैन धर्मथी तद्दन विरुद्ध छे जेओ कन्याविक्रय करे छे, तेमने जैन धर्मना फरमाननी माहिती न होवी जोइए, अगर माहिती होय

तो ते श्रद्धाभ्रष्ट होवा जोइए, अथवा तेमने दुर्गतिनो नय नथी एम होवुं जोइए जो नय होय तो तेओ आवु अघटित कार्य केम करे ? गाय बकरीनी पेठे पोतानी अंगजाने वेचवी ते लोकविरुद्ध अने धर्मविरुद्ध छे, तेमां कांइ पण शक नथी. आ कन्याविक्रयना घोर कृत्ये केटलांएक कुटुंबोने पायमाल करी नाखेलां छे घाइकोनां मावाप अने वालवच्चां रखडतां थइ गयां छे वास्ते आ रीवाजने एकदम अटकाववानी खास जरूर छे, कारणके कन्याना लोनमां आवेला मनुष्यो कन्या बरोबर बल्के तेथी अधिक धन आपी जेम शाकनाजी तोखी ले तेम कन्या खरीद करे छे, पण अफसोस छे के ते पामरो पोताने नीख मागवानो वखत आवशे ते तरफ जरा पण दरकार राखता नथी,

सारी उमर पश्चात्ताप करे छे वास्ते अन्यायनो वेपार कोइए पण करवो योग्य नथी, कारणके श्रावकने न्यायसपन्न विभववाला कहेला छे ते छतां जेउ कन्याविक्रय करे छे तेओ नरकनो रस्तो खुल्लो करे छे जैनशास्त्र साफ फरमावे छे के कन्याविक्रय, रसविक्रय अने विषविक्रय करनारा नरकगामी जाणवा जुउं वंदिता सूत्रनी अर्थदीपिका नामनी टीका

॥ तथैवाह ॥

कन्याविक्रयिणश्चैव, रसविक्रयिणस्तथा ॥ विषविक्रयिणश्चैव,नरा नरकगामिनः ॥ १ ॥

प्रश्न ३४ वृद्धावस्थामा केवी हालत थाय छे ?

उत्तर वृद्धावस्थामां गात्र सकोच पामे छे, गति मंद थइ जाय छे, दात

पडी जाय छे, आंखो नमी जाय छे, रूप दूषित थाय छे, मुखमांथी लाळ झरे छे, बांधवो वचन मानता नथी अने भार्या सेवा करवानी चाहना राखती नथी अफसोसनी वार्ता छे के जराथी पराभव पामेलो पुरुष पुत्रोथी पण अवज्ञा पामे छे.

॥ तथाहि ॥

गात्रं संकुचितं गतिर्विगलिता दंताश्च नाशं गता दृष्टिर्भ्राम्यति रूपमेव ह्रसितं वक्त्रं च लालायते ॥ वाक्यं नैव करोति बांधवजनो भार्या न शुश्रूषते हा कष्ट जरयाभिभूतपुरुषः पुत्रैरवज्ञायते ॥ १ ॥

प्रश्न ३५ वृद्धपणामां पूर्वोक्त प्रश्नोत्तरमां जणावेली हालत थाय छे, छतां तेवी अवस्थामां केटलाएक बूढा बाबा शामाटे लग्न करता हशे ?

उत्तर मोटी उमरमां परणवानु का-
रण तो पुत्रादिकनी आशा अने विषय-
तृष्णानु विषमपणुं समजाय छे यद्यपि
तेओ एम जाणे छे के पुत्र थशे तो अमने
बाप कहेशे अने अमारुं नाम राखशे
परतु तेओ जरा पण ख्याल करता नथी
के 'मीया घोर जोगा अने बीबी वर
जोगा' एम कही लोको पछी उडावशे,
तथा वृढा बावाने गले वलगेली ते पत्नी
पुत्रीनी शका उत्पन्न करावा साथे संसा-
रसमुद्रमा डुबाववाने एक अद्वितीय
शिलारूप थइ पडशे, अने पुत्रइच्छा तो
बर आवशे के नहीं ते तो दैवाधीन छे
कुदरतनी कोइने खबर पडती नथी
कदापि पुत्र थयो तो ते वृद्धि पामशे के
नानी उमरमांज आ फानी दुनिया
छोडी जशे, तेनी पण कांइ माहिती
होती नथी कदापि मोटो थयो तो

नाम काढशे के नाम डुवावशे, ते पण कोण जाणी शके ? एवा अनेक दाखला मोजुद छे के अनेक मुसीवतो वेठी मा-वापे कीटथी कुंजर जेवो वनावेलो मोटो दीकरो पोताना मातापिताने महा विपदामां उतारे छे, अने तेनां दुःखथी तेउ आर्त्त ध्यानमां पडी दुर्गतिनां पात्र थाय छे वळी नाम तो कोइनुं अमर रह्युं नथी अने रहेवानुं नथी वास्ते पुत्रथी नाम राखवानी इच्छावाला वूढा वावाउ नानी कोमल वालाउने न फसावतां जिनालय, जीर्णोद्धार, जैनशाला, धर्मशाला अने ज्ञानमंदिरादि धर्मालयो वनावी तेनी साथे पोतानु नाम जोडी जाय तो ते पुत्रथी पण अधिक काल सूधी टकी रहे, ए निसंशय वात छे एटला कारण थीज वस्तुपाल अने तेजपाल जेवा महाशयो दुनियानी सपाटीपर आवी आबु-

राजनां अप्रतिम देवलो वंधावी गया छे, जेनी कीर्त्ति हजारो कोश उपर रहेला पाश्चात्य विद्वानो पण गाया करे छे हवे जेउं विषयवासनामा अंजाइ जइ नानी नाजुक कन्या खरीदी लावे छे, अने खरी महेनतना पैसानुं पाणी करे छे, ते कन्या पण तेमनी न थतां प्राये पराइ थाय छे, अने कुलमा कलंक लगाडी कालुं करे छे, एटलुज नहीं वल्के बूढानु काटलु पण काढी नाखे छे, अने बूढानी लक्ष्मीथी चेन उडावे छे, त्यारे बूढो आर्त्त ध्यानथी मरी दुर्गतिनो परोणो थाय छे माटे वृद्धविवाहनी रसम अटकाववानी खास आवश्यकता छे कन्याविक्रयना दुष्ट रिवाजमा पण आवो वृद्धविवाहज निमित्तभूत छे, कारणके अंग गली गयु छे, मुड पलित थयु छे एटले मस्तके धोला केश आवेला छे, तुड अ-

र्थात् मुख दांत विनानुं बोखुं थयुं छे अने दंड पकडी चालवुं पडे छे, छतां आशा छूटती नथी एवा वृद्धो ज्यारे हजारोनी थेलीओ आपी नाना प्रकारनी आशाथी पाणिग्रहण करवा लाग्या, त्यारे लोभीष्टो कन्याविक्रय करवा ललचाया, केमके निरुद्यमी हरामनु खानारा तो एवा रस्ता खोळताज होय छे. तेमने आवी रीते अनायासे वूढा बावा लखपति बनावी दे त्यारे ते निर्विवेकी लोको ललचाय, ए स्वाभाविक छे वास्ते आ वूढाओनी आशाज अनर्थनुं मूल छे एक कविए कह्युं पण छे

॥ तद्यथा ॥

अंगं गलितं पलित मुंडं
दशनविहीन जातं तुंडं ॥
वृद्धो याति गृहीत्वा दंडं

तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥१॥

प्रश्न ३६ आ दुनियामां विना प्रयोजन वैरी कोण ?

उत्तर मृगना वैरी शिकार करनारा शिकारीउं, मछना वैरी जाल नाखनारा धीवरो अने सज्जनोना वैरी चाडीया निदाखोरो छे यद्यपि हरणो तृण खाइ निर्वाह करे छे माछलीउं जलथी निर्वाह करे छे सज्जनो सतोषवृत्तिवाला होय छे कोइनु काइ पण नुकशान करता नथी तथापि आ दुनियामां उपर दर्शावेला तेमना निष्कारण वैरी होय छे

॥ यदुक्तम् ॥

मृगमीनसज्जनाना
तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनाम् ॥
लुब्धकधीवरपिशुना
निष्कारणवैरिणो जगति ॥ १ ॥

प्रश्न ३७ लिपि अने गणथी नि-
र्दोष शब्द कया ?

उत्तर देवतावाचक अने चंद्रादिवा-
चक जे शब्दो छे ते सर्वे लिपि अने ग-
णथी निर्दोष गणाय छे

॥ यदुक्तम् ॥

देवतावाचकाः शब्दा, ये च चं-
द्रादिवाचकाः ॥ ते सर्वे नैव निंद्याः
स्युर्लिपितो गणतोपि च ॥ १ ॥

प्रश्न ३८ कोइ जैनशास्त्रमां शकुन
जोवानो लेख छे के नहीं ?

उत्तर शकुनशास्त्रादि अनेक ग्रंथोमां
शकुन जोवानी बाबत छे, तथापि इहां
श्रीउत्तराध्ययननी टीकानो एक दाखलो
आपीए छीए ते सूत्रनी कमलसंयमो-
पाध्यायकृत टीकामां एवो लेख छे के १रुपा-

---

१ एक जातनी काली चकली

ढेले, सारस, कागडो, घुवड, मोर, गधेडो, शियालणी, शियाल अने बलद, ए जनावरो प्रस्थान वखते डावी तरफ होय तो कार्यसिद्धि करनारा सूचवेलां छे

सामा सारस वायस, कोसिय सयवत्त गसह सिवाउ ॥ जंबु वसहा वामा, पढाने कज्जसिद्धकरा ॥२॥

प्रश्न ३९ कोइ महाशये शकुन वास्ते शासनदेवतानी प्रार्थना करी छे के केम?

उत्तर कुवलयमालामां कुवलयचन्द्र कुमारे शकुन माटे शासनदेवतानी प्रार्थना करी छे, ते आ प्रकारे एकदा अनुकूल पवन थयो छे जेने, सांभल्यो छे वामे पासे खरनो शब्द जेणे, सव्य तरफ तर्यो छे एक रगनो कूतरो जेने अने जेनी चारे तरफ सुंदर वचननो उच्चार थयो छे एवो कुवलयचन्द्र कुमार कुवलयमाला साथे चालतो आ प्रकारे वि-

चार करतो हतो के, हे प्रवचनदेवि! हुं तातने निरोग देखुं, राज्य पामुं, मारुं सम्यक्त्व वृद्धि पामे अने हुं कुवलयमाला साथे प्रव्रज्या ग्रहण करुं, तेवुं दिव्य ज्ञानथी जोइ उत्तम शकुन आप के जेथी मने शांति थाय. ए प्रकारे चिंतवन करे छे तेटलामां मोतीनी झालरवालु मणिसुवर्णनुं छत्र तेनी आगल भेट करी कोइए कह्युं के हे कुमार! तमारा समीप रहेला आ राजाना मोटा भाइ जेउ जयंतिपुरीना पति छे ते जयंत राजाए तमारे वास्ते आ देवताअधिष्ठित छत्र मोकल्युं छे ते जोइ कुमारे चिंतवन कर्युं के शासनदेवतानो प्रभाव आश्चर्यकारी छे तेथी आ प्रथमज प्रधान शकुन थयुं

॥ तथाच तद्ग्रंथे ॥

अन्यदिने कुमारः कुवलयमालया

समं प्रचलितः जातानुकूलपवनः श्रुतवामखरस्वरः सव्यसमुत्तीर्णैकवर्णऽशुनकः सर्वत्र समुच्चारितचारुवचनो व्यचिंतयदिति भगवति प्रवचनदेवते यदि तात निरामय पश्यामि राज्यं प्राप्नोमि परिवर्द्धते सम्यक्तं कुवलयमालया सम प्रव्रज्यामाश्रयामि तद्दिव्यज्ञानेन परिज्ञाय तादृगमुत्तमं शकुनं देहि येन मे निर्वृति स्यादिति यावच्चिंतयन्नस्ति तावत्पुरस्तस्य मणिकनकनिर्मित प्रलंबितमुक्तावचूलमातपत्र केनाप्युपनीय विज्ञप्त देवास्य भूपस्य जयतीपुरीपति ज्येष्ठो भ्राता जयताभिधा वसुधाधवस्तेन त्वद्धेतवे देवताकृताधिष्ठान छत्ररत्न प्रेषितमिति कुमारेण

चिंतितं अहो प्रवचनदेव्याः प्रभावः येन प्रथममेव प्रधानं शकुनमिति ॥

प्रश्न ४० कोइ प्रधान पुरुषे गुरुजनना पत्रने प्रणाम कर्यो छे के नहीं ?

उत्तर श्री कुवलयचंद्र कुमारे पोताना पिताना पत्रने प्रणाम करेलो छे. तेनी वीना एवी छे के दृढवर्म्म राजानो लेखवाहक उक्त कुमारना छडीदारनी रजाथी कुमारना मुकाममां प्रवेश करी प्रणामपूर्वक समीपे लेख मूकी विनंति करवा लाग्यो के 'हे देव! आपने तातपूज्ये मोकल्या छे ' तेवारे कुमर प्रथम पिताना पत्रने प्रणाम करी तदनंतर तेने फोडीने पोतेज वाचवा लाग्या

॥ तदुक्तं कुवलयमालायाम् ॥

श्री दृढवर्म्मणो नृपतेर्लेखवाहः प्रतीहारनिवेदितः प्रविश्य

प्रणिपत्य लेखं पुरो विमुच्य विज्ञप-
यामासेति देव श्रीतातपादा जवतमा-
कारयति ततः कुमार पूर्वं लेखं प्र-
णम्योन्मुद्य च स्वय वाचयामास ॥

उपरना लेखथी शिक्षण लेवानुं मली आवे छे के ज्यारे आवा महान् राजकुमारो पोताना वडीलोना लेखने नमस्कार करे छे, त्यारे सामान्य स्थितिनां बालको मातापिताने टुकारा टुकारा अने गाळो आपी अपमान करे छे तेमज केटलाएक उद्धत विद्यार्थीओ अने शिष्यो अध्यापकनुं अने गुरुमहाराजनुं अपमान करवा चूकता नथी तेमणे खास ख्याल राखवानी अने विचार करवानी आवश्यकता छे के ज्यारे आवा राजकुमारो परोक्षमा रहेला पोताना पिताना माननी खातर तेमना पत्रने नमस्कार करे छे, तो प्रत्यक्षमां तेओ

केटलो वधो विनय करता हशे ते सहज समजी शकाय छे. त्यारे आपणा उपर शुं वडीलोना विनय करवानी फरज नथी ? अवश्य छेज केमके सांसारिक अने धार्मिक केलवणीमां विनय गुणनीज मुख्यता छे एटला वास्ते आपणा सिद्धांतकारोए पण श्रीउत्तराध्ययन सूत्रमां प्रथम विनय अध्ययन प्ररुपेलुं छे, अने दशवैकालिक सूत्रना विनयसमाधि नामे नवमा अध्ययनना चार उद्देशा बनावेला छे. जुओ, श्रीउत्तराध्ययन सूत्रनी प्रथम गाथामां सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने अने तेमना उद्देशथी बीजा शिष्योने पण कहे छे के 'हे शिष्यो ! हु अनुक्रमे मधुकरवृत्तिथी आहार ग्रहण करी शरीर धारण करनार साधुनो विनय प्रकट करीश ते प्रगट करतां तमे मारुं वाक्य श्रवण करो, कारणके जिनशास-

ननु मूल विनयधर्मज छे ' श्रीदश वैकालिकमां पण कह्यु छे के ' विनयथ ज्ञान अने ज्ञानथी दर्शन थाय छे ' इत्या दिक घणु निवेदन कर्युं छे

॥ तथाच श्रीउत्तराध्ययन सूत्र गाथा ॥

संयोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिरकुणो ॥ विणय पाउ करिस्सामि अणुपुवि सुणह मे ॥ १ ॥

॥ व्याख्या ॥

श्रीसुधर्म्मास्वामी जंवूस्वामि वक्ति जवूस्वामिनमुद्दिश्य अन्यान शिष्यान् वदति भो शिष्याः अ आनुपूर्व्या अनुक्रमेण भिक्षो क्षया मधुकरवृत्त्याहार गृहीत्वा श रधारकस्य साधोर्विनयं प्राडुःक

ष्यामि मे मम विनयं प्रकटीकरिष्यतो यूयं वाक्यं शृणुत यतो जिनशासनस्य मूलं विनयधर्म एव ॥ उक्तं च श्रीदशवैकालिके विणयाओ नाणं नाणाओ दसणमित्यादि ॥

'विनयेन विद्या ग्राह्या' इत्यादि वाक्यवडे विद्या संपादन करवानो पण शास्त्रकार एज रस्तो बतावे छे, कारणके अविनितपणाथी संपादन करेली विद्या सफल थती नथी वास्ते विनयगुणनी खास जरूर छे

प्रश्न ४१ आ पंचम काळमां देवतानुं दर्शन तथा विद्यामंत्रनो प्रभाव अने अवधिज्ञान तथा जातिस्मरणादि भाव होय के नही ?

उत्तर श्रीतीर्थकल्पमां कह्युं छे के बे हजार वर्षनी स्थितिवाला भस्मराशी ग्रहनी पीडा निवर्त्त थशे त्यारे देवताउं दर्शन

आपशे विद्यामंत्र पण अल्प जापथी प्रभाव देखाडशे अवधिज्ञान अने जातिस्मरणादि भाव पण किंचित् प्रगट थशे

॥ तथाहि ॥

दो वास सहस्सठिइणो भासरासि गहस्स पीडाए नियत्ताए य देवावि दंसणं दाहिंति विज्जा मताय अप्पेणवि जावेण पहाव दंसिसंति ओहिनाण जाईसरणाइ भावाय किंचि पयट्टे संति ॥

प्रश्न ४२ दीवाली उपर मेराइयानु प्रवर्त्तन शा कारणथी शरु थयुं ?

उत्तर भस्मराशी ग्रहनी पीडानो प्रतिघात करवा लोकोए देवादिकनी आरती करी, तेथी मेराइयानुं प्रवर्त्तन थयु

॥ तदुक्तं श्रीतीर्थकल्पे ॥

भासरासीपिडापडिघायथ्थं देव-

माणुसगवाइणं नीराजणा जणेहि कया तेण किर मेराइयाणं पवत्ती जाय॥

प्रश्न ४३ कुहारनुं प्रवर्त्तन केम थयुं ?

उत्तर विष्णुकुमारे लाख योजननुं रूप कर्युं त्यारे पृथ्वी उपर मोटो उत्पात थयो हतो, अने लोको घणा भयभ्रांत थया हता तेथी तेमणे शांतिना अवसरे पोतानो नवो अवतार मानी कुहारादिनु प्रवर्त्तन कर्युं आ बनाव श्रीमुनिसुव्रत स्वामीना शिष्य सुव्रताचार्यना समयमां बन्यो ते अवसरे पण चोमासानो चोथो महिनो हतो, तेथी दीवाली उपर आ बधी धामधूम थाय छे एतदपि श्रीतीर्थकल्पे प्रोक्तमस्ति ॥

प्रश्न ४४ श्रीमहावीर स्वामीना कानमांथी कये स्थले कर्णशिलाका काढवामां आवी ?

उत्तर. श्रीतीर्थकल्पमा एवो ...

के पावापुरीमां खरक वैद्ये श्रीमहावीर भगवान्ना कानमांथी कर्णशिलाका काढी, त्यां प्रभुना अवाजथी पर्वत पण फाटी गयो हतो तथा कुरियरय वृत्तिमा पण आ वावतनो खुलासो नीचे मूजव आपेलो छे

॥ तद्यथा ॥

एकदा भगवान् विहरन् मध्यपापायां गत तत्र सिध्धार्थो नाम एको वणिग् वर्त्तते तस्य गृहे भगवान् गत.। तस्य सिध्धार्थवणिज खरकनाम वैद्यो मित्र वर्त्तते तौ द्वावपि सिध्धार्थगृहे तिष्ठतः स्वामी भिक्षार्थं प्रविष्ट सिध्धार्थो वदते स्तवति च वैद्यस्तीर्थकरं दृष्ट्वा भणति अहो भगवान् सर्व लक्षणसंपूर्णः परं सशल्यो दृश्यते तत· सिध्धार्थः सभ्रांतः सन् भणति

विलोक्य कुत्र शल्यमस्ति तेन दृष्ट कर्णयोः ततः उद्याने गत्वा कायोत्सर्गे स्थितः तत्र औषधानि गृहीत्वा सिद्धार्थवैद्यौ गतौ भगवत्समीपे ततो भगवान् तैलद्रोण्यां स्थापितो मर्षितश्च ततोवहुभिर्मनुष्यैर्यंत्रित आक्रांतश्च पश्चात्सडासकेन गृहीत्वा शल्योद्धारकृतो भगवता राटि मुक्ता ॥

प्रश्न. ४५ कोइ सुशील माताए पोतानी पुत्रीने सतीमार्गनुं शिक्षण आप्युं छे के केम ?

उत्तर कुवलयमालाने तेनी माताए सतीमार्गनुं शिक्षण आप्युं छे के 'हे वत्से ! जो तुं गुणश्रेणिने सपादन करवा चाहती होय तो पतिमंदिरे पहोंचे त्यारे हमेश नि.संशयपणे प्रिय वचन बोलती रहेजे, सासु प्रमुख गौरव योग्यनुं गौरव

करजे, सपत्नीओ साथे पण निरंतर अनु-
कूल वर्त्तजे अने तेमनां वचनोने पोतानां वा-
लवच्चा माफक जोजे आश्रित दासदासी
उपर कृपा राखजे, सर्वेथी उलटो वर्त्तावनार
गर्व कोइ जगापर करती नहि, भर्त्तारना
भोजन कर्या बाद भोजन करवु अने
तेमना सुइ रह्या पछी शयन करवु मुख
आडु कपडु राखी नीची दृष्टिथी रहेवु,
पतिना दुःखे दुःखी अने तेमना सुखे
सुखी थवु, ते क्रोध करे तोपण कदापि क्रोध
न करवो अने कोइ दिवसे पण पतिनां
चरणकमल जोया विना रहेवु नहीं ए
सर्व सतीओनो अद्भुत मार्ग छे

॥ तदुक्तं कुवलयमालायाम् ॥
वत्से चेत् त्व गुणश्रेणिमीहसे
स्वस्य सर्वदा ॥ तद्भर्तृमंदिर प्राप्ता,
ब्रूये प्रियमसंशयम् ॥ १ ॥ कार्यं
श्वश्रूप्रभृतिपु, गौरवार्हेषु गौरवम् ॥

त्वयानुकूलया भाव्यं, सपत्नीष्वपि संततम् ॥ २ ॥ तदपत्यानि दृश्यानि, निजानीवाश्रितेषु च॥कृपा कार्या न तु क्वापि, गर्वः सर्वप्रतीपकः॥ ३ ॥ भुक्ते भर्तरि भोक्तव्यं, स्वप्यं च शयिते सति ॥ नीचैर्लोचनया स्थेय, नीरंगी स्थगितास्यया ॥ ४ ॥ दुःखे दुःखिता पत्यौ, सुखिते सुखिता भवेः ॥ कोपवत्यपि मा कोपं,विदधीत कदाचन॥५॥ कदापि पतिपादारविंदद्वयविलोकनम् ॥ न हेय सर्वदा सर्वसतीमार्गोयमद्भुतः ॥ ६ ॥

प्रश्न. ४६ कोइ पिताए पुत्रीने बोध कर्यो छे ?

उत्तर पण्डित दयावर्धनकृत पर्वतिथिविचार ग्रंथमां जयसिंह राजाए पोतानी पुत्री रत्नवतीने सासरे वलावतां आ प्रकारे

बोध कर्यो छे के ' हे पुत्रि ! हवेथी तुं पोताना पुण्यने पिता तरिके गणजे, कारणके तेज तारुं रक्षण करनार छे क्षमाने निरापद मानजे, केमके क्षमाशीलने आपदा संपदारूप थाय छे संतोषने खरुं धन समजजे, कारणके ' सतोषी सदा सुखी ' एवु हरकोइ कहे छे बीजी वधी तरेहथी भरणपोषण करनार आ रत्नशेखर राजानेज समजजे हवेथी हे वत्से ! हुं कोइ रीते तारो नथी एम मानजे आ प्रकारनो बोध आपी पुत्रीवियोगथी दु खी थयेला राजाए अश्रुपात सहित पोतानी पुत्रीने विदाय करी

॥ तथाहि ॥

पितात्मनः पुण्यमनापदः क्षमा
धनं मनस्तुष्टिरथाखिलं नृपः ॥
अतः परं पुत्रि न कोपितेऽहमि-
त्युदश्रुरेष व्यसृजन्निजौरसीं ॥ २ ॥

उपरना लेखथी स्त्रीकेलवणीनी केटली वधी आवश्यकता छे, तथा तेमने शिक्षण आपवा मातापिताए केटली वधी कालजी राखवी जोइए,अने स्त्रीओए पति विगेरे साथे केवी रीते वर्त्तवु जोइए ए वधुं स्पष्ट थाय छे माटे बाल्यावस्थाथीज कन्याओने सारुं शिक्षण आपवा चुकवुं नही. तेनी प्राथमिक शिक्षणशाला तो पोतपोतानी माताओज छे बीजी अनेक स्कूलोमां वर्षोतक शिक्षण ले, परंतु माता तरुफना शिक्षणनी जे असर थाय छे ते कदापि बीजी शालाओथी थवानी नथी; कारणके बीजी शालाउमां परिश्रम उठावबाथी ज्ञान मले छे,त्यारे आ प्राथमिक शालाथी अनायासे ज्ञान प्राप्त थाय छे. जेवु सदसद् वर्तन माताओ करे छे तेवुंज तेमनां बच्चांओना कुमला हृदयरूप आदर्शमां पतिबिंवरूपे पडे छे, अने

तेनी एवी मजबूत छाप पडे छे के ते सारी उमर सुधी भुसाती नथी जो माता गुण ग्रहण करनारी होय तो बालक पण गुण-ग्राहक थाय छे माताने गाळो देवानो अभ्यास होय तो बालक पण गाळो देवा शिखे छे माताने देव गुरुना दर्शन कर-वानो रिवाज होय तो बालको प्रभात-थीज ते तरफ लावो हाथ करी पोताने त्या लइ जवा सूचना करे छे माटे प्रथम तो माताओएज सद्वर्तन राखवु योग्य छे ज्या सद्वर्तन होतु नथी अने दप-तीनी आपसमा खटपट चाल्या करे छे, जेम कोइ पति स्त्रीने कहे के 'हे सुदरि! तु शु आ सुदर करे छे ? ना ए सारुं करती नथी ?' त्यारे स्त्री कहे के 'तु पोते केम सारु करतो नथी ?' पति कहे 'अरे पापणी ! तु सामु बोले छे' पत्नी कहे

'तारो बाप पापी, मने शामाटे पापणी कहे छे?' पति कहे 'रे क्रोधमुखी ! तने धिक्कार हो ?' पत्नी कहे 'रे जूठा वाचाल ! ताराथी वळी कोण क्रोधी छे ?' आवी रीतनो जे स्त्रीभर्त्तारनो निरतर दंतकलह चालतो होय तेवा क्लेशपिडितने शु सुख होय ? अर्थात् कोइ तरेहनु सुख समजवु नहीं

॥तदुक्तं सौभाग्यपंचमीकथायाम्॥

आः किं सुंदरि सुदरं न कुरुषे कि नो करोषि स्वयं, आः पापे प्रतिजल्पसि प्रतिपदं पापस्त्वदीय· पिता ॥ धिक्त्वां क्रोधमुखीमलीकमुखर त्वत्तोपि क· कोपनो, दंपत्योरिति नित्यदंतकलहक्लेशार्त्तयोः किं सुखम् ॥ १ ॥

उपर दर्शावेला क्लेशनुं नि·कंदन

करवा स्त्रीकेलवणीनी खास जरुर ठे, कारणके केलवाएली स्त्रीओ आवा निंदनीय रिवाज तरफ धिक्कारनी लागणीथी जुए ठे अने क्लेशने तो अवकाश आपतीज नथी ते जो सद्वर्तनवाळी होय तो तेनी संतानपरंपरा पण सुधरेली नीवडे ठे, केमके तेज पुरुषरत्ननी अपूर्व खाणरूप होय ठे तीर्थंकर गणधरादि महात्माउंनो उद्भव पण त्यांथीज थयेलो ठे माटे इन्द्रादिक देवता पण 'नमो रत्नकुक्षिधारिके' एम कही जगवान्नी माताउंने नमस्कार करे ठे, अने अरज गुजारे ठे के 'आवा पुत्ररत्नने तमे जन्म न आप्यो होत तो आ सृष्टिना अने अमारा शु हाल थात, ते अमे कली शकता नथी तमारा पुत्ररत्नना अवलंबनथी आ जयकर ससारसमुद्रने तरी जव्य प्राणीउं अजरामर पदने मेलववा जाग्यशाली बने

छे' अत एव श्रीऋषभदेव भगवाने ब्राह्मी सुंदरी नामनी पोतानी पुत्रीओने सारु शिक्षण आपी स्त्रीकेलवणीनो शरुआतथीज दुनिया उपर दाखलो बेसाड्यो छे. ते दिवसथी नदीना प्रवाहनी पेठे चालता आवेला स्त्रीकेलवणीना रिवाजने अनुसरीने मयणासुदरी प्रमुख अनेक बालिकाओए लघु वयथीज सासारिक, नैतिक अने धार्मिक ज्ञान संपादन करवानो प्रारंभ कर्यो हतो तेनु परिणाम एवु सुंदर आव्युं हतु के तेणीए पतिसेवा बजाववापूर्वक पोताना पिताने धर्मात्मा बनावी साक्षात् धार्मिक फलनो पुरावो आपी दुनियाने एवी तो अजायबीमा उतारी के तेने थइ गये लाखो वर्ष व्यतीत थयां तोपण तेना हजु सुधी गुणग्राम थाय छे अरे! गुणग्राम थाय छे एटलुज नहीं, बल्के धर्मगुरुओ पण छ

છ મહિને ચૈત્ર આસો માસની શાશ્વતી અઠ્ઠાઈઓમાં અર્થાત્ આવેલની ઓલીઓમાં શ્રીપાલ ચરિત્ર વાચતાં તેના સદ્વર્તનનુ વ્યાખ્યાન આપે છે વળી પરમ પ્રભાતે જે બાવન સતીઓના નામ લેવામાં આવે છે, તેમા ચૌદ પૂર્વધર શ્રીસ્થૂલભદ્ર સ્વામીની સાત ભગિનીઓના નામ મોજુદ છે તેમણે બાલ્યાવસ્થામા નંદરાજાની સભા સમક્ષ પ્રજ્ઞતા, દક્ષતા અને વિદ્વત્તાથી ૧૦૮ મહા-કાવ્યોનો વિચારપૂર્વક ઉચ્ચાર કરી આખી રાજસભાને આશ્ચર્યમા ગરકાવ કરી હતી તેનુ પરિણામ એવુ આવ્યુ કે પ્રખ્યાત વરસ-ચિ વિદ્વાન્ને રાજસભામાંથી પલાયન કરવુ પડ્યુ હતું તે સાતે વ્હેનોનું બુદ્ધિબલ એવુ તો અજાયબી ઉપજાવનારુ હતુ કે શતાવધાની અને સહસ્રાવધાની વિદ્વાનોની માફક એક, બે, ત્રણ, ચાર, પાચ, છ, સાતવાર સાંભળેલા કાવ્યોને તે ક્રમથી ઉચ્ચાર

करी शकती हती एटले पहेलीनी मग-
जशक्ति एवी तो खीलेली हती के ते
एकजवार जेटलु श्रवण करे ते याद राखी
शकती हती बीजी बेवार, अने त्रीजी
त्रणवार, एवी रीते सातमी सातवार
श्रवण करेलु धारण करी राखती हती.
तेमनां नाम श्रीकल्प सूत्रमां आ प्रमाणे
आपेलां छे

॥ तद्यथा ॥

जरकाय जरकदिन्ना, नूआ तह-
चेव नूअदिन्नाय॥ सेणा वेणा रेणा,
नअणीउ थूलिनदस्स ॥ १ ॥

तथा नोजराजानी राजसनाना शृगार
अने त्वटथी छटादार बोलनार धनपाल
पंडिते पण पोतानी पुत्रीने बालपणाथी
सारुं शिक्षण आपी तेनी मगजशक्ति
एवी खीलवी हती के तेणी तेने एक
अद्वितीय मददगार थइपडी हती तेनी

वीना प्रवन्धचिंतामणि आदि ग्रंथोमां
एवी वांचवामां आवी छे के एकदा धन-
पाले नवीन ग्रथनु गुंफन करी ते ग्रथ
भोजराजाने देखाड्यो ते जोइ वंचावी
तेनी चित्रकविताथी चित्रित चित्तवालो
ते भोजराजा घणो खुशी थयो, अने
तेमां नायक तरीके पोतानु नाम दाखल
करवा तथा ऋषभदेवने वदले ईश्वर अने
अयोध्याने वदले धारानगरीनो फेरफार
कराववा ललचाव्यो परंतु धर्मविरुद्ध
होवाथी धनपाले तेम करवानी ना पाडी
तेथी ते नामदारे धोले दहाडे धाड पाड-
वानी पेठे ते ग्रथ वह्निशरण कर्यो आथी
धनपाल घणो दिलगीर थइ घेर आव्यो,
त्यारे तेनी प्रिय पुत्रीए दिलगीर थवानुं
कारण पुछ्यु ते अवसरे यद्यपि तेनी
मरजी कहेवानी नहती, तोपण तेना आग्र-
हथी यथातथ्य निवेदन कर्युं त्यारे ते

स्वराथी बोली उठी के पिताश्री ! आप निराश थशो नहीं आपनो प्रयास निष्फल निवडशे नहीं, कारणके आपना बनावेला ग्रंथनां पानां हु बालकीऋाथी जोती रही हुं, तेथी ते ग्रथ मारा कण्ठस्थ रहेलो छे वास्ते आप हवे क्रमपथी लखवानो प्रारंभ करो. तेवुं पुत्रीनु कर्णामृत सदृश वचन सांभली धनपाल बणो खुशी थयो, अने जाणे नवु जीवन आव्यु होय तेम हिमतनो हीमायती ते ग्रंथ लखवा लाग्यो. ज्यारे सपूर्ण लखाइ रह्यो त्यारे ते कदरदान पिताए पुत्रीनु पवित्र नाम ग्रथ साथे जोडी दइ तिलकमंजरीना नामथी ते पुस्तक प्रसिद्ध कर्युं तेणीनी नाममुद्राथी मुद्रांकित थयेलो ते अपूर्व ग्रंथ श्री जेसलमेरना प्रख्यात जेन भंडारमां अमारा जोवामां आव्यो तेनी नकल करावी काव्यमाला गुच्छक साथे अमे मुद्रित करावी

बहार पाड्यो छे ते ग्रंथनु कवित्व अने विद्वत्ताभरेलु लखाण जोवा अमे विद्वा-न्वर्गने खास भलामण करीए छीए महाशय वाचकवर्ग ! आवी रीते केलवा-येली कुलबालिकाओ उभय कुलरूपी कूलं-कषाना किनाराने कमनीय[2] करवा कल-कंठी[3] समान नीवडे छे एटलुज नहीं बल्के 'वावे ते लणे' ए कहेवत प्रमाणे तेमने शिक्षण आपनारा पण सारा फलनो आस्वाद लेवा भाग्यशाली बने छे अल-बत ए तो निर्विवाद छे के केलवायेली कणक ज्यारे केलवनारने पुरी, कचोरी, पुरणपोली अने रोटली रोटलारूप थइ सपूर्ण तृप्त करे छे, त्यारे केलवायेली कुल-बालिकाओ कुल दीपावी सांसारिक, सामा-जिक अने धार्मिक कार्योमा मददगार थइ माता, पिता, ग्राम, नगर अने जन-

---

१ नदी २ शोभाववा ३ हसणी

पदवासीउने मददगार थाय तेमां शुं आश्चर्य ठे। अत एव मातापिताए पोतानी बालिकाने अने परोपकारथी पराङ्‌ वाला-उने बालपणाथीज तन मन धननो जोग आपी केलववी योग्य ठे इत्यलं विस्तरेण

प्रश्न ४७ घनोदधि शुं चीज ठे ? तेनु प्रमाण केवडुं अने ते क्यां आगल ठे ?

उत्तर घनोदधि ए असंख्यात योजन प्रमाणनो जलपिंड ठे, अने ते विमान तथा पृथिव्यादिना आधारजूत ठे

॥ तदुक्तं क्षमाकल्याणविरचित श्री-जीवविचारवृत्तौ ॥

घनोदधिर्विमानपृथिव्याद्याधार-जूताऽसंख्येययोजनप्रमाणपयःपिंड-रूपः ॥

प्रश्न ४८ घनवात, तनुवात केवा होय? अने ते कये ठेकाणे ठे ?

उत्तर घनवा अने तनुवा ए बन्ने घनो-

दधिनी माफक रत्नप्रनादि पृथ्वी अने सौधर्मादि विमानना आधारनूत छे तेमां घनवा ठरेला घी जेवो अने तनुवा तपावेला घृत सदृश पातळो छे

॥ तथाहि जीवविचारवृत्तौ ॥

घनवाततनुवातौ घनोदधिवद्रत्नप्रनादीना सौधर्मादीनां चाधारनूतौ तयोराद्य स्त्यानघृतसदृशोऽन्यस्तु तापितघृतवद्दृढस्वरूपः ॥

प्रश्न ४ए छपन्न अतरद्वीपना मनुष्यो केवा होय ? तथा तेमनु आयुष्य केटलु ? अने त्यां समूर्छिम मनुष्यो होय के केम ?

उत्तर छपन्न अतरद्वीपना युगलिक मनुष्यो ᗄ०० धनुष्य उंचा शरीरवाला तथा पल्योपमना असंख्येय नाग प्रमाण वर्पना आयुष्यवत होय छे, अने त्यां समूर्छिम मनुष्योनी उत्पत्ति पण छे

॥ तदुक्तं जीवविचारवृत्तौ ॥

तद्द्वीपवासिनो युगलिनो मनुष्याः पल्योपमाऽसंख्येयभागवर्षायुषोऽष्टशतधनुरुच्छ्रिताश्च संति । एते सर्वे त्रिविधापि मनुष्या गर्भजाः सम्मूर्छिमाश्चेति द्विधा बोध्या. ॥

प्रश्न ५० संमूर्छिम तेइंद्रिय चोइन्द्रिय जीवोनुं उत्पत्तिस्थान कोइ शास्त्रमा बतावेलु छे ?

उत्तर श्रीरत्नाकरपाठक विरचित जीवविचारवृत्तिमां एवो लेख छे के तेइंद्रिय जीवो पोतानी जातिना जीवोनी विष्टा प्रमुखमां उत्पन्न थाय छे, अने चोइंद्रिय जीवो तो स्वजातिनी लाला तथा मल प्रमुखथी पण पेदा थाय छे

॥ तथाहि जीवविचारबृहद्वृत्तौ ॥

त्रींद्रियास्तु स्वजातिपुरीषादिपूत्प-

द्यते चतुरिंद्रियास्तु स्वजातिलाखाम-
लस्पर्शादिभ्य उत्पद्यंते ॥

प्रश्न ५१ नव ग्रैवेयक अने अनुत्तर विमानना देवो उत्तर वैक्रिय शरीर करे छे के नहीं ?

उत्तर ग्रैवेयक अने अनुत्तर विमानना देवो उत्तर वैक्रिय करता नथी त्याना देवताउंमा शक्ति विद्यमान छे, उतां प्रयोजनना अन्नावे उत्तर वैक्रिय शरीर करता नथी

॥ तदुक्तं जीवविचारवृहद्वृत्तौ ॥

ग्रैवेयकेष्वनुत्तरेपूत्तरवैक्रिय नास्ति तत्सत्यामपि शक्तौ प्रयोजनाऽन्नावे तदऽकरणादिति संटक ॥

प्रश्न ५२ केटला वर्षे एक पूर्व थाय ?

उत्तर सीतेर लाख क्रोम अने छपन्न हजार क्रोम वर्षे एक पूर्व थाय

॥ तदुक्तं जीवविचारवृहद्वृत्तौ ॥
पुव्वस्सय परिमाणं, सयरिं खलु वास-
कोडिलरकाउं उप्पन्नं च सहस्सा,
बोधव्वा वासकोडीणमिति ॥ १ ॥

प्रश्न ५३. संमूर्छिम पचेंद्रिय स्थलचर खेचर, उरग अने भुजगनी उत्कृष्टआयु.-स्थिति केटली होय ?

उत्तर. संमूर्छिम पंचेंद्रिय स्थलचरादिनी नीचे मूजब उत्कृष्ट आयुष्यस्थिति जाणवी

१ गाय प्रमुखनी ८४००० हजार वर्ष
२ बगला प्रमुखनी ७२००० हजार वर्ष
३ सर्पादिकनी ५३००० हजार वर्ष
४ घो गिरोली नोलीयादिकनी ४२००० हजार वर्ष

॥ तदुक्तं जीवविचारवृहद्वृत्तौ ॥
संमूर्छिमपंचेंद्रिया ये स्थलचरा ग-

वादयः १ खचरा पक्षिणो वककाकादय. २ उरगा सर्प्पादय. ३ भुजगा गृहगोधादयः ४ क्रमात्तेषां जेष्टास्थिति. चतुरशीति. १ द्वासप्ततिः २ त्रिपचाशत् ३ द्विचत्वारिंशच्च वर्षसहस्र इत्यर्थ ॥

प्रश्न ५४ श्रीजीवविचारनी ४१ मी गाथामा (सत्तठ भवा पणिंदि तिरि मणुआ) एवो पाठ छे तेमा सात आठ भव कहेवानु शु प्रयोजन छे ?

उत्तर उपर वतावेली कायस्थितिने सूचवनारी गाथामा सात आठ भव कहेवानु प्रयोजन एवु छे के कोइ कोइ पर्याप्ता सञ्ज्ञि पचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यो निरतर तेवा सात आठ भव करी शके छे तेमा सात भव तो सख्याता वर्षना आयुष्यवाला अने आठमो भव असं-

स्यात वर्षना आयुष्यनो करे छे. ते कारणथी सात आठ जव कह्या छे. एटले पर्याप्तसंज्ञि मनुष्यो अथवा पर्याप्तसंज्ञि पंचेंद्रिय तिर्यंचो निरंतर यथाक्रमथी सात जव मनुष्यना के तिर्यंचना करी जो आठमे जवे पण तेमांज उत्पन्न थाय तो नियमथी असंख्य वर्ष आयुष्यवाला युगलीयामांज उत्पन्न थइ शके अने त्यांथी मरी देवतामां उत्पन्न थाय. तेवार पछी नवमो पण नरजव अथवा तिर्यंचजव थाय, परंतु निरंतर न थाय

॥ तदुक्तं जीवविचारबृहद्वृत्तौ ॥

संज्ञिनः पर्याप्ताः पचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याः सप्ताष्टौ जवा जवेरन् तत्र सप्तजवास्संख्येयवर्षायुषोऽष्टमस्त्व ऽसंख्यातवर्षायुरेव तथाहि पर्याप्तसंज्ञिमनुष्याः पर्याप्तसंज्ञिपंचेंद्रियतिर्यं-

चो वा निरंतं यथासङ्ख्यं सप्त नरभवास्तिर्यग्भवांश्चानुभूय यद्यऽष्टमे भूयस्तेष्वोत्पद्यते ततो नियमादऽसङ्ख्यातवर्षायुष्केष्वेवोत्पद्यते असंख्यातायुष्कश्च मृत्वा सुरेष्वे वोत्पद्यते ततो नवमोपि नरभवस्तिर्यग्भवो वा पर निरंतर न लभ्यते ॥

प्रश्न५५ व्याकरण भणवाथी शु लाभ थाय?

उत्तर व्याकरणथी पद सिद्ध थाय छे, पदसिद्धिथी अर्थनो निर्णय थाय छे, अर्थनिर्णयथी तत्त्वज्ञान थाय छे अने तत्त्वज्ञानथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे तदुक्तं स्वोपज्ञहैमलघुप्रक्रियाख्यव्याकरणवृत्तौ महोपाध्यायश्रीकीर्तिविजयगणिशिष्योपाध्यायश्रीनयविजयगणिना—

॥ तथाहि ॥

व्याकरणात्पदसिद्धिः

पदसिद्धेरर्थनिर्णयो भवति
अर्थात्तत्त्वज्ञानं
तत्त्वज्ञानात्परं श्रेयः ॥ १ ॥

प्रश्न ५६ व्याकरण जणवाथी उपर दर्शावेलुं अजवालुं थाय छे अने अमूल्य लाभ मेळववामां आवे छे, छतां धर्मने बहाने धोखो देनारा ढुंढको व्याकरणने व्याधिकरण केम कहे छे ?

उत्तर ढुंढक भाइओ व्याकरणने व्याधिकरण कहे छे, तेनु प्रयोजन तो ए समजाय छे के (प्रथमतो पठनं कठनं कृतं) ए वाक्यानुसार पढेलु तो भणवुज कठन, तेमां वली व्याकरणनुं तो कहेवुज शु ! तेनाथी नासीपास थाय तेमां नवाइ नथी. तेना अध्ययनमां तो जे हिमतना हीमायती छे तेज आगल वधे जाय छे, अने जेओ कायर छे ते तो तेमां चक्कर मार्याज करे छे, वास्ते

एक तो मोटो परिश्रम उठाववो पडे ठे अने वीजु कारण एवुं ठे के व्याकरणना अध्ययनथी सत्यार्थनो प्रकाश पडे ठे, त्यारे तेमनो मनघटित अर्थ टकी शकतो नथी तेथी तेउ ते मतने खोटो ठे एवो निर्णय करी, पासलामा फसायेलो मृग जेम वागुरा तुटवाथी पलायन करी जाय, तेम ते मनकल्पित मतनो त्याग करी शुद्ध सनातन जैनधर्ममा सामेल थइ जाय ठे. दाखला तरीके पजावमां श्रीआत्मारामजी महाराज अने श्रीविसनचंदजी महाराज विगेरे साधुमंडल अने तेमना प्रतिवोधेला हजारो श्रावको जैन श्वेतांवर सनातन धर्ममां सामेल थया, जेउ श्रीविजयानंद सूरीश्वरना नामथी अने पन्ति श्रीमल्लक्ष्मीविजयजी महाराजादिना नामथी प्रख्याती पामेला ठे. तेमज कच्छ देशमा रत्नसी स्वामी तथा रायचदजी स्वामी विगेरे, जेउ हाल श्रीरत्न-

विजयजी अने पद्मविजयादिना नामे उलखाय छे एवी रीते गुजरात, मारवाड, मालवा तथा पूर्व बंगालादि अनेक स्थले एवा दाखला चन्या छे के संख्यावंध साधु साध्वी अने श्रावक श्राविकाए ते मतनो त्याग कर्यो छे तेथी तेउ व्याकरणने व्याधिकरण कहे छे, परंतु ते कांइ व्याधिकरण नथी. गधेडाने साकर, कागने द्राख अने घुवडने प्रकाश सारो न लागे माटे ते खराव छे एवुं कोइ पण बुद्धिमान् कबुल करशे नहीं. अलवत तेउ तो (वाणी व्याकरणेन) ए महावाक्यानुसार व्याकरणने एक वाचा खीलवनार तरीकेज गणशे

प्रश्न ५७ ढुंढको कहे छे के अमेतो ३२ सूत्र मानीए छीए, तेमां व्याकरणनो विषय होय तो वतावो

उत्तर. श्रीप्रश्न व्याकरणादि अनेक सूत्रोमां व्याकरणनो विषय छे. अने तेनं

जाणपणु कर्या विना सूत्र वांचनारा महा मृषावादी छे, तथा तेमने सूत्र वांचवानो पण अधिकार नथी इत्यादि सारी रीते व्यान करेलु छे तेना सूत्रपाठ श्रीविजयानंद सूरीश्वर उर्फे श्रीआत्मारामजी महाराज विरचित सम्यक्त्वसल्योद्धारादि ग्रथमा मोजुद छे वास्ते ते पाठ न लखतां श्रीअनुयोगद्वारनो मूल पाठ टीकार्थ सहित दर्शावीए छीए तेमां सामासिक तद्धितज, धातुज अने निर्युक्तिक, ए चार प्रकारे भावप्रमाण सूत्रकारे बुलद अवाजे वतावेला छे ते दरमियान सामासिक प्रमाण दर्शावता द्वन्द्व, बहुव्रीहि, कर्मधारय, द्विगु, तत्पुरुष, अव्ययीभाव अने एकशेष, ए सात प्रकारे समास वतावेला छे ए सात प्रकारना समासनु स्वरूप, व्याकरणनु ज्ञान मेलव्या सिवाय कोइ प्रकारे वधवेसतु आवी शके तेम नथी वास्ते ढुढको व्याकरणनो अभ्यास

कर्या विना सूत्रो वांची महामृषावादी बने छे, ते खरेखर खेदनो विषय छे. अमे आशा राखीए छीए के ढुंढक नाइर्ड नीचे आपेलो श्रीअनुयोगद्वारनो मूल पाठ तथा टीकार्थ जोइ तेने अनुसरतुं वर्तन चलावशे अने पोतानो तथा अनुयायी-र्डनो शुरू शास्त्रार्थथी उद्धार करशे

॥ तत्सूत्रपाठो यथा ॥

सेकिंतं नावप्पमाणे २ चउविहे पणत्ते तंजहा । समासिए, तद्धितए, धाउए, निरुत्तिए । सेकिंतं समासिए २ सत्त समासा नवंति । तंजहा । दंदेअ, वहुवीही, कम्मधारए, दिग्गूअ, तप्पूरिसे अवईनावे, एकसेसेअ

॥ तट्टीका यथा ॥

सेकिंतं नावप्पमाणे इत्यादि नावो युक्तार्थत्वादिको गुण स एव तद्द्वारेण

वस्तुना परिच्छिद्यमानत्वात्प्रमाणं तेन निष्पन्नं तदाश्रयेण निर्वृत्त नामसामासिकादिचतुर्विधं भवतीत्यत्र परमार्थ तत्र सेकिंत समासिए इत्यादि द्वयोर्बहूनां वापदानां समसन समीलन समासस्तन्निर्वृत्त सामासिकं समासाश्च द्वंद्वादयः सप्त ॥ इत्यादि बहुविस्तरेण प्रोक्तमस्ति ॥

प्रश्न ५७ सांसारिक कार्य प्रसंगे धार्मिक क्रिया करवी ते जैनशास्त्राधारे उचित गणाय के नहीं ?

उत्तर श्रीश्राद्धविधि ग्रथमां आवेली शुकराजनी कथामां सांसारिक कृत्य करनार विवेकी मनुष्ये ते प्रसगमा धर्मकार्यो पण यथोचित रीते अवश्य करवा जोइए एवी, बाबतने सूचवनारो एक श्लोक आपेलो छे ते आ प्रमाणे—

॥ श्लोक ॥

तत्सांसारिककृत्यानि, कुर्वाणेन विवेकिना । तदंतर्धर्मकार्याणि, कार्याण्येव यथोचितम् ॥ १ ॥

आ श्रावकोना तमाम विधि वताव-नार शास्त्राधारे दरेक श्रावके पोतपाताने त्यां पुत्रादिना जन्म विवाहादि शुभ प्रसंगे स्वस्वशक्ति अनुसारे अठाइ महोत्सव, उद्यापन महोत्सव, समवसरण महोत्सव, विद्यार्थीउने उत्तेजन, इनामना मेलावमा अने डुष्कालपीमितादि स्वधर्मीउनु वात्सल्य करवु उचित ठे

प्रश्न ५ए सांसारिक कृत्यो पैकी मरण पाठल वरो करवो अने तेमां लखलुट खरच करवो ते योग्य ठे के केम ?

उत्तर बाल, तरुण के वृद्धमांथी कोइना पण मरण पाठल जमण करवुं व्याजवी नथी, कारणके ते निर्दयता, नि शूकता,

निर्लज्ञता, निर्धनता अने नियता अर्पण करवा उपरांत सिद्धातविरुद्ध छे

निर्दयता एटला वास्ते छे के केटला-एक जोजनजट्टो तेवां मरणनी राह जुवे छे, अने देवजोगे तेम वनवाथी घणा खुशी थाय छे, एटलुज नहि वल्के तेवो वनाव कोइ महिनामां न वने तो "आ मास तो केवल खाली गयो, कांइ पण मालपाणी उडाववा मल्यां नहीं" एम विचारे छे

नि शूकता एटला वास्ते छे के देवपूजादि धर्मकृत्यनो त्याग करी सूतकमां सूतकी वनी जोजन करवामां दुर्गछा करता नथी

निर्लज्ञता एटला कारणथी के तेना घरमा रो, पीट अने हाहाकार वर्तते होय तोपण जमनारा लजवाता नथी

निर्धनता तो प्रसिद्धज छे न्यातिना

अग्रगण्य शेठीआर्उनी वेटरकारीने लीधे ज्यांसुधी ते रिवाजने देशवटो आपवामां आवतो नथी त्यांसुधी गरीब अने तवंगरने माथे आ फरज ठे, एम जाणी निर्धन लोको पण तवंगरनी देखादेखी इज्जत राखवा घरघरेणांदि वेचीने पण वरो करवा पठात पमता नथी नलेने वेरांगोकरां रखमतां थइ जाय, अने लेणदार पोतानां कपमां खेंचे, ठेवटे रकम आपवा न मले तो कारागारनी मुसाफरी करवा जवु पडे आवी रीतनी पायमाली नजरे जोतां ठता गुजरान, वगाल, पंजाव, मुलतान, मालवा, मेवाम अने कठादि देशोमां ते रिवाज हजु चालु रहेलो ठे एटलेथी न अटकतां मारवामी नाइर्उ तो ते काममां एटला वधा आगल वध्या ठे के मरनार मावापनी पाठल वरो करी दूर दूर देशना सेवकब्राह्मणोने तेमावी जमण

आपवा उपरांत दक्षणा आपी लाखो रुपी-आनो धूमाडो करे छे आवी रकम धर्मादामां के निराश्रित धर्मबांधवोना उद्धार माटे खरचवामां आवे तो केटलो वधो फायदो थाय ?

निंद्यता तो हरकोइ जाणे छे के कोन्फरन्सोमा, मडलोमा, सज्ञाउमा मोटा मोटा विद्वानो ज्ञाषणो आपी अने मुनिराजो व्याख्यानो आपी आ घोर कृत्यने मेघनादथी तिरस्कार करे छे, एटलुज नहीं बल्के हानिकारक रिवाज गणी तेने एके अवाजे अटकाववाना ठराव करे छे

सिद्धांत शैलीविरुद्ध तो एटला हेतुथी छे के सिद्धांतकार श्रीसय्यजवसूरीश्वरजी महाराज सिंहनादनी गर्जनाथी श्रीदशवैकालिक सूत्रमा साधुउने केवी ज्ञाषा बोलवी तेनु ज्ञान करावया ते सूत्रना सातमा अध्ययननी ३६ मी गाथामां आ प्रकारे फरमावे छे—

॥ तथाहि ॥

तहेव संखडिं नच्चा किच्चं कज्जंति नो वए

आ सूत्रनी बृहद्वृत्तिमां १४४४ ग्रंथना कर्त्ता श्रीहरिजद्रसूरि महाराज उक्त पाठनो एवो खुलासो करे ठे के जे प्रकरणक्रियामां प्राणीउनां आयुष्य खडित थाय तेने सखडि अर्थात् जमणवार कहीए. तेने जाणीने साधुउए 'पितादिकना निमित्ते आवा जमणवार करवा योग्य ठे' एवी जाषा न बोलवी, कारणके तेथी मिथ्यात्व वृद्धिनो दोष लागे ठे.

॥ तद्वृत्ति यथा ॥

वाग्विधिप्रतिषेधाधिकारेऽनुवर्त्तमान इदमपरमाह । तहेवत्तिसूत्रम् । तथैव संखडिं ज्ञात्वा । संखंड्यन्ते प्रा-

णिनामायुंषि यस्यां प्रकरणक्रियायां सा सखडी ता ज्ञात्वा करणीयेति पित्रादिनिमित्त कृत्यैवेषेति नो वदेत्। मिथ्यात्वोपबृंहणदोषात् ॥

आ वृत्तिमा आदि शब्द आपेलो छे तेथी बाल, तरुण अने वृद्धनु पण ग्रहण थइ शके छे, तेथी पुत्र, पुत्री, प्रपौत्र, माता, भ्राता, दादा, दादी इत्यादि कोइना पण मृत्यु पाछल आवा सांवत्सरिकादिना जमणवार करवा योग्य नथी, ए स्पष्ट समजी शकाय छे तेमज मिथ्यात्व वृद्धिनो हेतु होवाथी साधुओने ज्यारे उपर दर्शाव्या मुजब बोलवानी साफ मनाइ छे, त्यारे श्रावकोथी ते कार्य करी केम शकाय ? कारणके श्रावको पण मिथ्यात्वना त्यागी होय छे मिथ्यात्वनी बाबतमां श्रावको काइ साधुथी जुदा पडी शके तेम नथी जेटलो फरज मुनिमहाराजने मिथ्यात्वथी

वचवानी ठे तेटलीज श्रावकोने पण ठे; तेमां न्यूनाधिक थाय तेम नथी. श्रत एव श्रमे श्राशा राखीए ठीए के जैनबाइर्ठ श्रावा प्रभाविक धुरंधर श्राचार्य महाराजना वाक्यामृतनु पान करी तेने मान श्रापवा साथे तेवा मिथ्यात्व वृद्धिना कारणने उन्मूलन करवा त्वराथी कटिबद्ध थशे जो तेम नहीं करे तो श्रमे खुल्ला शब्दोमां कही शकीए ठीए के तेर्ठ पोताना कर्तव्यथी चुस्या गणाशे, तेमां कांइ पण शक नथी इत्यलं विस्तरेण ॥

प्रश्न ६० जैनवर्गमां पितृनिमित्त श्राद्ध करवानी बूट ठे के नहीं?

उत्तर जैनोमां श्राद्ध करवानी बूट नथी, तेथीज श्रंबिकाए तेम न करतां मुनिने दान श्राप्यु हतुं तेनु वृत्तांत श्रीजिनमंडनगणिकृत श्राद्धगुणविवरणमां श्रा प्रकारे श्रापेलु ठे—

श्रीरैवतगिरि पासे आवेला कुवेरपुरमां देवजट्ट अने देविलानो पुत्र सोमजट्ट नामे ब्राह्मण निवास करतो हतो. तेनी अंविका नामनी स्त्री स्वजावथी दानप्रिय हती तेने सिद्ध अने वुद्ध नामे वे पुत्र थया हता एकदा श्राद्धना दिवसे मासोपवासी साधुने तेणे जक्तिजावथी अने हर्षथी दान आप्यु ते जोइ देहधारी राकण जेवी तेनी पाडोशण हाथ उचा करी उजी थइ, अने मोटा अवाजथी जेमतेम वकवा लागी, एटलामां गृहांतरथी तेनी सासु पण आवी पहोंची, अने पाडोशणनां तेवां वचनो सांजली वहु उपर क्रोध करी सोमजट्टने ते विना कही दीधी, त्यारे सोमजट्ट वोल्यो के– अरे पापणी ! आ तें शु कर्यु ? हजु सुधी कुलदेवतानी पूजा करी नथी, पिंडो जर्या नथी, ब्राह्मण पण जमाड्या नथी, ते

पहेलां तें मुनिने दान केम आप्युं? एम कही घरमांथी काढी मूकी ते पण बे छोकराने लइ घरथी नीकली गाममां कोइ जगाए स्थान न मलवाथी नगर बहार जती हती, तेवामां थाकी गयेला छोकराओए जलनी मागणी करी त्यांथी आगल चालतां शीलना प्रभावथी सूकुं सरोवर जलथी भरेलु अने शुष्क आंबो फलयुक्त थयेलो दीठो जेटलामां जल अने फलादिकथी सुखी थयेली ते, आंबानी छायामां चैनथी विसामो ले छे, तेटलामां तेनी सासु घरनी अंदर गइ ते दरमियान अंबिकाना शीलना प्रभावथी तथा मुनिदानना महात्म्यथी शासनदेवताए करेलां मुनिदानस्थाने आसनोने सोनानां अने अन्नकणोने मोती थयेलां, तथा भोजनोमां जेवी हती तेवी अग्रशिखाने जोइ खुश थयेली ते पुत्रने कहेवा

श्रीरैवतगिरि पासे आवेला कुवेरपुरमां देवजट्ट अने देविलानो पुत्र सोमजट्ट नामे ब्राह्मण निवास करतो हतो. तेनी अंबिका नामनी स्त्री स्वजावथी दानप्रिय हती तेने सिद्ध अने बुद्ध नामे बे पुत्र थया हता एकदा श्राद्धना दिवसे मासोपवासी साधुने तेणे जक्तिजावथी अने हर्षथी दान आप्युं ते जोइ देहधारी झाकण जेवी तेनी पाडोशण हाथ उंचा करी उजी थइ, अने मोटा अवाजथी जेमतेम बकवा लागी, एटलामां गृहांतरथी तेनी सासु पण आवी पहोंची, अने पाडोशणनां तेवां वचनो सांजली वहु उपर क्रोध करी सोमजट्टने ते विना कही दीधी, त्यारे सोमजट्ट बोल्यो के— अरे पापणी! आ तें शुं कर्युं? हजु सुधी कुलदेवतानी पूजा करी नथी, पिंडो जर्या नथी, ब्राह्मण पण जमाड्या नथी, ते

स्थानमां विचरतो अने जीवतो एवो पण कोइ माणस मित्रना आपेला पिंडवडे तृप्ति पामतो नथी, तेवु आपणे प्रत्यक्ष जोइए छीए, त्यारे जे लक्षमां न आवे तेवा शरीरने धारण करतो निर्जीव थयेलो मरीने क्यां गयो, तेनो आपणने पत्तो नथी, छतां पिंडवडे कुतगने जेम तृप्त करवामा आवे तेवी रीते भोला लोकोथी ते प्रिय स्वजन पिंडदानथी तृप्त कराय छे आ ते केवो आश्चर्यजनक विधि छे ते जुवो—

॥ तत्काव्यं यथा ॥

एकस्थानचरोपि कोपि सुहृदा दत्तेन जीवन्नऽपि, प्रीतिं याति न पिंडकेन तदिदं प्रत्यक्षमालोक्यते ॥ जातः क्वाप्यऽपजीवितश्च किल यो बिभ्रन्न-ऽलक्ष्यां तनुं,मुग्धैः श्वेव स तर्प्यते प्रिय-जनः पिंडेन कोऽयं विधिः ॥ १ ॥

लागी के हे वत्स ! गुणवती, सरल अने सती पतिव्रता वधूने तुं जलदी पाछी लइ आव सोमजट्ट पण ते महात्म्य जोइ पश्चात्ताप करतो तेनी पाछल गयो तेने आवतो जोइ डरथी कमकमाट करती अवा पुत्रो सहित कुवामां पडी जैनमुनिने आपेला दानना ध्यानमां तत्पर रहेली ते शुज अध्यवसाये पंचत्व पामी आ फानी डुनियानो त्याग करी कोहंड विमानमा अंबिका नामे महर्द्धिक देवी थइ लोकापवादथी डरेलो सोमजट्ट पण कुवामां फपलाइ पड्यो, अने तेज विमानमां ते देवीना वाहन तरीके सिंहरूपने धारण करनार देव थयो इत्यादि श्राद्धनिषेधना अनेक दाखलाओ जैनशास्त्रमां मोजुद छे

तथा जैन यशश्चन्द्रकृत मुद्रितकुमुदचन्द्र नाटकग्रंथमां एक काव्य आपेलु छे तेमां जणाववामां आव्यु छे के “ एक

स्थानमां विचरतो अने जीवतो एवा पण कोइ माणस मित्रना आपेला पिंडवडे तृप्ति पामतो नथी, तेवु आपणे प्रत्यक्ष जोइए ठीए, त्यारे जे लक्षमां न आवे तेवा शरीरने धारण करतो निर्जीव थयेलो मरीने क्यां गयो, तेनो आपणने पत्तो नथी, ठतां पिंडवडे कुतराने जेम तृप्त करवामां आवे तेवी रीते नोला लोकोथी ते प्रिय स्वजन पिण्डदानथी तृप्त कराय ठे. आ ते केवो आश्चर्यजनक विधि ठे ते जुवो—

॥ तत्काव्यं यथा ॥

एकस्थानचरोपि कोपि सुहृदा दत्तेन जीवन्नऽपि, प्रीतिं याति न पिंडकेन तदिदं प्रत्यक्षमालोक्यते ॥ जातः क्वाप्यऽपजीवितश्च किल यो बिभ्रन्न-ऽलक्ष्यां तनुं,मुग्धैः श्वेव स तर्प्यते प्रिय-जनः पिंडेन कोऽय विधिः ॥ १ ॥

पूर्वोक्त प्रकारे जैनशास्त्रकारो एके अवाजे आ बाबतने अमलमां मूकवानी ना पाडे छे तोपण गतानुगतिक प्रवाहमां तणाता केटलाएक अज्ञान जैनो, ब्राह्मण अने वैष्णवोना देखादेखी श्राद्धक्रियाथी कागमाळने नोतरे छे तेमने 'श्राद्धनी आवश्यकता' ए नामनु एक नानकडु पुस्तक जे सरस्वती प्रिंटींग प्रेसमा छपाइने बहार पडेलु छे ते वांचवा हु खास भलामण करु छुं, अने तेमांथी केटलीक बाबतने अहीं दाखल करु छुं एक कविनु कहेवु छे के—

॥ तथाहि ॥

स्वर्गस्थिता यदा तृप्तिं, गच्छेयुस्तत्र दानतः ॥ प्रासदस्थोपरिस्थानामत्र कस्मान्न दीयते ॥ १ ॥ मृतानामपि जन्तूना, श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम्॥ गतानामिह जन्तुना, वृथा पाथेयकल्पनम्

" स्वर्गमां बेठेला तमारा पितृओ अहीं दान देवाथी तृप्त थइ जाय छे तो माल उपर बेठेला माणसनी तृप्ति नीचे अनाज राखवाथी केम नथी थती ? अने मरेलानी तृप्तिने माटे श्राद्ध होय तो जेनां मातापिता परदेशमां जाय छे तेने खरची मोकलवानी शी जरुर छे ? तथा खावानुं रस्ता वास्ते भातु बधाववु ते पण व्यर्थ छे अही आपणे त्यां मोकलवाने बदले ब्राह्मणना पेटरूपी फाकमां अनाज नाखी परदेशमां तेने पहोंचाडी आपशु "

कदापि एम कहेवामां आवे के जीवतां नथी पहोंचतुं, पण मरी गया पछी पहोंचे छे, तो भला विचार करो के ज्यारे जीवतां दश हाथ दूर बेठेलाने नथी पहोंचतु तो मरेलांने केम पहोंचे ? केटली असम्भवीत वात ?

॥ कथा पहेली ॥

एक दिवस गुरु नानकजी हरद्वार गया हता त्यां गंगाकिनारा उपर माणसो पोताना मरेला पितृओनु तर्पण करता हता. नानकजीए पूछ्यु जाइ! आ शु करो छो? लोकोए जवाब आप्यो के अमारा स्वर्गवासी पितृओने जल पहोंचाडीए छीए नानकजीए पूछ्यु के तमारा पितृओ क्यां छे? लोकोए कह्यु के पितृलोकमां त्यारे नानकजीए गगामा प्रवेश कीधो, अने पोते पण खोबेथी पाणी उछाळवा लाग्या. ज्यां लोकोना कपडा पड्या हता त्यांसुधी पाणी उड्यु, त्यारे लोकोए कह्यु 'महाराज! शु करो छो? अमारा कपडा भींजाइ जाय छे' नानकजीए कह्यु 'अहींथी २०० माइल उपर मारु खेतर छे ते तापथी सुकाइ जाय छे, तेने जल पहोंचाडु छुं' लोकोए पूछ्यु आटले वधे दूर जल केम पहोंची शकशे?

त्यारे नानकजीए कह्युं, जे जग्यानी मने खबर छे त्यां जो आ पाणी नहीं पहोंचे तो तमारा पितृओ के जेनो पत्तो नथी के पृथ्वीना कया जागपर छे, तेने तमे श्राद्ध तथा तर्पणथी अन्न जल केम पहोचाडी शकशो ? वाचकवर्गे आ बाबत उपर बुद्धिपूर्वक विचार करवो

॥ कथा बीजी ॥

एक जाट हतो, तेनो पिता गुजरी गयो तेना मरी गया बाद तेना गोरमहाराजे शय्यादान, गोदान विगेरे अनेक प्रकारनां दानथी जाटने लुट्यो लुंटवामां कोइ जातनी कचाश राखी नहीं; परतु जाटना घरमां एक उत्तम घोडी रु ५०० नी हती ते गोरमहाराजनी नजरे पडी अने घोडी जोइने गोरमहाराजनो जीव तलपापड थवा मांड्यो के आ घोडी केवी रीते जाट पासेथी पडावाय ? गोरमहा-

राजने रात्रे निद्रा पण आवे नहि एम करता करतां वेत्रण दिवस नीकली गया, अंते एक युक्ति गोरने हाथ लागी तेथी एक दिवस सवारना सात आठ वागे जाटने घेर गोरमहाराज जइ पहोच्या जाटे आदरसत्कार करी महाराजने पूछ्युं, केम महाराज ! शी आज्ञा छे ? गोरमहाराजे लाग जोइ कह्युं के दुनियामां दीकरा होय ते तमारी जेवाज होजो के जे बापने तार्यो आजे सवारे ७ वागे जरा मारी आंखमां निद्रा हती, अने कांइक जागतो पण हतो, एटलामां जाणे तमारो पिता, जे कपडा विगेरे तमे मने आप्या हता ते पहेरीने मारी सामे ६ भ्म तमारो आपेलो हुको विगेरे लइने ७ उभो, अने मने कहेवा लाग्यो के 'मार सुपात्र दीकराने कहो के तारा आवा प्रकारना दानपुन्यथी तो हु बहुज राजी थये छुं, पण मारी घोडी विना हु बहुज हेरा

थाउं छुं, वास्ते तमे आजने आज घो-
मीनुं दान करावी लो, तो पठी मारा
जेवो पितृलोकमां कोइ सुखी नहि.'
त्यारे जाटे कह्युं के 'महाराज! मारे
सरकारनो कर नरवानो ठे, तेथी आ
घोमी वेची तमने एक घोमी अपावी
दउं' ते सांजलीने तो गोरना मनमां जूत
जरायु के आ जाट तो लपसवा मांड्यो,
तेटलामां जाटनां कोइ सगां त्यां आवी
पहोंच्यां तेमणे ज्यारे आ वात सां-
जली त्यारे गोरनी तरफेण लइ जाटने
ठपको आपवा लाग्यां के वाह! वाह!
बाप डुःखी थाय अने तुं एक घोमी
आपवाने आनाकानी करे! त्यारे वि-
चारो जाट नोंठो पड्यो अने ते वखते
तो घोडीनुं दान करी दीधुं, पण विचार
करतो वेगो के आ गोरे नागरुदाइ क-
रीने घोडी तो लइ लीधी, हवे कर

केम चुकवाशे ? श्रा घोडीना पैसा करी तेमांथी वीजुं इलकु घोरुं लइ गयो होत तो शुं मारो वाप नाराज थात ? श्रा वखते मारे केटलुं डुःख ठे के कर जरवानु जरा मोरुं थाय तो वदीखानामां जवु पडे; एटली दया शुं मारा वापने न उपजत ? श्रावो जुलम वली होय ? जो मारो वाप खरेखरो डुःखी थतो होत तो मने श्रावीने स्वप्नमां केम न कह्युं ? श्रा तो कांइक तमाशा जेवी वात लागे ठे जाट काचो न हतो तेणे एक एवी तदवीर रची के वीजे दिवसे सवारना पहोरमां गोरने घेर पहोच्यो, श्रने धराडे धराका पाकवा माड्यो के 'जलदी करो, जलदी करो' त्यारे गोरे कह्युं 'केम जाइ! बूमो पाको ठो ?' त्यारे जाट वोल्यो के जलदी करो मारो वाप स्वर्गमां वहु वीमार ठे तमो काले जे घोमी लइ

गया ते संबधमां आज मने स्वप्नमां आवी कहेवा लाग्यो के घोमी घणा दिवसथी बांधेली होवाथी हुं जेवो तेना उपर स्वार थयो केतरत घोमीनी मस्तीथी हुं नीचे पमी गयो. मारो पग तुटी गयो ते में अहिंयां स्वर्गना वैद्यने वताव्यो तो वैद्यराजे कह्युं के गोरदेवताने घेर बोलावी, तेना पग उपर धगधगतो गरम लोखंमनो सलीउं लगाववो जोइए, तो तारो पग साजो थइ जाय. वास्ते गोरमहाराज जलदी चालो. सलीउं धगावी तैयार करी आव्यो छुं हवे बीलकुल वखत न करो. मारा बापने दुःखी जोइने मने आ वखत कांइ सुजतुं नथी. बिचारा पुरोहितनां मोतीआं मरी गयां, पण जाट तो तेनो हाथ पकमी खेंचवा मंमी पड्यो. गोर तो मनमां निसासा मूकी पश्चात्तापमां पड्यो के आ घोडी

हु क्यांथी लाव्यो ! तेणे मनमां जाण्युं के आ तो जंगली जात छे, गरम सलीउं चांपी देशे, 'आ तो लेने गइ पुत तो खो बेठी खसम' एना जेवु थयु त्यारे गोरमहाराज उचर्या के 'अल्या, घेलो थइ गयो छे वली मारा पग उपर सलीउं चांपवाथी तारा पिताने ते कोइ दिवस आराम थतो हशे ? आवी जंगली वातो शु करे छे ?' त्यारे जाट बोल्यो के 'महाराज ! मानमां रहीने घोडी पाछी लावो, तमने घोडी आपवाथी मारा पिताने घोडी पहोंची गइ एनी शी खात्री ? ज्यारे तमारा मनमां खात्री नथी तो पछी मारा मनमां खात्री क्याथी थाय ? जो घोडी राखवी होय तो चालो मारी साथे अने तमारा पग उपर मने सलीउं चापवा द्यो नला, कंइ पगे लगडु थवानुं कोइने मन थाय ?

हरामनुं खावाने सर्वने मन थाय.' आ प्रमाणे कही जाट घोमी ठोडी लाग्यो अने महाराजने गाळो देवा लाग्यो वळी कहेवा लाग्यो के महाराज ! कलियुग आववा लाग्यो छे, तेथी हरामनुं खावानु बंध थवानो वखत आव्यो छे. वास्ते वाचकवर्गनु खास ध्यान खेंचवानुं के आज तो दुनियामां ' मीठा मीठा गडपगरूप अने करूवा करूवा थूथू ' एवो रिवाज पड्यो छे. वास्ते आंख उघाड्या विना चाले तेने खाडामां पड्या विना छुटको नथी. वली नीचली कथाथी साफ जणाशे के आज दुनियामां ढोंग सिवाय कांइ जोवामां आवतुं नथी

॥ कथा त्रीजी ॥

एक मनुष्यनो पिता गुजरी गयो हता तेणे शय्यादान विगेरेनी क्रिया

करी, त्यारे ब्राह्मणोए कह्युं के 'अमः
जे आपशो ते तमारा पिताजीने पहों
चशे, तथा तमारा पिताजीने मिष्ट प
दार्थो घणाज प्रिय हता तेथी अमोने
पण खुब मिष्टान्न खवडावो.' आथी तेणे
पुरोहितने उत्तम उत्तम पदार्थो खवडाव
वानी गोठवण करी अने नोतरुं आप्यु
ज्यारे महाराजो जमवा बेठा त्यारे वि
चारा भोला यजमाने पोताना पिताने
अफीणनु वधारण होवाथी दश पदर
तोला अफीण पण मंगाव्युं हतुं अने ते
पण महाराजने उत्तम पदार्थो साथे
खावानी विनंति करी त्यारे महाराजनां
धोतीआ हाथमां रह्यां, अने जाण्युं के
आना मनमां तो पोताना पिता भेगा
अमने करवानो विचार छे आपणा तो
वार वागी जाय पछी गोरमहाराजे
कह्युं के 'भाइ ! जे खवातुं होय ते ख-

वाय.' यजमाने कह्युं के 'क्यां खावा वास्ते छे? आ तो मारा पिताने पहोंचाडवा वास्ते छे' गोरे कह्युं के 'पहोंचतुं तो कांइ पण नथी, पण अमारो पेट भरवानो उपाय छे' आ उपरथी वाचकवर्ग समजी शकशे के श्राद्धथी आलसु ब्राह्मणोना पेट भरवा सिवाय बीजुं कांइ पण होय तेम लागतुं नथी.

॥ मृत श्राद्ध विषे केटला-
एक सवाल ॥

१ कागडा अने पितृउने शो संबंध छे के जेथी विशेष करीने श्राद्धमां कागडाउने भोजन वास्ते बोलाववामां आवे छे ? अने जो कागडा न आवे तो शामाटे पितृउनी अवगति मानवामां आवे छे ?

२ त्रण पेढी सुधीज श्राद्ध करवानो रिवाज छे त्यारे पांचमी पेढीना पितृउनी शी गति थती हशे ?

३ जे माणसो अपुत्र मरी जाय ठे तेउने पोताना धर्मानुसार स्वर्ग मळे ठे के नहीं ? केमके शुकदेवजी, ज्ञीष्मपितामह, पचशिखादि घणा ऋषिउए पोतानो विवाहज कर्यो नथी ते लोकोनी हिंडु मतानुसार कइ गति थइ ठे ?

४ पितृउं कया शरीरथी ग्रहण करे ठे ? जो कहो के स्थूल शरीरथी, तो मनुष्योने पितृउं जोवामां केम नथी आवता ? जो कहो के सूक्ष्म शरीरथी ग्रहण करे ठे, तो स्थूल पदार्थोनुं सूक्ष्म शरीरथी ग्रहण करवु बीलकुल असंज्ञवित ठे

५ एक माणसने चार ठोकरा ठे अने चारे ठोकरा जुदा जुदा शहेरमां रहे ठे अने चारे ठोकरा एकज दिवसे श्राद्ध करे ठे, ता ते पितृ चारेनुं जोजन केवी रीते ग्रहण करी शके ठे ?

६ स्त्रीउंने श्राद्ध करवानो अधिकार नथी, तो श्राद्धनुं जोजन करवानो शो अधिकार ठे ?

७ जीवनी पोताना कर्मानुसार गति थाय ठे के नहीं ? जो थाय ठे तो मृतक श्राद्ध करवानुं शुं फल ?

८ जे जातिउंने श्राद्धनो अधिकार नथी तेना पितृउं बीजाना पितृउंनो खोराक मारफाड करी पचावी लइ खाइ जाय ठे के जूख्याज पड्या रहे ठे ? जो जूख्याज पड्या रहे ठे, तो ते विचाराउंना दिवस केम करी व्यतीत थता हशे ?

९ ज्यारे जीव शरीर ठोडे ठे त्यारे तेना पाठल दश एकादश द्वादश विगेरे जे श्राद्ध करवामां आवे ठे तेमां पयस देवाथी एक वर्ष सुधी तृप्त रहे ठे, तो वचमां कर्णागतमां पण श्राद्ध करवुं ए विचारा पितृउंने बीमार करवा बरोबर ठे. ज्यारे

तेउ बीमार थता हशे त्यारे तेने औषध कोण आपतुं हशे ? अने वगर औषधीथी पितृ विचारा बीमार रहेता हशे, कारणके अजीर्ण सर्व रोगनुं मूल छे इत्यादि ॥

प्रश्न ६१ साधु साध्वीउ 'वर्त्तमान योग' कहे छे तेनु शुं तात्पर्य छे ?

उत्तर आयुष्यनो विश्वास नथी अने कार्योमां घणा अंतराय आवी पडे छे, माटे साधुउ वर्त्तमान योगथी व्यवहार चलावे छे.

॥ तथाहि ॥

आउस्स न विसासो,कज्जस्स बहुणि अतरायाणि ॥ तम्हा साहूणं वट्टमाणजोगेण ववहारो ॥ १॥

प्रश्न ६२ त्रण अक्षरनुं नाम छे तेमांथी प्रथम अक्षरने बाद करतां जलधिमां रहेल अदृश्य पदार्थनुं नाम थाय

छे, मध्यनो वर्ण अलग करतां पृथ्वीमां वर्णनीय व्रतनुं नाम नीकळे छे अने अंत्याक्षरने हीन करतां शरीरने कंपावनारनुं नाम प्रगटे छे, ते त्रण अक्षरना नामवाळा तीर्थपतिने हुं नमन करुं छु. एवी रीते समस्याकार कहे छे. ते तीर्थंकर कया समजवा ?

॥ समस्याकाव्यं यथा ॥

आद्येन हीनं जलधावदृष्टं,
मध्यन हीनं भुवि वर्णनीयम्॥
अतेन हीनं धुनुते शरीरं,
तन्नामकं तीर्थपतिं नमामि ॥१॥

उत्तर 'शीतल' ए त्रण अक्षरमांथी प्रथम अक्षर वाद करतां ' तल ' रहे छे, ते समुद्रमा अदृश्य छे मध्य वर्ण रहित करतां ' शील ' रहे छे, ते पृथ्वीमां प्रशसनीय छे. अंत्याक्षर वर्जवाथी शीत

रहे छे, ते शरीरने कंपावी नाखे छे. ते त्रण अक्षरना नामवाला श्रीशीतलनाथ स्वामी समजवा. तेमने समस्याकारक नमस्कार करे छे

प्रश्न ६३ तीर्थयात्रामां सूतक लागे के नहीं ?

उत्तर तीर्थयात्रामां सूतक न लागे

॥ यतः श्रीआचारदिनकरे ॥

स्वकुले तीर्थमध्ये च, तथावश्ये वलादपि ॥ षष्ठी पूजनकाले च, गणयेन्नैव सूतकम् ॥ १ ॥

प्रश्न ६४ अति क्षुधातुर, तृषातुर अने थाकेला मनुष्ये तत्काल जल पीवु के नहीं ?

उत्तर अत्यत भूख, तरस अने श्रमवालाए एकदम पाणी न पीवुं, कारणके तेम करवाथी साते धातुओ कोपायमान

थाय ठे, अने वात, पित्त, श्लेष्मादि दोषो उत्पन्न थाय ठे

॥ यदुक्तं कुवलयमालायाम् ॥

यत्किल दुःसहतृषाक्षुधापरिश्रमभाजिनाऽपि देहिना तत्क्षण पयो न पेयमिति । यस्मादेते सप्तापि धातवः प्रकुप्यंति वातपित्तश्लेष्मादयो दोषा उत्पद्यंते ॥

प्रश्न ६५ भूत, पिशाच अने राक्षसो कवल आहार करे के नहीं ?

उत्तर भूत पिशाचादि कवल आहार करता नथी, पण वालकोना जेवी क्रीडा करे ठे अने भक्षण करता होय तेवी माया देखाडे ठे

॥ तदुक्तं कुवलयमालायाम् ॥

गौतमेन पृष्टं भगवन् किमु पिशाचा राक्षसाश्च कावलिकमाहारं

कुर्वंति किं वा न ? जगवता आ-
ज्ञप्तं गौतम ! न कुर्वंति प्रकृत्या व्य-
तरा अमी बाला इव क्रीमां कुर्वंति
मद्यामांसं जुक्तमिति मायां दर्शयति ॥

उपरना लेखथी सिद्ध थाय ठे के देवता देवीउंनी आगल तेमने तृप्त करवा अज्ञानीउं पशुपक्षीउंनो वध करे ठे ते फजुल ठे अने निरपराधी प्राणीउंने मारवाथी केवल घातकीपणुंज तेउं करे ठे, कारणके कवल आहारी न होवाथी देवता देवीने काइ लाज नथी तेम जे इरादाथी वध करवामा आवे ठे ते इरादो वर न आववाथी वध करनारने पण काइ फायदो नथी फक्त बिचारा मुगा प्राणीनो वचमां घाट घमाइ जाय ठे ते बिचारा करगरी पोकार करे ठे, पण तेमनी दाद कोण साजले ठे ? जीवदया प्रतिपालक बिरुदने धारण करनारा हिंदु राजाउंए ज्यारे ते-

मनी दाद न सांभली अने पोताना प-
वित्र विरुद्धने वट्टो लगाड्यो त्यारे अमे-
रीकन राज्यमां तेमनी अरजी पसार
थइ अने तेमने अदल न्याय मळ्यो ते
आवी रीते–

॥ जीवदयानी खरी लागणीथी
राजसभामां रजु थएली प-
क्षीओनी अरजी जैन-
पत्र ता. ११ मी
एप्रिल सने
१९०६ उप-
रथी ॥

" अमेरीकाना मेसेचुसेट्स नामना
राज्यनी राजसभामां पक्षीओना रक्षण
माटे जाणे पक्षीओ पोतेज करगरीने वि-
नंति करता होय एवी ढबमां त्यांना
वडा सभासद मी ज्योर्जहोरे अरजी

कुर्वति किं वा न ? भगवता आ-
ज्ञप्तं गौतम ! न कुर्वंति प्रकृत्या व्यं-
तरा अमी बाला इव क्रीडा कुर्वंति
महामांसं भुक्तमिति मायां दर्शयति ॥

उपरना लेखथी सिद्ध थाय छे के देवता देवीओनी आगल तेमने तृप्त करवा अज्ञानीओ पशुपक्षीओनो वध करे छे ते फजुल छे अने निरपराधी प्राणीओने मारवाथी केवल घातकीपणुंज तेओ करे छे, कारणके कवल आहारी न होवाथी देवता देवीने काइ लाभ नथी तेम जे इरादाथी वध करवामां आवे छे ते इरादो बर न आववाथी वध करनारने पण कांइ फायदो नथी फक्त बिचारा मुगा प्राणीनो बचमा घाट घडाइ जाय छे ते बिचारा करगरी पोकार करे छे, पण तेमनी दाद कोण सांभले छे ? जीवदया प्रतिपालक बिरुदने धारण करनारा हिंदु राजाओए ज्यारे ते-

मनी दाद न सांभली अने पोताना पवित्र बिरुदने बट्टो लगाड्यो त्यारे अमेरीकन राज्यमां तेमनी अरजी पसार थइ अने तेमने अदल न्याय मल्यो ते आवी रीते–

॥ जीवदयानी खरी लागणीथी
राजसभामां रजु थएली प-
क्षीओनी अरजी. जैन-
पत्र ता. २२ मी
एप्रिल सने
१९०६ उप-
रथी ॥

" अमेरीकाना मेसेचुसेट्स नामना राज्यनी राजसभामा पक्षीओना रक्षण माटे जाणे पक्षीओ पोतेज करगरीने विनंति करता होय एवी ढबमां त्यांना वडा सभासद मी ज्योर्जहोरे अरजी

रजु करी हती जे सांजली राजसन्नामां पक्षीर्उने नहीं मारवानो कायदो पसार करवामा आव्यो हतो आ अरजी ला-गणीवाली तथा वाचवालायक होवाथी जेमनी तेम नीचे आपीए ठीए

मासेचुसेट्ट्स गज्यनी राजसन्नाना अध्यक्ष अने सन्नासदो,

आ राज्यना मधुर गायन गानारा पक्षीर्उनी तमो नामदारनी हजुरमां नम्र अरजी ठे के तमो अमारा विषे जे जाणो ठो ते करता अमो तमारा विषे थोरुं जाणता नथी तमो नला ठो अने गरीव, वीमार अने नूरया माणसो ते-मज बुला, लगमा अने वेहेराउं माटे तमे वाधेला मकानोना ठापरा उपर अमे नाचीए ठीए तथा घरोनी वारीर्उमाथी जोइए ठीए अमे फाऊमा माला वाध्या ठे अने तमारा वालवच्चा तथा गरीवो

माटेना वागवगीचाउंमां अमे घणां घणां गायनो गायां ठे देशना मोटा जागमां अमे सूर्यनो प्रकाश पडे त्यांसुधी उडीए ठीए जेम तमे अमेरीकाना ठो तेम अमे पण अमेरीकनज ठीए तमारी माफक अमारामांनां केटलांक पक्षीउं पण समुद्र उलंगीने अत्रे आव्यां ठे घणां खरां तो लांबो वसवाट करीने अत्रेज रह्यां ठे, अने तमारा वडवाउंने अमारामांनां घणां खरांउंए पहेलो आवकार आप्यो हतो, एटलुंज नहीं पण अमारां माता-पिताए तमारां मातापिताने खुश करवा बन्यु तेटलुं कर्युं हतु आपनी हजुरमां एक खेदजनक वात निवेदन करवानी ठे के वगर विचारना अनाडी लोको अमारो नाश करवानी तजवीज करे ठे. अमारां पीठां सुंदर होवा माटेज तेउं अमोने मारी नाखे ठे सौजाग्यवतीउं

अने प्यारी छोकरीउं जे अमारा उत्तम मित्रो छे तेज अमारा सहोदरने मारी नाखे छे, ने तेम करी तेमनां सुदर पीछां टोपीउंमा नाखे छे कोइ वखत मोजशोखने खातर अमोने मारी नाखे छे निर्दय छोकराउं अमारो मालो लुंटी जाय छे अमारी जगो जाणे आकाशमांज न होय तेम धडुको अने जालथी अमोने नसाडे छे आवी स्थिति चालु रहेशे तो तो पक्षीउंनी जड मूलथी नीकली जशे जे देशो पक्षीउंथी भरपूर हता ते आजे उजड थया छे इटालीमांथी बुल बुलनो सदंतर नाश थयो छे, माटे अमने कमोते मारी नाखवामां आवे छे तेमांथी बचावशो तमे कायदो कर्यो छे के पक्षीने मारवु नहीं, तेम इडांनो नाश करवो नहीं तेवोज बीजो कायदो करशो के कोइए अमारां पीछा पहेरवां

नहीं. तमारी ठोकरीउं पीठां विना सुं-
दरज ठे. जो तमे ते कायदो करशो तो
तेनो वदलो वाळवानु श्रमे जाणीए
ठीए तमारा ठोकराउंए स्वच्छ केम र-
हेवु ते शीखवीशुं. सलाहसंपथी केम
रहेवुं ते श्रमे श्रमारा दाखलाथी देखा-
डीशुं श्रमे एवा सुंदर माला बांधीशुं
के जे जोवानु तमोने मन थाय तमारा
वागवगीचामां श्रने फुलवाडीउंमां खे-
लशुं. तेमनां फलोने कीडाना उपद्रवथी
वचावीशु वसंत तथा ग्रीष्मरुतुने श्र-
मारा मधुर गायनवडे मनोहर वनावीशुं.
जुन मासमां तमो फरवा नीकलशो त्यारे
तमारी पाठल उडी दिवसने खुशनुमा
वनावीशुं संध्याकाले थाकीने घेर श्रा-
वशो त्यारे,चकलीउं तमोने जणावशे के
श्रमे केटला वधा श्राभारी ठीए ? रा-
त्रिए पण गायन करी तमोने रीझवीशुं.

અમે સહીસલામત થવાથી બીજાં પક્ષીઓ પણ આ રાજ્યમાં આવીને આશ્રય લેશે ”

તેમજ ચાલતા વર્ષની પશુપ્રેમીઓની બજાર લંડનમાં તા ૨૮ ૨૯-૩૦ નવેમ્બરે ભરાઇ હતી આ મન્ડળીનો હેતુ શોધખોળ માટે થતી પશુહિંસા અટકાવવાનો છે આ બજારમા ડ્યુકો, લૉર્ડ, કાઉન્ટો તથા તેમની ઉમરાવ પત્નીઓ વિગેરેની સખ્યા ૧૨૫ થી વધારે હતી બજાર જોવા જવાની ફી રુ ૧૦ હતી બજારમાં કોઇ ઉમરાવ સ્ત્રીઓએ ગાવાનો તો કોઇએ બીજા પ્રકારનો, એમ ભાગ ભજવ્યો હતો લેડી બ્લોમફીલ્ડ તથા બેરોનેટ વારનેકોએ પુષ્પો વેચવાનો વિભાગ સાચવ્યો હતો આવા ખાનદાન કુટુંબના મનુષ્યો ખરા ઉત્સાહથી ભાગ લે ત્યારે ગરીબ માણસો ઉપર કેટલી બધી અસર

थाय तेनो तो विचारज करवो बस छे. थयेली मोटी रकमनी उपज जनावरोना हकना रक्षण माटे लडत चलावनार मंडलीउने तेउए अर्पण करी हती

आवी रीते विदेशी राज्योमां ज्यारे प्राणीरक्षणना उपायो योजवामां आवे छे, त्यारे आर्य महाराजाउ शिकारे चढीने अने नवरात्रना पवित्र दिवसोमां तेमज दशेरानी स्वारी चढावीने पाडा अने गरीब घेटां, बकरां आदि मुंगां प्राणीउनी कतल चलावे छे ए केटलु वधुं शोचनीय छे !

अहीं उपयोगी होवाथी धी इन्डियन एडवरटाइझर ता २१ मी सप्टेम्बर सने १९०६ ना पत्रमां आवेलो 'देशी राज्यो ने दशेराना पवित्र तहेवार' ए मथालावालो लेख रजु करीए छीए.

" हिंडु लोकोमां दशेराना दिवसने

एक मोटो तहेवार गणवामां आवे छे ते पवित्र दिवसने सौ आनंदसह गालवाने तल्पी रहेला होय छे परंतु ते दिवसे प्राणीउंना जीव घणाज गभरायला होय छे कुदरते एक नानामां नाना जीवथी ते मोटामां मोटा सर्व जीवोने सरखी वक्षीसो आपेली छे, छतां दशेरा जेवा पवित्र दिवसे धर्मने व्हाने बकरा, पाडा जेवाना वध थता होवाथी प्राणीउं उदास रहे छे धर्मने व्हाने मोटा प्राणीउंनां रुधिर विना कारणे देवीदेवो आगल व्हेचरावचामा आवे छे ते त्रासजनक वात साभली कया विचारवंत जनतु हृदय नहीं पीगले ? अफसोस ! अफसोस ! शुं जे धर्म दुर्गतिमां पडता अटकावनार ते धर्मनां कार्यज अधोगतिमा लइ जवाना दरवाजा खुल्ला मूके ! केटलाक देशीराज्योमां आशो

शुदी ८ तथा आशो शुदी १० ना रोज प्लेग, कोलेरा, शीतला विगेरे दुष्ट बीमारीओ आवे नहीं तेटलामाटे देवीने संतुष्ट करवा आवा निरपराधी, अवाचक, मुंगां प्राणीओनो वध करवामां आवे छे ए शुं! आथी परमेश्वर राजी थशे? जरा पण नहीं आजे आपणे थोडा वखतथी दशेरा जेवा पवित्र तहेवारोए मुगां प्राणीओनो वध थतो सांभलीए छीए, परंतु तेथी जरा पण आफतो दूर थइ सांभली छे? हमेशां वधती ने वधती आफतो जोइए छीए त्यारे एनु शु कारण? हु कहीश के अवाचक प्राणीओनो वधज तेनु कारण छे राजाथी रंक सुधी सर्वेने पोताना पूर्वजन्मना कर्मानुसार सुख, दुःख भोगववु पडे छे, ने आफतो आवे छे ते मनुष्योनां पापोनी शिक्षाज छे प्राणीओने मारवामांज पुण्य होय तो ' अहिंसा प-

णीउने विना कारणे मारी नाखवाना रिवाजथी राजामहाराजाने गोब्राह्मण प्रतिपाल निराश्रिताधार, प्रजापालक, न्याय दया क्षमावान् विगेरे इल्कावो आर्यतनुजो मारफते माताए मोकल्या हशे ? आगल शुं आवा रिवाज हता ? पुराणो तपासतां आवा दाखला कोइ मली आवता नथी. पशुवध ए शास्त्ररीति नथी अमे राजा महाराजाउने विनंति करीशु के हिंदुउना तहेवारोना दिवसे पशुवध करवानी सलाह आपनार शास्त्री पासे आर्यमाता तरफथी मलेला इल्कावोनो अर्थ करावो

हिंदु राजाउ एकदम आ रिवाजने देशवटो आपी मुगां अवाचक प्राणीउना जीव उगारी, सनातन आर्यधर्मनी रक्षा करशेज एवु धारी अमने आ प्रसंगे आ लखवानी जरूर जणाइ छे

प्रश्न ६६ उपरना लेखो सिवाय कोइ

रमो धर्म ' ए सूत्र केवी रीते आर्यधर्ममां उत्कृष्ट पद पाम्युं ? केटलाएक भोला अंधश्रद्धालु मनुष्यो कहे छे के मातानु करोवु छे, तेम नहीं करीए तो माताने कुडु पडशे अरे ! जे माताने तमे महादयालु, भक्तवत्सल, आखी सृष्टिनी जनेतारूप मानो छो ते पोताना एक बालकना रुधिरपानथी संतुष्ट थशे ? तमे ते माताने, तमारा धर्मने ने आखा आर्यावर्त्तने आवा दुष्ट कर्मथी कलक लगाडो छो

केटलाक राज्योमां जैन कोन्फरन्सनी वखतो वखतनी अरजीओथी आवा दुष्ट रिवाजो बध थयेला छे, त्यां शुं देवदेवीओए असतुष्ट थइ तेमने आफतोमा गरक करेल छे ? बील्कुल नहीं।

आवा निरपराधी मुगा उपयोगी प्रा-

णीउने विना कारणे मारी नाखवाना रिवाजथी राजा महाराजाने गौब्राह्मण प्रतिपाल निराश्रिताधार, प्रजापालक, न्याय दया क्षमावान् विगेरे ब्लकावो आर्यतनुजो मारफते माताए मोकल्या हशे ? आगल शुं आवा रिवाज हता ? पुराणो तपासतां आवा दाखला कोइ मली आवता नथी पशुवध ए शास्त्ररीति नथी अमे राजा महाराजाउने विनंति करीशु के हिंदुउना तहेवारोना दिवसे पशुवध करवानी सलाह आपनार शास्त्री पासे आर्यमाता तरफथी मलेला ब्लकावोनो अर्थ करावो

हिंदु राजाउ एकदम आ रिवाजने देशवटो आपी मुगां अवाचक प्राणीउना जीव उगारी, सनातन आर्यधर्मनी रक्षा करशेज एवु धारी अमने आ प्रसंगे आ लखवानी जरूर जणाइ छे

प्रश्न ६६ उपरना लेखो सिवाय कोइ

शास्त्रीय पुरावो एवो छे के जेथी आ घात-कीपणानो दुष्ट रिवाज नाबुद थाय ?

उत्तर श्रीयोगशास्त्रमा एवु फरमान छे के विघ्ननी शांतिने माटे करेली हिंसा पण निश्चयथी शांति न करता उलटी विघ्नने वास्ते थाय छे, तेम कुलनो नाश करनारी थाय छे

॥ तथाहि ॥

हिंसा विघ्नाय जायेत, विघ्नशात्यै कृताऽपि हि ॥ कुलाचारधियाप्येषा, कृता कुलविनाशिनी ॥ १ ॥

आ श्लोकना आधारे वडोदराना सद्-गृहस्थोए गायकवाड सरकारने अरजी गुजारतां ते नामदार सयाजीराव गायक-वाडे दशेराना दिवसे थतो पाडानो वध बंध कर्यो छे, ते बदल तेमने मोटु मान घटे छे, परंतु हजु ते नामदारना राज्यमा घेटां बकरांनो वध चालु रहेलो छे, ते

આવા સુધરેલા રાજ્યકર્ત્તાને લજ્જાસ્પદ છે અમે આશા રાખીએ છીએ કે તેઓ અયોગ્ય કુલપરંપરાને ન વલગી રહેતાં જલદીજ આ પામર પશુઓને નિરર્થક મરતાં વચાવી તેમનો આશીર્વાદ લેશે. આ પ્રસંગે ધરમપુરના રાજા પ્રમુખ જે જે રાજા મહારાજાએ દશેરાને દિને થતો પશુવધ અટકાવ્યો છે તેમને ધન્યવાદ ઘટે છે; અને જે જે રાજ્યોમાં અધ પરંપરા ચાલતી હોય ત્યાનાં સત્તાધીશોએ "આત્મવત્સર્વભૂતાનિ, ય પશ્યતિ સ પશ્યતિ" એ પુરાણ વાક્યાર્થનું મનન કરી સર્વ જીવો તરફ આત્મવત્ નજર કરી ખરેખર દેખતા થવું જરૂરનું છે

પ્રશ્ન ૬૭ શિકારથી માર્યા જતાં હરણો તરફનો પોકાર કોઇ શાસ્ત્રમાં ઉગવેલો છે ?

ઉત્તર "હિંસાદિ અષ્ટક" નામના

प्रथमां हरणोना बचाव माटे हरणो पोते-ज जाणे पोकार करी निवेदन करता होय तेम एक कवि तेमना शब्दोमां क-हे छे के ' अमे जन्मवननो त्याग कर्यो, तृणना अंकुरावाली माता जेवी वहाली स्थली मूकी दीधी, विसामाना हेतुभूत बधु जेवा वृक्षोनी गणना न करी, बाल-बच्चांना वियोगदुःखथी विधुरीत थयेली हरणीने अर्ध मागे मूकी, तोपण अमारी पदपंक्तिने ढूंढता आ निर्दय शिकारीओ अमने छोडता नथी. '

॥ तदुक्तं हरिणाष्टके ॥

त्यक्तं जन्मवनं तृणांकुरवती मा-
तव मुक्ता स्थली, विश्रामस्थितिहेत-
वो न गणिता बधूपमाः पादपा. ॥
बालापत्यवियोगदुःखविधुरा मुक्तार्ध-
मार्ग्गे मृगी, मार्ग्गंत पदवी तथा-
प्यकरुणा व्याधा न मुंचत्यऽमी॥१॥

उपरना काव्यमां दर्शाव्या मुजब क-रगरीने पोकार करतां पशुओनी दाद न सुणतां केटलाएक राजा महाराजाओ निरपराधी पशुपक्षीओनो शिकार करी मोटी शौर्यतानो दावो करे छे, अने सिंहनो शिकार कर्यो एटले तो जाणे शौर्यतानो अवधिज आवी गयो एम माने छे ते शिकारी महाराजा आदि घातकी पुरुषोने हुं दयार्द्र चित्ते तेमना हित माटे कहीश के तेमणे खरा क्षत्रीत्वनु दिग्दर्शन करवा त्रिपृष्ट वासुदेवना दाखलारूपी दर्पणमां अवलोकन करवु, कारणके तेणे सापराधी सिंहने विदारण कर्यो हतो, तोपण आजकालना शिकारी राजा वादशाहोनी जेम चारे तरफथी रोकीने के कोलाहल करीने के गाभरो वनावीने के गफलतमां राखीने मार्यो न हतो तेनुं वृत्तांत श्रीजिनवल्लभसूरिकृत 'डुरिय-

रयसमीर ' प्राकृत काव्यनी श्रीसमयसुंदर उपाध्यायकृत वृत्तिमा आपेलुं छे ते आ प्रमाणे—

एकदा शालिक्षेत्रना रक्षकोनु भक्षण करी एक मोटो सिंह देशने उपद्रव करतो हतो ते अपराधी सिंहने शिक्षा करवा रथारूढ थइ त्रिपृष्ट वासुदेव अने तेमना भाइ बाल्यावस्थामा सिंहगुफाद्वार पासे जइ पहोंच्या, त्यारे सिंह सामो थयो तेने जोइ न्यायवंत त्रिपृष्टे विचार कर्यो के आ सिंह वाहन विनानो छे, तेनी सामे हु वाहनारूढ थइ जइश ते केवु अयोग्य गणाशे ! एम विचारी तेणे वाहन छोडी दीधु त्यार बाद वळी तेणे विचार कर्यो के आ सिंहनी पासे कोइ पण जातिनु हथियार नथी, छतां हु हथियार लइ तेनी सन्मुख जाउं छु ते केवो निर्लज्ज छु ! आ ते शुं न्याययुद्ध कहेवाय ? तेम विचारी पोताना शस्त्रो मूकी दीधां

अने सिंह जेम पराक्रमथी ते सिंहना सामो चाल्यो तेने आवतो जोइ सिंह तो ताजुबी पामी गयो के 'प्रथमतो जे कोइ मने मारवा आवता ते फोज सहित सज्ज थइ आवता ते पण बची गया नथी, तो आ वली कोण अभिमानी हथियार रहित मारी सामे आवे छे ? एने हुं अभिमाननुं फल चखाडु' एवा इरादाथी जेवो ते त्रिपृष्ट उपर तलप मारवा गयो तेवोज त्रिपृष्टे तेना बन्ने होठ पकडी तेने कंठगत प्राण कर्यो त्यारे ते सिंह खेदयुक्त चित्ते कपवा लाग्यो ते वखते गौतमस्वामीनो जीव जे तेमनो सारथी हतो तेणे कह्युं–'हे मृगपति ! तु चिंता करीश नहीं के मने एक हलका मनुष्यमात्रे मारी नाख्यो जेम तुं पशुपति सिंह छे, तेम आ पण नरपति सिंह छे ' आ उपरथी हालमां वाघनो शिका-

रयसमीर ' प्राकृत काव्यनी श्रीसमयसुंदर उपाध्यायकृत वृत्तिमां आपेलुं छे ते आ प्रमाणे–

एकदा शालिक्षेत्रना रक्षकोनु भक्षण करी एक मोटो सिंह देशने उपद्रव करतो हतो ते अपराधी सिंहने शिक्षा करवा रथारूढ थइ त्रिपृष्ट वासुदेव अने तेमना भाइ बाल्यावस्थामा सिंहगुफाद्वार पासे जइ पहोंच्या, त्यारे सिंह सामो थयो तेने जोइ न्यायवंत त्रिपृष्टे विचार कर्यो के आ सिंह वाहन विनानो छे, तेनी सामे हु वाहनारूढ थइ जउंश ते केवु अयोग्य गणाशे ! एम विचारी तेणे वाहन छोडी दीधु त्यार बाद वली तेणे विचार कर्यो के आ सिंहनी पासे कोइ पण जातिनु हथियार नथी, छतां हुं हथियार लइ तेनी सन्मुख जाउं हु ते केवो निर्लज्ज हु ! आ ते शुं न्याययुद्ध कहेवाय ? तेम विचारी पोताना शस्त्रो मूकी दीधा

अने सिंह जेवा पराक्रमथी ते सिंहना सामो चाल्यो. तेने आवतो जोइ सिंह तो ताजुबी पामी गयो के 'प्रथमतो जे कोइ मने मारवा आवता ते फोज सहित सज्ज थइ आवता ते पण बची गया नथी, तो आ वली कोण अभिमानी हथियार रहित मारी सामे आवे छे ? एने हुं अभिमाननुं फल चखाडुं' एवा इरादाथी जेवो ते त्रिपृष्ट उपर तलप मारवा गयो तेवोज त्रिपृष्टे तेना बन्ने होठ पकडी तेने कंठगत प्राण कर्यो त्यारे ते सिंह खेदयुक्त चित्ते कपवा लाग्यो ते वखते गौतमस्वामीनो जीव जे तेमनो सारथी हतो तेणे कह्युं–'हे मृगपति ! तुं चिंता करीश नहीं के मने एक हलका मनुष्यमात्रे मारी नाख्यो जेम तुं पशुपति सिंह छे, तेम आ पण नरपति सिंह छे ' आ उपरथी हालमां वाघनो शिका-

र करी वीरतानुं अभिमान धरावनारा प्रजापालक महाराजाओ केटला न्यायी अने शूरा छे ते स्पष्ट जणाइ आवे छे

प्रश्न ६७ कोइ राजा शहेनशाहे धनुष्यबाणनो त्याग करी शिकारनो त्याग कर्यो होय तेवा दाखला छे ?

उत्तर श्रीहीरविजयसूरीश्वरजीए आपेला बोधथी हिंदना शिरताज नेकनामदार अकबर बादशाहे शिकारनो त्याग करी आग्राथी अजमेर सुधी प्रतिकोशने अंतरे मिनारा उपर हरणना शींगडा चढावी शिकारनो त्याग दुनियामां जाहेर कीधो हतो इत्यादि अनेक दाखला मोजुद छे तथापि अहीं उपयोगी होवाथी काव्यमालामां मुद्रित थयेली तिलकमंजरीनी प्रस्तावनामां आपेलो धनपाल पंडित अने भोज राजानो दाखलो सविस्तरपणे आपीशुं तो ते अप्रासंगिक नहीं गणाय

एकदा मुंज राजाए जेने 'साक्षात् सरस्वती' नो इल्काब आपेलो छे एवा धनपाल पंडितने शिकारे चढेला भोज राजाए पूछ्युं के 'हे धनपाल ! आ हरणो आकाशमां कूदे छे, अने सुकरो जमीन खोदे छे, तेनु शु कारण हशे ?' त्यारे धनपाले कह्यु के ' हे देव ! तमारां शस्त्रोथी चकित थयेलां तेओ पोतपोतानी जातिनो आश्रय लेवा तेम करे छे. हरणो चंद्रना चिह्नरूप हरणनुं शरण चाहे छे, अने सुवरो वराह अवतारनो आश्रय लेवा चाहे छे ' त्यारबाद राजाए बाणवडे मृगने विंध्या पछी तेनुं वर्णन करवा धनपाल तरफ जोयुं, त्यारे धनपाल बोल्यो के 'हे राजन् ! अहीं थयेलुं तमारुं पराक्रम पातालमां पडो. आ तो कुनीति छे के अशरण अने निर्दोष एवो दुर्बल प्राणी बलवानथी

हणाय छे हा ! हा ! महाकष्टनो विषय छे के राजा विनानुं जगत् थइ पड्युं ' आ प्रकारना तेना तिरस्कारथी क्रोध पामेलो राजा बोल्यो के ' आम शामाटे कहो छो ? ' त्यारे धनपाले कह्युं के ' गमे तेवा वैरी होय तोपण प्राणांते मुखमां तृण ग्रहण करवाथी मार्या विना मूकी देवामा आवे छे, अने आ निरपराधी प्राणीउ तो हमेशा तृण भक्षण करे छे, वास्ते तेमने केम मराय ?' आ प्रकारे धनपाले कह्युं त्यारे अत्यंत उत्पन्न थयेली दयावडे ते राजाए धनुष्यबाणनो भग करवापूर्वक जीवितव्य सुधी शिकारनो त्याग कर्यो

अही प्रसगोपात यज्ञमां मार्या जता पशुओना बचाव माटे ते कविवरे राजाने करेलो बोध दर्शावीए छीए. शिकारनो त्याग करी घर तरफ पाछा फरता

यज्ञमंरूपमां यज्ञने थांजले वांधेला वकरानी दयाजनक वाणी सांजलीने राजाए धनपालने पूव्युं के 'आ वकरो शुं कहे-ठे ?' आ प्रकारे पूठवाथी धनपाले कह्युं के सांजलो—आ वकरो कहे ठे के 'हे यज्ञ करनार ! हुं स्वर्गना उपजोग माटे तृष्णातुर नथी अने में स्वर्ग माटे तारी प्रार्थना पण करी नथी, हुं तो तृण जक्षणवडे सतत संतुष्ट ठुं वास्ते अरे लायक नर ! मारा उपर आवो जुलम गुजारवो तने युक्त नथी वली जो यज्ञमां तारा मारेलां प्राणीओ निश्चे स्वर्गमां जाय ठे तो तुं तारां मावाप अने पुत्र वंधुओने होमीने तेमने देवलोकमां मोकलवा यज्ञ केम करतो नथी?' हे नरेंद्र ! आ प्रकारे आ वकरो पोकर करे ठे. आवां धनपालनां दयाजनक वचन सांजली कमकमी उठेला राजाए 'आ ते शो जुलम ?'

एम कही फरी बोलवानी प्रेरणा करी. त्यारे ते बोल्यो के "आवी रीते यज्ञमां यज्ञिय पशु बाधवानो थाभलो ऊभो करी, पशुना मुखमां जव भरी, निर्दयपणे कोणीओना प्रहारथी रीबावी रीबावीने मारी नाखी, तेमना लोहीथी कादव करी, आवा क्रूरपणाथी जो स्वर्गमा जवातु होय तो नरकमां शाथी जवाय ? अने कोण जशे ? माटे एनो खरो अर्थ तो आ प्रकारनो छे के सत्यरूपी यज्ञ-स्थभ, तपरूपी अग्नि, कर्मरूपी काष्ठ अने अहिंसारुपी आहुति आपवी आ प्रकारनो यज्ञ करवो ते सत्पुरुपोने अभिमत छे इत्यादि शुकसवादमा कहेला वचनो राजा आगल बोलता अने हिंसाशास्त्रना उपदेशक हिंसक सभावालाउ ब्राह्मणरूपे राक्षसो छे, एम ठसावता ते धनपाले भोजराजाने अर्हत् धर्मनो अभिलाषी बनाव्यो

॥ तथाहि ॥

किं कारणं नु धनपाल मृगा यदेते,
व्योमोत्पतन्ति विलिखन्ति भुवं वराहाः ॥
देव त्वदस्त्रचकिताः श्रयितुं स्वजातिमेके मृगाङ्कमृगमादिवराहमन्ये ॥ १ ॥

राज्ञा बाणेन मृगे विद्धे सति तद्वर्णनाय विलोकितमुखो धनपालः प्राह ॥

रसातलं यातु तवात्र पौरुषं,
कुनीतिरेषाऽशरणो ह्यदोषवान् ॥
निहन्यते यद्बलिनापि दुर्बलो,
हहा महाकष्टमराजकं जगत्॥२॥

इति तन्निर्भर्त्सनात्क्रुद्धो नृपः किमेतत् ? इत्यभिदधानः

वैरिणोपि हि मुच्यंते, प्राणांते

तृणभक्षणात् ॥ तृणाहाराः सदैवैते, हन्यन्ते पशवः कथम् ॥ ३ ॥

इत्यूचे अतोऽद्भुतसंजातकृपेण नृपेण धनुर्बाणभगमङ्गीकृत्याजीवितान्तं संन्यस्तमृगयाव्यसनेन पुरं प्रत्यागच्छता तत्र यज्ञमंडपे यज्ञस्तम्भनियन्त्रितच्छागस्य दीनां गिरमाकर्ण्य किं पशुरसौ व्याहरति ? इत्यादिष्टः स धनपाल । अवधेहि इति प्राह

नाहं स्वर्गफलोपभोगतृषितो नाभ्यर्थितस्त्व मया, संतुष्टस्तृणभक्षणेन सततं साधो न युक्तं तव ॥ स्वर्गं याति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो, यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पत्रैस्तथा बान्धवैः ॥ ४ ॥

इति तद्वाक्यानन्तरं राज्ञा किमेतत्, इति जूयोऽन्नियुक्तः ॥

यूपं कृत्वा पशून्हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम् ॥ यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ ५ ॥ सत्य यूपं तपो ह्यग्निः, कर्माणि समिधो मम ॥ अहिंसामाहुतिं दद्यादेवं यज्ञः सतां मतः ॥ ६ ॥

इत्यादीनि शुकसंवादोदितानि वचांसि नरेंद्रस्य पुरतः पठन् हिंसाशास्त्रोपदेशिनो हिंसकप्रकृतीन्ब्रह्माणरूपेण राक्षसांस्ताञ्ज्ञापयन्नृपमार्हद्धर्माभिमुखं चकार ।

प्रश्न ६ए ढुंढको एम कहे ठे के जे घरमांथी एक दिन आहार लीधो होय ते घरमां वीजे दिन साधु भिक्षा माटे जाय तो तेने नित्यपिंडनो दोप लागे. आ प्रकारे नित्यपिंडनो अर्थ करे ठे ते ठीक ठे के केम ?

उत्तर. ढुंढकोनो ए कल्पित अर्थ दुरस्त नथी, कारणके नियागनो अर्थ नियत थाय छे अने ते तो ज्यारे आदरथी कोइ निमंत्रणा करे के 'हे ज्ञगवन्! तमारे मारा उपर प्रतिदिन अनुग्रह करवो' आ प्रकारनी निमत्रणा अंगीकार करी तेम करे त्यारे साधुने नित्यपिंडनो दोष लागे छे, परंतु स्वाज्ञाविक जेने प्रतिदिन ज्ञिक्षा मळे छे तेने आ दोष लागु पडतो नथी

॥ तथोक्तं श्रीदशवैकालिकचूर्णौ ॥

नियागं नाम निययति वुत्तं संज्ञवइ तं तु यदा आयरेण आमंतियो ज्ञवइ जहा ज्ञयवं तुझेहिं मम दिणे दिणे अणुग्गहो कायवो तदा तस्स अप्ज्ञुवगच्छं तस्स नियागं ज्ञ-

वइ न तु जस्स अदाजावेए दिणे दिणे जिक्का लजइत्ति ॥

सारांश के ढुंढको जेम एक दिन वर्जी वीजे दिन तेज घरमां जिक्षा लेवा जाय ठे तेम करवाथी सदोष आहारनो संजव ठे, परंतु केटलाएक दिन लागट अने केटलाएक दिन वर्जी जवामां आवे तो सदोषनो संजव नथी

प्रश्न ७०. देवलोकमां कीमी, कुंथु, माखी, मच्छरादि क्षुद्र जीवो ठे के नहीं ?

उत्तर देवलोकमां तुच्छ जीवो नथी; कारणके पंचेंड्रिय अने एकेंड्रिय जीवो त्रिजुवनमां ठे, पण विकलेंड्रिय जीवो तो फक्त तिर्छा लोकमांज ठे एकेंड्रिय जीवोमां पण पृथ्वी, पाणी अने वनस्पति वार देवलोक अने सात पृथ्वीमां ठे तेमां वली पृथ्वी तो यावत् सिद्ध-

अनवस्थितकरणं तदुच्यते यत् त-त्क्षणात् पारयति यथाकथंचिद्वाऽनादरतस्तत् करोति ॥ अर्थदीपिकायां मुहूर्त्तादूर्ध्वमपि स्थाने न दोषः॥

प्रश्न ३२ नरकना जीवो नवीन सम्यक्त्व पामे के नहीं?

उत्तर सर्व नरकोमां केटलाएक निर्दोष नरकवासीउ कर्म हलकां पडवाथी नवीन सम्यक्त्वने पण पामे छे

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाश १४ सर्गे॥

सर्वास्वऽपि क्षितिष्वासु, नारका केचनानघा ॥ नवीनमपि सम्यक्त्वं, लभंते कर्मलाघवात्॥ १ ॥

प्रश्न ३३ श्रीजिनपूजा अने प्रतिक्रमण क्यारे करवां जोइए?

उत्तर किंचित् सूर्य उगे त्यारे प्रथम जिनप्रतिमाउनी पूजा करवी अने अ-

रुधो आदित्य अस्त थाय त्यारे पूजानी समाप्ति करी लेवी जोइए. त्यार बाद प्रतिक्रमण करवुं.

॥ तदुक्तं श्रीउपदेशचिंतामणौ ॥

ईपदुद्गते सूर्ये प्रथमं जिनबिंबानि पूजयति अर्धास्ते सा समाप्यते तदनु प्रतिक्रमण ॥

प्रश्न ७४ पूजा वखते पुरुष अने स्त्रीउंए केटलां वस्त्र धारण करवां जोइए ?

उत्तर. पूजाक्षणे पुरुषोए बे वस्त्र अने स्त्रीउंए त्रण वस्त्र धारण करवां एवु श्रीउपदेशचिंतामणिमा कह्यु छे.

॥ तथाहि ॥

नरेण वस्त्रद्वयं नार्या तु वस्त्रत्रयं धार्यं इति ॥

प्रश्न ७५. देवताउं केवी जापा बोले ?

उत्तर श्रीलोकप्रकाशमांथी एवो प्रकाश पडे ठे के देवताउं ज्यारे बोलवानी इच्छा करे ठे त्यारे रमणिक वर्णवाली अने चतुरना चित्तने, चमत्कार करनारी अर्ध मागधी जाषावडे जापण करे ठे श्रीजगवती सूत्रना पांचमा शतकना चोथा उद्देशामा पण एमज कह्युं ठे

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाशे ॥

विवक्षवस्त्वमी अर्ध-मागध्या रम्यवर्णया ॥ जाषते चतुरस्वांत-चमत्कारकिरा गिरा ॥ १ ॥ जगवतीपंचमगतकचतुर्थोद्देशके तथैव प्रोक्तम्

प्रश्न ३६ देवताउने निद्रा होय के नहीं ?

उत्तर यद्यपि देवता उघता नथी तथापि तेमने प्रदेश उदयथी निद्रा होय ठे एम न मानवामां आवे तो

विद्यमान दर्शनावरणीय कर्मनो अनुदय थाय ते शी रीते घटी शके ?

॥ तथाहि लोकप्रकाशे ॥

प्रदेशोदयतस्त्वेषां, स्यात्तथाप्यन्यथा कथम् ॥ दर्शनावरणीयस्य, सतोप्यनुदयो भवेत् ॥ १ ॥

प्रश्न ७७ दोगुंदक देवता कया छे ?

उत्तर भोगमां तत्पर एवा त्रायत्रिंश देवो दोगुंदक तरीके कहेवाय छे.

॥ उक्तं च लोकप्रकाशे ॥

त्रायस्त्रिंशा देवा भोगपरायणा दोगुंदका इति भण्यंते ॥

प्रश्न ७८. देवताइ आहारनां पुद्गलो कोइ देखी शके के नहीं ?

उत्तर. देवताउने आहार करवा लायक पुद्गलोने निर्मल अवधिज्ञानरूपी नेत्रवाला अनुत्तर विमानना देवता देखी शकें

छे, बीजा देवताओ देखी शकता नथी.

॥ तथाच लोकप्रकाशे ॥

आहार्य पुद्गलॉस्तांश्च, विशुध्धा-वधिलोचनाः ॥ अनुत्तरसुरा एव, पश्यति न पुनः परे ॥ १ ॥

प्रश्न ७९ युगलिक तिर्यंचो काल करी कइ गतिमा जाय ?

उत्तर हिंसादि रहित युगलीया तिर्यंचो युगल धर्मनु पालन करी नियमथी देवगतिमां जाय छे एवो लोकप्रकाशमां लेख छे

॥ तथाहि ॥

तादृशा एव तिर्यंचस्तत्र हिंसा-दिवर्जिता ॥ पालयित्वा युग्मधर्मं, गच्छति नियमाद्दिवम् ॥ १ ॥

प्रश्न ८० देवताओ घेला थाय के नहीं ?

उत्तर देवताओ घेला थाय छे, तेमनी घेलछा लोकप्रकाशमां बे प्रकारनी वर्ण-वेली छे तेमां पहेली यक्ष प्रवेशथी अने बीजी मोहनीय कर्मना उदयथी थाय छे ते एवी रीते के ज्यारे कोइ महर्धिक देवता कोपायमान् थाय त्यारे अल्प ऋद्धिवाला देवता उपर खराब पुद्गल नाखी क्षणवारमां तेने परवश बनावे छे, तेथी घेलो थयेलो ते देव मर्यादा विनानी चेष्टा करे छे

॥ तथाहि ॥

तथा ह्युन्मत्तता द्वेधा, देवानामपि वर्णिता ॥ एका यक्षावेशजन्या, मोहनीयोदयात्परा ॥ १ ॥ अल्पर्धिकं तत्र देवं, रुष्टो देवो महर्धिकः ॥ दुष्टपुद्गलनिक्षेपात्कुर्यात्परवशं क्षणात् ॥ २ ॥

ततश्च ग्रहिलात्मासौ यथा तथा विचेष्टते ॥

प्रश्न ८१ तमस्काय केवा स्वरूपे छे ?

उत्तर तमस्काय अप्कायना विकाररूपे छे

॥ तथाहि लोकप्रकाशे ॥

अवगाह्यारुणवर, नामधेयं पयोनिधि ॥ योजनानां सहस्रान् द्वा-चत्वारिंशतमत्र च ॥ जलोपरितलादूर्ध्वमप्कायविकृतिर्महान्॥१॥ तमस्कायो महाघोराधकाररूपउद्गतः

प्रश्न ८२ कृष्णराजी केवा स्वरूपे छे ?

उत्तर कृष्णराजी पृथ्वीपरिणाम स्वरूपे छे

॥ तथाहि लोकप्रकाशे ॥

यत्र रिष्टप्रस्तटेयं, तमस्कायश्च

निष्टितः ॥ तस्येंद्रकविमानस्य, रिष्टाख्यस्य चतुर्दिशम् ॥ १ ॥ जीवपुद्गलसत्पृथ्वीपरिणामस्वरूपिके ॥ द्वे द्वे च कृष्णराज्यौ स्तो, जात्यां जनघनद्युती ॥ २ ॥

प्रश्न ८३ मिथ्यात्वीनी करणी सर्वथा निष्फल छे के केम ?

उत्तर. मिथ्यात्वीनी करणी सर्वथा नकामी नथी ए तो निर्विवाद छे, कारणके तामलि तापसे अज्ञान तपवडे इंद्रत्व उपार्जन कर्युं अने सम्यक्त्व तथा एकावतारत्वने प्राप्त करी जवसमुद्र तर्यो. अलवत ए तो निःसंशय छे के क्रोडोगमे वर्षे अज्ञानी जे कर्मने खपावे छे ते कर्मने त्रण गुप्तिवालो ज्ञानी पुरुष श्वासोच्छ्वास मात्रमां क्षय करवा जाग्यशाली बने छे.

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

एवं तामलिनाबाल-तपसेंद्रत्वम-र्जितम् ॥ सम्यक्तेकावतारत्वे, प्राप्य तीर्णो नवार्णव ॥ १ ॥ ज अन्नाणि कम्मं, खवेइ वहुयाहिं वासकोडिहिं ॥ तं नाणी तिहिगुत्तो, खवेइ उसास-मित्तेण ॥ २ ॥

प्रश्न ७४. विजय, विजयत, जयंत अने अपराजीत ए चार विमानना दे-वता केटला नव करे ? तथा तेमनुं आ-युष्य केटलुं होय ?

उत्तर विजयादि चार विमानमां ग-येला जीव उत्कृष्टा सरयाता नव करे अर्थात् चोवीश नवथी जादा न करे एवो वृद्धवाद छे, अने सवार्थसिद्ध विमानथी तो वेशक जीव एक नवमाज सिद्ध थाय छे विशेष विना एवी छे के

उक्त चार विमानमां बे वार उत्पन्न थ-येला जीवो अनंतर भवमां अवश्य पर-मपद पामे छे पांचमा कर्मग्रंथनी वृ-त्तिमां तो आ प्रकारे देखाय छे के विज-यादि विमानमां बेवार गयेलो जीव पण संसारमां केटलाएक भवभ्रमण करे छे अने नरक तिर्यंच गति योग्य कर्म पण बांधे छे, वास्ते इहां तत्त्व केवलिगम्य छे

योगशास्त्रमा अने तत्त्वार्थमां तो (द्विचरमा) ए पाठने आ प्रकारे स्पष्ट करे छे के विजयादिथी चवेला उत्कृष्टपणे बे वार जन्म लइ मनुष्यपणामां मोक्ष जाय छे ते एवी रीते के विजयादि वि-मानथी चवेलो जीव मनुष्य थाय, वली तेज विमानमां जाय अने त्यांथी चवी मनुष्य थयेलो ते जीव मोक्ष जाय छे. विजयादि चार विमानमां जघन्य ३१ सागरोपमनी अने उत्कृष्ट ३३ सागरोप-

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

एवं तामलिनावाल-तपसेंद्रत्वमर्जितम् ॥ सम्यक्तैकावतारत्वे, प्राप्य तीर्णो नवार्णव ॥ १ ॥ जं अन्नाणि कम्मं, खवेइ बहुयाहि वासकोडिहि ॥ तं नाणी तिहिगुत्तो, खवेइ उसासमित्तेण ॥ २ ॥

प्रश्न ७४ विजय, विजयंत, जयत अने अपराजीत ए चार विमानना देवता केटला नव करे ? तथा तेमनुं आयुष्य केटलुं होय ?

उत्तर विजयादि चार विमानमां गयेला जीव उत्कृष्टा संख्याता नव करे अर्थात् चोवीश नवथी जादा न करे एवो वृद्धवाद छे, अने सवार्थसिद्ध विमानथी तो वेशक जीव एक नवमाज सिद्ध थाय छे विशेष विना एवी छे के

उक्त चार विमानमां वे वार उत्पन्न थः येला जीवो अनंतर जवमां अवश्य परः मपद पामे ठे पांचमा कर्मग्रथनी वृः त्तिमां तो आ प्रकारे देखाय ठे के विजयादि विमानमां वे वार गयेलो जीव पण संसारमां केटलाएक जवज्रमण करे ठे अने नरक तिर्यंच गति योग्य कर्म पण बांधे ठे, वास्ते इहां तत्त्व केवलिगम्य ठे.

योगशास्त्रमां अने तत्त्वार्थमां तो (द्विचरमा) ए पाठने आ प्रकारे स्पष्ट करे ठे के विजयादिथी चवेला उत्कृष्टपणे वे वार जन्म लइ मनुष्यपणामां मोक्ष जाय ठे ते एवी रीते के विजयादि विमानथी चवेलो जीव मनुष्य थाय, वली तेज विमानमां जाय अने त्यांथी चवी मनुष्य थयेलो ते जीव मोक्ष जाय ठे विजयादि चार विमानमां जघन्य ३१ सागरोपमनी अने उत्कृष्ट ३३ सागरोप-

मनी स्थिति छे. त्यारे समवायांग सूत्रमां जघन्य ३२ सागर अने उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी स्थिति बतावेली छे

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

विजयाइ विमाणेह्रिय, संखिजन्नवाउ बोधव्वा ॥ सव्वठाउ नियमा, एगंमि ज्नवंमि सिज्जये जीवो ॥

चतुर्विंशतिज्नवान्नातिक्रामंतीति वृद्धवाद चतुर्ष्वेपु विमानेपु, ह्रिरुत्पन्ना हि जंतव ॥ अनंतरज्नवेऽवश्यं, प्रयाति परम पदं ॥ २ ॥

पचमकर्मग्रथवृत्तौ तु विजयादिविमानेपु ह्रिर्गतोपि संसारे कतिचिद्भवान् ज्रमति नरकतिर्यग्गतियोग्यमपि कर्म बध्नातीति दृश्यते तदत्र तत्त्वं केवलिगम्यम् ॥

योगशास्त्रे तथा तत्त्वार्थे द्विचरमा ॥ इति तदेव स्पष्टयति विजयादिभ्यश्च्युताः परं उत्कर्षेण द्विर्जनित्वा मनुष्येषु सिद्धिमधिगच्छति विजयादिविमानाच्च्युतो मनुष्यः पुनरपि तत्र देवस्ततश्च्युतो मनुष्यः स सिद्ध्यतीति ॥ एकत्रिंशद्वारिधयश्चतुर्षु विजयादिषु ॥ स्थितिजघन्योत्कृष्टा तु, त्रयस्त्रिंशत्पयोधयः ॥ ३ ॥

समवायांगे तु जहन्नेणं बत्तीसं सागर० उ० तेत्तीसं ॥

प्रश्न ७५. छंदना अने निमंत्रणामां शुं फरक छे ?

उत्तर पोते ग्रहण करेला आहारादिकनी गुरुमहाराजादिने आपवा प्रथम प्रार्थना करवी तेने आगममां छंदना

नामे सामाचारी कही छे; अने आहारादि लाव्या पहेलां गुरुमहाराजादिने कहेवु के मने आप आज्ञा फरमावो, हु आपने वास्ते अशनादि लावु आ प्रकारनी विनतिनु नाम निमंत्रणा छे

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाशे ॥

स्वयं पूर्वगृहीतेन, गुर्वादेरशनादिना ॥ याभ्यर्थना छंदनाख्या,सामाचारी स्मृतागमे ॥ १ ॥ आनयामि युष्मदर्थ-मशनाद्या दिशंतु मां ॥ गुर्वादीनां तदादानात्, प्राग्विज्ञप्तिर्निमंत्रणा ॥ २ ॥

प्रश्न ८६ श्रीसिद्धचक्रजी महाराजना यत्रनो उद्धार कया सिद्धांतथी थयेलो छे, अने तेना ध्यानथी केवो लाभ हासल थाय छे ?

उत्तर श्रीयुत् नयविमलजी विरचित

श्री श्रीपाल महाराजना चरित्रमां कह्युं छे के आ श्रीसिद्धचक्रजीनो यंत्र दशमा विद्याप्रवाद पूर्वनो परमार्थ छे, जेना जाणपणावडे मोटी सिद्धिओ एक साथे सिद्ध थइ जाय छे, अने जे माणस शुक्लध्यान तथा तप. संयम योगयुक्त थइ एनुं ध्यान करे छे ते वहोली कर्म निर्जराने पामे छे एटलुंज नहीं बल्के तेना पसायथी अखरु मोक्षसुख मेलववा भाग्यशाली बने छे त्यारे अन्य सिद्धिओ पामे तेमां शुं आश्चर्य छे !

॥ तथाहि ॥

एतद्विद्याप्रवादपूर्वपरमार्थं सिद्धचक्रं कथितं येन ज्ञातेन सहसा महत्सिद्धयः सिद्ध्यंति एतदेव यः शुक्लध्यानतपःसंयमयोगयुक्तः ध्यायति स विपुलां निर्जरां प्राप्नोति यस्य प्रसा-

दादङ्वयोमोक्ष. प्राप्यते अन्यसिद्धि-
प्राप्तौ किमाश्चर्यं ॥

प्रश्न ७७ चोवीश तीर्थंकरना माता-
पिता कइ गतिमां गया छे ?

उत्तर श्री रूषभदेवजीना पिता ना-
गकुमारमां गया छे, अने शेष तीर्थंकरना
पिताउमाथी सात इशान देवलोके,
आठ सनत्कुमार देवलोके अने आठ
माहेंद्र देवलोके गया छे तथा आठ ती-
र्थंकरनी माताउ सिद्ध थइ छे, आठ
सनत्कुमार देवलोके गइ छे अने आठ
माहेंद्र देवलोके गइ छे एवु श्री लोक-
प्रकाशथी जाणवु

॥ तथाहि ॥

उसभपिया नागेसु, सेसाणं सत्त
हुति इसाणे॥ अठ्य सणंकुमारे, मा-
हिंदे अठ बोधव्वा ॥ १ ॥ अठसणं

जणणीउं, तिठयराणं हुंति सिध्धाउं ॥ अठय सणंकुमारे, माहेंदे अठ वोधव्वा ॥ २ ॥

प्रश्न ७७ उपक्रमथी दीर्घस्थितिवाळां कर्मनो सदंतर नाश थाय ठे के जोगवाइ जाय ठे ?

उत्तर उपक्रमथी दीर्घस्थितिवाळां कर्मनो नाश नथी थतो, पण अध्यवसाय विशेषथी ते कर्म शीघ्र जोगवाइ जाय ठे जेम कोइ जस्मक वात रोगवाळो घणा काळे जक्षण योग्य धान्यना मूडाउने थोका वखतमां जक्षण करी जाय ठे, तेमां विद्यमान अनाज कांइ उमी जतुं नथी, किंतु ते अन्न जलदी खवाइ जाय ठे तेज न्याय कर्मना संबधमां पण जाणवो वळी जेम लांबु करेलुं दोरडुं घणा वखते अग्निथी बळी शके ठे, तेज दोरडु जो एकतुं करी वह्निमां नाख्यु

होय तो फोरन् वलीने नस्मीजूत थाय
छे अलबत वृक्ष उपर रहेलां आंबा
प्रमुखनां फलो विलंबथी पाके छे, पण
खुबीनी वात छे के खाडा प्रमुखमां नाखी
पलाल प्रमुखनी युक्तिवडे तो ते जलदी
पाकी जाय छे एवी रीते कर्मनो विपाक
पण जिनागममा बे प्रकारे कथन करेलो
छे एक स्वाजाविक स्थिति मुजब अने
बीजो उपक्रमथी एम बे प्रकारे बांधेलुं
कर्म जोगवाय छे

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

नोपक्रमेण क्रियते, दीर्घस्थितिक-
कर्मण· ॥ नागः किंत्वध्यवसायविशे-
षाज्जुज्यते डुतम् ॥ १ ॥ यथा नूयः
कालजोग्यान्,प्रजूतान्धान्यमूढकान्॥
रुग्णा जस्मकवातेन, न चिरादेव जुं-
जते ॥ २ ॥ न चात्र वर्तमानानां, धा-

गमो ज्ञवेत् ॥ तद्भोगः स्यात्किंतु तूर्णं, न्यायोऽयं कर्मणामपि ॥ ३ ॥ चिरेण दह्यते रज्जुर्वह्निना वितता यथा ॥ सैव संक्षितनिक्षिप्ता, क्षिप्रं जवति जस्मसात् ॥ ४ ॥ चिरेण पच्यते वृक्षस्थितमाम्रादिकं फलम् ॥ गर्तादिपपलालादियुक्त्या तु क्षिप्रमप्यहो ॥ ५ ॥ विपाक· कर्मणोप्येवं, द्विधा प्रोक्तो जिनागमे ॥ यथास्थित्योपक्रमाभ्यां, बर्द्धं कर्म हि जुज्यते ॥ ६ ॥

प्रश्न ७ए श्रीऋषजदेवादि तीर्थंकरोना साधुर्जनी संख्या चोराशी हजार प्रमुखनी कहेवामा आवे ठे, तेटलाज तेमना साधुर्ज ठे के तेथी अधिक पण होइ शके ठे ?

उत्तर वेशक जे आ श्रीऋषजदेवादि तीर्थंकरोना साधुर्जनुं चोराशी हजार

प्रमुख परिमाण आपवामां आव्युं छे ते तो उत्तम सूत्रोनी रचना करवामां समर्थ एवा साधुओने अनुसरीने आपेलुं छे, बीजी रीते तो वली तेमना सामान्य मुनिओ घणाए होय छे

॥ तथाहि लोकप्रकाशे ॥

इदं किल चतुरशीतिसहस्रादिकमृषभादीना तीर्थकृतां श्रमणपरिमाणं प्रधानसूत्रविरचनसमर्थान् श्रमणानधिकृत्य वेदितव्यं इतरथा पुन सामान्यश्रमणाः प्रभूततरा अपि ॥

प्रश्न ए० इंद्र महाराज, भगवान्नी माताने अवस्वापिनी निद्रा आपी भगवानने जन्म कल्याणकनो महोत्सव करवा मेरु पर्वत उपर लइ जाय छे, त्यारे माता पासे प्रभुनुं प्रतिबिंब राखवानुं शु कारण हशे ?

उत्तर. प्रतिबिंब राखवानो उद्यम तो एटला माटे छे के कोइक दुष्ट देवता तेणीनी निद्राने दूर करे त्यारे पुत्रने न जोइने माता आकुल व्याकुल न थाय अथवा तेणीनो परिवार जन्मतांज तेना पुत्रने जोवामां न आववाथी खेद पामे नहीं; ते कारणथी इन्द्र महाराज आवो प्रयोग करे छे.

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

केनचिद्दुष्टदेवेन, हृतनिद्रेद मास्मभूत् ॥ इयं पुत्रमनालोक्य, पिंजलेत्ययमुद्यमः ॥ १ ॥ यद्वा परिजनस्तस्याः, जातमात्रं तदंगजम् ॥ अनालोक्य विषादं मा, यासीदित्ययऽयमुद्यमः ॥ २ ॥

प्रश्न ८१ प्रतिवासुदेवनी माता केटलां स्वप्न देखे ?

उत्तर प्रतिवासुदेवनी माता त्रण स्वप्न देखे, अने महात्मा मुनिराजनी माता पण एक स्वप्न देखे ए प्रसंगोपात् लोकप्रकाशथी निवेदन कर्युं छे

॥ तथाहि ॥

प्रतिकेशवमाता तु, त्रीन्स्वप्नानवलोकयेत् ॥ मातैकं पश्यति स्वप्नं, मुनेरपि महात्मनः ॥ १ ॥

प्रश्न ८९ दुष्कालनो संभव केम जाणी शकाय ?

उत्तर मेघमालामा एम कह्यु छे के एक महिनामा ज्यारे पांच रविवार, पांच मगलवार अने पाच शनिवार आवे त्यारे दुर्भिक्षनो संभव समजवो तथा एक ठेकाणे एवुं जणाववामां आव्यु छे के काबरचित्री वीजली थाय तो वायुनुं चिह्न छे, लाल वीजली तापनु चिह्न

छे अने पीली वीजली वरसादनुं चिह्न छे, त्यारे धोली वीजली डुर्भिक्ष करे छे.

॥ तथाहि ॥

पंचार्काः पंच जौमाश्च, पंचसूर्यसुतास्तथा॥एकमासे यदायातास्तदा डुर्भिक्षसंजव ॥ १ ॥ कपिला वीजली वायुनु, चिह्न तुमे दील धारो ॥ लाल ताप पीली घन, धोली करे डुकालो ॥ २ ॥

प्रश्न ए३ तीर्थंकरनी जापा सर्वेथी केवी रीते समजी शकाय छे अने ते केवी होय छे ?

उत्तर जेम जलधरनु जल आश्रयविशेषथी नानाप्रकारना रसपणे परिणमे छे, तेमज जगवान्नी वाणी पण श्रवण करनारनी जापापणे परिणाम पामे छे. अलबत प्रजुनी मूल स्वाजाविक जापा

तो अर्ध मागधी होय छे तेमां मागधी अने प्राकृत ए बे भाषाना लक्षणनो समावेश थाय छे

॥ तथोक्तं लोकप्रकाशे ॥

यथा जलधरस्यान्न, आश्रयाणां विशेषत॰ ॥ नानारस भवत्येवं, वाणी भगवतामपि ॥ १ ॥ स्यात्प्रभोर्मूलभाषा च, स्वभावादर्धमागधी ॥ स्यातां द्वे लक्षणे ह्यस्यां, मागध्या॰ प्राकृतस्य च ॥ २ ॥

प्रश्न ८४ श्री तीर्थंकर भगवान्नुं समवसरण जमीनथी केटले उचे होय अने तेनु पीठ कोण बनावे छे ?

उत्तर समवसरणनु पीठ व्यंतर बनावे छे, अने ते जमीनथी सवा कोश उचे होय छे[१]

१ समवसरण प्रकरणमा अढी कोश उचु कहेलुं छे ' सड्ढदुकोसेहिं धरणीयला '

॥ यदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

रचयंति तत· पीठं, व्यंतरास्तत्र भूतले ॥ भूमेः सपादक्रोशोच्चं, स्वर्णरत्नमणीमयं ॥ १ ॥

प्रश्न ए५ श्री समवसरणना चार पासे ध्वजाउं होय ठे तेना नाम कयां ?

उत्तर पूर्व दिशामां धर्मध्वज, दक्षिण दिशामां मीनध्वज, पश्चिम दिशामां गजध्वज अने उत्तर दिशामां मोटो सिंहध्वज होय ठे

॥ तथोक्तं लोकप्रकाशे ॥

तत्र धर्मध्वजः प्राच्यां, याम्यां मीनध्वजो भवेत् ॥ गजध्वजः पश्चिमायां, उदक् सिंहध्वजो महान् ॥ १ ॥

प्रश्न ए६ समवसरणनुं अने तीर्थंकरोनां शरीरनुं माप कया अंगुलथी थाय ठे ?

उत्तर समवसरणना संबंधमां यथा-

स्थाने जे धनुष्य अने कोश प्रमुखनु माप कहेलुं छे ते जे तीर्थंकरनुं समवसरण होय ते तीर्थंकरना आत्मागुलथी जाणवु, अने जिनेश्वरोनुं देहमान तो उत्सेध अगुलथी समजवुं

॥ तथा च लोकप्रकाशे ॥

यदत्र चापक्रोशादि, मानमुक्तं यथास्पदम्॥ भवेत्तदत्राधिकृत-जिनात्मांगुलमानत ॥ १ ॥

जिनागमानं तु उत्सेधागुलेन ॥

प्रश्न ८७ समवसरणमां केटली पर्षदा उभी रहे छे अने केटली बेसे छे ?

उत्तर समवसरण प्रकरण अने आवश्यक वृत्तिना अनुसारे चार प्रकारनी देवीउं अने साध्वीउं ए पांच पर्षदा उभी थकी प्रभुनी देशना साजले छे, तथा चार प्रकारना देवता, नर, नारी अने

साधु ए सात पर्षदा वेसीने श्रवण करे छे. वली चूर्णिमां तो एम कह्युं छे के साधुउ उकडु आसने श्रवण करे छे, साध्वीउ अने वैमानिक देवीउ उन्नी रहे छे, वाकीनी नव पर्षदा वेसीनेज ज्ञानजानुनी देशना सानले छे इहा तत्त्व शुं छे ते तो तत्त्वज्ञानी जाणे

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाशे ॥

देव्यश्चतुर्धा साध्व्यश्च, शृण्वंत्यूर्ध्वं दमाः क्षणम् ॥ देवा सर्वे नरा नार्यो, निविष्टाः श्रमणास्तथा ॥ १ ॥ वृत्तावावश्यकस्येदं, चूर्णौ चोत्कटिकासनाः ॥ शृण्वंति साधवोथोर्ध्वाः, साध्व्यो वैमानिकांगना २ उपविश्यैव शृण्वंति, देशनामाप्तजास्वतां ॥ पर्षदाऽन्या नवेत्युक्तं, वेत्ति तत्त्वं तु तत्त्ववित् ॥ ३ ॥

प्रश्न ९८ देवछंदामां प्रभु एकला रहे छे के कोइ साथे होय छे ?

उत्तर नोकरोथी सेवाता होय तेम छंदामां छंग कोड देवता साथे देवछंदामां आवी भगवान् सुखे रहे छे.

॥ प्रोक्तं च श्रीलोकप्रकाशे ॥

देवःछंदकमागत्य, सुखं तिष्ठंति नाकिभिः ॥ अप्यऽल्पैः कोटिसंख्याकैः, सेविता भृतकैरिव ॥१॥

प्रश्न ९९ एक वार देशना आप्या पछी तेज दिवसे फरीथी भगवान् धर्मदेशना आपे छे के नही ? जो आपे छे तो केवी रीते ?

उत्तर पाछले पहोरे फरीथी सर्वज्ञ परमात्मा सिंहासन उपर स्थित थइने व्याख्यान करे छे, त्यारे पण सघली व्यवस्था सवारना जेवीज जाणवी.

॥ उक्तं च श्रीलोकप्रकाशे ॥
पुनः पाश्चात्यपौरुष्यां, स्थित्वा सिंहासने जिनाः ॥ कुर्वते देशनां सर्वा, व्यवस्थाऽत्रापि पूर्ववत् ॥१॥

प्रश्न१०० सत्पुरुषोनुं आचरण केवुं होय छे?

उत्तर सज्जन माणस पारका दुषणने बोलतो नथी, परना थोडा पण गुणोने निरंतर कहे छे, बीजानी संपत्तिमां पोते संतोष धारण करे छे, पण इर्षा करतो नथी, परपीडामां पोते अफसोस धारण करे छे, आत्मप्रशंसा करतो नथी, नीतिमार्गने त्यागतो नथी, उचिताचरणनुं उल्लंघन करतो नथी, अने अप्रिय कहेवाथी पण क्रोध करतो नथी सत्पुरुषोनुं आ प्रकारनुं सदाचरण होय छे

॥ तदुक्तं सिंदूरप्रकरे श्रीसोमप्रभाचार्यैः ॥

न ब्रूते परदूषणं परगुणं वक्त्यल्प-

मप्यन्वहं, संतोषं वहते परर्द्धिषु परा-
बाधासु धत्ते शुचम् ॥ स्वश्लाघां न
करोति नोज्झति नय नौचित्यमुल्लं-
घयत्युक्तोऽप्यऽप्रियमऽक्षमां न रच-
यत्येतच्चरित्रं सतां ॥ १ ॥

प्रश्न २०१ वासुदेवने उपाडवा योग्य कोटिशिला केवी अने क्यां आगल छे ?

उत्तर मेघना जेवी श्याम अने स्निग्ध वर्णवाली, देवताना समुदायथी अधिष्ठित, केसर, चंदन अने पुष्पप्रकरथी पूजित, सघली बाजुए आभूषणोथी भूषित एवी ते कोटिशिला नामे शिला दक्षिण भरतार्धमां देवीना जेवी शोभे छे अथवा मतांतरथी एक योजन लांबी, चोडी अने उंची एवी ते अविनाशी शिला सिंधुदेशमां दशार्ण पर्वत समीपे छे

॥ तदुक्तं श्रीलोकप्रकाशे ॥

घनश्यामस्निग्धवर्णाधिष्ठिता दे-
वतागणैः॥ शिला कोटिशिला याम्य-
भरतार्द्धे भवेदिह ॥ १ ॥ चंदनैः
कुंकुमोपेतैरर्चिता कुसुमोत्करैः ॥ सा
शिला भाति देवीव, भूषणैर्भूपिता-
भितः ॥ २ ॥ सिंधुदेशे दशार्णाद्रिस-
मीपे वा मतांतरे॥ योजनायामविष्क-
भोच्छ्या सास्ति निरत्यया ॥ ३ ॥

तथा सेनप्रश्नमां वासुदेवने उपाडवा लायक अशाश्वती कोटिशिला मगधदेशमां दशार्ण पर्वतना निकटमां कहेली छे.

॥ तथाहि ॥

वासुदेवोत्पाट्या तु मगधदेशे द-
शार्णपर्वतसमीपेऽशाश्वतीति ॥

तथा तारगाजी उपर जे कोटिशिला छे ते तो बीजी जाणवी. त्यां तो फक्त

क्रोड मुनिराज मोक्ष गयेला छे तेनुं व्यान नीचेना काव्यथी जाणवुं.

॥ तदुक्तं हीरसौभाग्यमहाकाव्ये ॥

यत्तुगतारंगगिरौ गिरीश, शैलोपमे कोटिशिला समऽस्ति ॥ स्वयंवरोर्वीव शिवाबुजाक्षी, पाणिग्रहे कोटिमुनीश्वराणा ॥ १ ॥

प्रश्न १०२ भरत चक्रवर्तीनी भगिनी ब्राह्मी परणेली हती के बालकुमारी हती ?

उत्तर भरतचक्रीनी बहेन ब्राह्मीने श्रीयुगादीश प्रभुए बाहुवली भूपालने आपी हती त्यारथी जनसमूहमां पण आ रिवाज दाखल थयो छे तेथी ते परणेली हती एवु लोकप्रकाशथी साबीत थाय छे

॥ तथाहि ॥

भरतस्य च सोदर्यां, ददौ ब्राह्मीं

जगत्प्रभुः नृपाय बाहुबलिने, तदादि जनताप्यथ ॥ १ ॥

प्रश्न १०३ रत्नप्रभा नरकना प्रथम पाथडे देहमान केटलु होय ?

उत्तर श्रीभगवती सूत्रना २४ मा शतकना १ए मा उद्देशानी टीकामां रत्नप्रभाना प्रथम पाथडे देहनुं उच्चपणुं त्रण हाथनुं कह्युं छे त्यारबाद प्रतिप्रतरे साडी छप्पन आंगलनी वृद्धि जाणवी

॥ तथाहि ॥

रयणाय पढमपयरे, हत्थतियं देहउसयं भणियं ॥ छप्पणंगुलसड्ढा, पयरे पयरे य वुड्ढीउ ॥ १ ॥

प्रश्न १०४ जैनसूत्रमां साधुउने शुभ मुहूर्त्तादि ग्रहण करवानो अधिकार छे के नही ?

उत्तर श्रीसूर्यप्रज्ञप्ति सूत्रमां जिनराजनी एवी आज्ञा छे के क्षेत्रादिक पण

कर्म—उदयादिनां कारण छे, ते माटे सर्वत्र यत्नथी वर्तवु

॥ तथाहि ॥

एसा जिणाणआणा, खित्ताइयाय कम्मणो जणिया उदयाइ कारणं जं, तम्हा सव्वत्थ जइयव्वं॥ १ ॥

आ सूत्रगाथानी व्याख्यामां टीकाकार लखे छे के सारा क्षेत्रमां शुभ दिशा तरफ सुतिथि नक्षत्र मुहूर्त्तादिमां दीक्षा अने व्रतारोपणादि करवु, पण अन्यथा नहीं अलबत क्षेत्रादिक पण कर्मना उदयादिमां कारणरूप भगवाने कहेला छे, ते कारणथी अशुभ द्रव्य क्षेत्रादि सामग्री पामीने कदापि अशुभ वेदनीयकर्म विपाकअवस्था पामी उदयमा आवे तो ग्रहण करेला व्रतमा भगादि दोषनो प्रसंग थाय, तेथी मुहूर्त्तादिकनु ग्रहण साबीत थाय छे

॥ टीका यथा ॥

शुभे क्षेत्रे शुभां दिशमभिमुखीकृत्य शुभतिथिनक्षत्रमुहूर्त्तादौ प्रव्राजनव्रतारोपणादिकर्तव्यं नान्यथा। अपि च क्षेत्रादयोऽपि कर्मणामुदयादिकारणं भगवद्भिरुक्ताः ततोऽशुभद्रव्यक्षेत्रादिसामग्रीं प्राप्य कदाचिदशुभवेद्यानि कर्माणि विपाकं गत्वोदयमासादयेयुः तदुदये च गृहीतव्रतभंगादिदोषप्रसंगः ॥

प्रश्न १०५ चतुर्थभक्त प्रत्याख्याननो केवो अर्थ थाय छे ?

उत्तर जे तपमां प्रथम दिने एक वखतनुं, उपवास दिने वे वखतनुं अने पारणाने दिवसे एक वखतनु भोजन त्याग करवामा आवे तेने चतुर्थभक्त कहीए एवो ए शब्दनो व्युत्पत्ति मात्र अर्थ थाय

छे, पण चतुर्थभक्तादि शब्दोनी प्रवृत्ति तो एकादि उपवासमां छे

॥ तदुक्तं स्थानांगटीकायाम् ॥

एक पूर्वदिने द्वे उपवासदिने चतुर्थ पारणकदिने भक्त भोजन परिहरतो यत्र तपसि तच्चतुर्थभक्त एवमन्यत्रापि शब्दव्युत्पत्तिमात्रमेतत्प्रवृत्तिस्तु चतुर्थभक्तादिशब्दानामेकाद्युपवासादिष्विति ॥

प्रश्न १०६ पोषधउपवासनो शो अर्थ छे ?

उत्तर पोषध एटले अष्टम्यादि पर्वना दिवसो, ते पवित्र दिवसोमां उपवास करवो, तेनु नाम पोषधोपवास कहीए एवो श्रीस्थानांग सूत्रनी टीकामां अर्थ करेलो छे

॥ तद्यथा ॥

पोषधः पर्वदिनमऽष्टम्यादि तत्रो-

पवसनमऽजक्तार्थः पोषधोपवासः ॥

प्रश्न १०७. साधु साध्वीने केटली तरेहना वस्त्र कल्पे ?

उत्तर साधु साध्वीने कपासनां, ऊननां, अलसीनां, सणनां अने वृक्षनी ठालनां ए पांच प्रकारनां वस्त्र कल्पे. एवु श्रीस्थानांग सूत्रमां यद्यपि कह्युं छे, तथापि टीकाकार महाराज लखे छे के उत्सर्गथी कपासनां अने ऊननाज वस्त्र ग्रहण करवां

॥ सूत्रपाठो यथा ॥

कप्पइ निग्गथाणवा निग्गंथीणवा पंचवत्थाइं धारित्तएवा परिहरित्तएवा तंजहा जंगिए भंगिए साणए पोत्तिए तरीडपट्टए णामं पचमए ॥

॥ टीका यथा ॥

कप्पइ इत्यादिकंव्यं नवरं कल्पन्ते युज्यन्ते धारयितुं परिग्रहे परिहर्तु-

मासेवितुमिति अथवा धारणया उ-
वओगो परिहरणाहोइ परिभोगोत्ति॥
जंगियत्ति ॥ जगमास्त्रसास्तदऽवयव-
निष्पन्नं जांगमिक कबलादि ॥ भंग-
एत्ति ॥ भंगा अतसी तन्मय भा-
गिकं ॥ साणएत्ति ॥ सनसूत्रमयं सा-
नक ॥ पोत्तियत्ति ॥ पोतमेव पौतिकं
कार्प्पासिक ॥ तिरिडवट्टेत्ति ॥ वृक्ष-
त्वग्मयमिति ॥ इह पंचविधे वस्त्रे
प्ररूपितेऽप्युत्सर्गतः कार्पासिकौर्णिके
एव ग्राह्ये ॥

प्रश्न १७७ पृथिवीआदि पांच स्याव-
रकायनां नाम कया ?

उत्तर १इंद्रस्थावरकाय २ ब्रह्मस्थाव-
रकाय ३ शिल्पस्थावरकाय ४ संमति-
स्थावरकाय ५ प्रजापत्यस्थावरकाय ए
पाच क्रमथी पृथिव्यादिना नाम जाणवां

॥ तदुक्तं श्रीस्थानांगसूत्रे ॥

पंचथावरकाया पणत्ता तंजहा इं-देथावरकाये वम्भेथावरकाये सिप्पेथा-वरकाये समईथावरकाये पयावए था-वरकाये ॥

॥ टीका यथा ॥

पचेत्यादि ॥ स्थावरनामकर्मो-दयात् स्थावराः पृथ्व्यादयस्तेषां का-या राशयः स्थावरो वा कायः शरीरं येषां ते स्थावरकायाः इंद्रसबंधित्वा-दिंद्रः–स्थावरकायः पृथिवीकाय एवं ब्रह्म शिल्प संमति प्राजापत्या अपि अप्कायादित्वेन वाच्या इति ॥

प्रश्न १०ए आयुष्य केटला प्रकारे तुटे छे ?

उत्तर. १ राग, स्नेह अने भयात्मक अध्यवसायथी

२ दंडादि शस्त्रना निमित्तथी
३ अधिक जोजनथी
४ नेत्रादिकमां वेदना उत्पन्न थवाथी
५ गर्त्तादिकमां पमवाना पराघातथी
६ सर्पादिकना केरी स्पर्शथी
७ श्वासोश्वासना रोकाणथी.

ए सात प्रकारे सोपक्रम आयुष्य तुटे बे.

॥ तदुक्तं श्रीस्थानांगसूत्रे ॥

सत्तविहे आउनेदे प० तंजहा । अजवसाणनिमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए । फासे आणापाणू, सत्तविधं निजाए आउ ॥ १ ॥

प्रश्न ११० उक्त सात प्रकारे जींदगी कपाइ जवाथी तो कृतनाश अने अकृत आगमरूप दोष प्राप्त थशे अने मोक्ष उपरथी विश्वास पण उठी जशे, कारणके

सो वर्षनुं बांधेलुं जीवन अपांतराले गमन करी जाय ए कृतनाश अने जे कर्मथी ते तुटे ठे ते करेलु न होवाथी अकृत आगमरूप दोष लागु पडे ठे तेनु केम ?

उत्तर जेम विस्तारेलु नीनुं वस्त्र जलदी सुकाय ठे अने घमी वालेलु कपमुं विलंबथी सुकाय ठे, तेवी रीते केटलाएक कर्मनो पण एवो कायदो ठे के उपक्रम लागवाथी ते सर्व कर्म प्रदेशथी अवश्य शीघ्रपणे नोगवाइ जाय ठे, माटे कृतनाश, अकृत आगमनो दोष नथी आ बाबतनो विशेष खुलासो उपर ७६ मा प्रश्नोत्तरमां आवी गयो ठे त्यांथी जोइ लेवो.

प्रश्न १११ ढुढक तेरापथीओ श्रुतधर्म सबधी रुधिरनी तथा मूत्रपुरीषादिनी अस्वाध्याय मानता नथी एटलुंज नहीं, बल्के श्रुतधर्मने शुमडुं फुटवा बरोबर द-

शौचे छे रात्रिमां जंगल मात्रादि कारण वास्ते जल राखवानी पण ना पाडे छे. एटलेथी न अटकता दिल्ली अने पजाबना ढुंढीआओ तो एक कवित पण कहे छे ते आ प्रमाणे -

एककरी लोटाण, पंचककरी मंजारि ॥ घासफुस नदीनाल, गांडघसनं समुड ॥ १ ॥

आवी रीते कही आलोक परलोकविरुद्ध आचरण करे छे वास्ते जैनसूत्रोमां कोइ स्थले आ बाबतनो अस्वाध्याय बतावेलो छे के नहीं ?

उत्तर श्रीस्थानांग सूत्रमा दश प्रकारे औदारिक शरीर सबधी एटले मनुष्य तिर्यंच सबधी अस्वाध्याय कहेलो छे. ते आ प्रमाणे –

१ हाड ३ लोही
२ मांस ४ मलमूत्रसामीप्य

५ श्मशानसामीप्य.	ए राजा सेनापति मल्ल युद्धादि संग्राम.
६ चंद्रग्रहण.	१० उपाश्रयमां जीव रहित मनुष्यादिनुं औदारिक शरीर.
७ सूर्यग्रहण.	
८ राजा अमात्य सेनापत्यादि मरण	

ए दश कारणे साधुप्रमुखे सूत्रादिकनु पठन पाठन करवु नहीं.

॥ तत्सूत्रपाठो यथा ॥

दसविहे उंरालिए असज्जाइए पन्नत्ते तंजहा अठि मसे सोणिए असुइसामतं मसाणसामंतं चदोवराए सूरोवराए पडणे रायवुग्गहे उवसयस्स अंतो उंरालिए सरीरे॥

॥ टीका यथा ॥

दसविहेउंरालिए इत्यादि ॥ औदारिकस्य मनुष्यतिर्यक्शरीरस्येदमौदारिकमऽस्वाध्यायिकं तत्राऽस्थि-

मांसशोणितानि प्रतीतानि तत्र च पं-
चेंद्रियतिरश्चामऽस्वाध्यायिकं द्रव्य-
तोऽस्थिमासशोणितानि ग्रंथांतरे च-
र्माप्यऽधीयते यदाह सोणिय मंस
चम्म अठीविय होंति चत्तारित्ति ॥
क्षेत्रत षष्टिहस्ताभ्यन्तरे कालतः सं-
भवकालाद्यावत्तृतीया पोरुषी मार्जा-
रादिनिर्मूषकादिव्यापादने अहोरात्रं
चेति भावतः सूत्रं नन्द्यादिकं नाऽ-
ध्येतव्यमिति मनुष्यसंबंध्यऽप्येवमेव
नवरं क्षेत्रतो हस्तशतमध्ये कालतोऽ-
होरात्रं यावत् आर्त्तव दिनत्रयं स्त्री-
जन्मनि दिनाऽष्टक पुरुषजन्मनि दि-
नसप्तकमऽस्थीनि तु जीवविमोक्षदि-
नादारभ्य हस्तशताऽभ्यन्तरस्थि-
तानि द्वादशवर्षाणि यावदऽस्वाध्या-

यिकं ज्ञवति चिताऽग्निना दग्धान्युदकवाहेन वा व्यूढान्यऽस्वाध्यायिकं न ज्ञवति ज्ञूमिनिखातान्यऽस्वाध्यायिकमिति तथा अशुचीन्यऽमेध्यानि मूत्रपुरीषादीनि तेषां सामन्तं समीपं अशुचीसामन्तमऽस्वाध्यायिक ज्ञवति उक्तं च कालग्रहणमाश्रित्य सोणियमुत्तपुरीसे, घाणालोयं परिहरेजत्ति ॥ श्मशानसामन्तं शवस्थानसमीप चन्द्रस्य चन्द्रविमानस्योपरागो राहुविमानतेजसोपरंजनं चन्द्रोपरागो ग्रहणमित्यर्थः एवं सूरोपरागोऽपि इह चेदङ्कालमानं यदि चन्द्रः सूर्यो वा ग्रहणे सति स ग्रहोऽन्यथा वा निमज्जति तदा ग्रहणकाल तज्ञात्रिशेष तदऽहोरात्रशेष च तत. पर-

मऽहोरात्रं च वर्जयन्ति आह च चं-
दिमसूरुवरागे निग्घाए गुजिए अ-
होरत्तंत्ति ॥ आचरितं तु यदि तत्रैव
रात्रौ दिने वा मुक्तस्तदा चन्द्रग्रहणे
तस्या एव रात्रेः शेष परिहरन्ति सू-
र्यग्रहणे तु तद्दीनशेषं परिहृत्याऽन-
न्तरं रात्रिमऽपि परिहरन्तीति आह
च आइन्नदिणमुक्को सोच्चियदिवसो-
वराईवत्ति ॥ चन्द्रसूर्योपरागयोश्चौ-
दारिकत्व तद्विमान पृथिवीकायिका-
पेक्षयाऽवसेयमातरिक्षकत्वं तु सदऽ-
पि न विवक्षितमातरिक्षकत्वेनोक्तेभ्य
आकस्मिकेभ्य उल्कादिभ्यश्चन्द्रादि-
विमानानां शाश्वतत्वेन विलक्षणत्वा-
दिति ॥ पडणेत्ति ॥ पतनं मरणं रा-
जाऽमात्यसेनापतिग्रामभोगिकादीनां

तत्र यदा दंडिकः कालगतो जवति राजा वाऽन्यो यावन्न जवति तदा सजये निर्जये वा स्वाध्यायं वर्जयन्ति निर्जयश्रवणानन्तरमऽप्यऽहोरात्रं वर्जयन्तीति ग्राममहत्तरेऽधिकारनियुक्ते वहुस्वजने वा शय्यातरे वा पुरुषान्तरे वा सप्तगृहाऽज्यन्तरे मृते अहोरात्रं स्वाध्यायं वर्जयन्तीति शनैर्वा पठन्ति निर्डःखा एव इति गर्हां लोको माकार्षीदिति आह च मयहरए गए वहुपक्खि एव सत्तघर अंतर मयंमि ॥ निहुक्कत्तियगरहा, न पढन्ति सणीयगं वा वित्ति ॥ १ ॥ तथा रायवुग्गहेत्ति॥ राज्ञां संग्रामउपलक्षणत्वात्सेनापतिग्रामजोगिकमहत्तरपुरुषस्त्रीमल्लयुद्धान्यऽस्वाध्यायिकं एव

पांशुपिष्टादिन्नएफनान्यऽपि यत एते प्रायो व्यन्तरबहुलास्तेषु प्रमत्तं देवताबलयेन्निर्डःखा एत इत्युड्डाहो वाऽप्रीतिकं वा नवेदित्यऽतो यद्विग्रहादिक यच्चिरकाल यस्मिन् क्षेत्रे नवति तत्र विग्रहादिके तावत्काल तत्र क्षेत्रे स्वाध्यायं परिहरन्तीति उक्त च सेणाहिवन्नोइय, मयहरेयपुसिहिमल्लयुहेय ॥ लोढाइनंड णेवा, गुज्जागडड्डाहअवियत्तति ॥ १ ॥ तथोपाश्रयस्य वस्तेरन्तर्मध्ये वर्त्तमानमौदारिकं मनुष्यादिसत्क शरीरक यद्युज्झिन्न नवति तदा हस्तशताभ्यन्तरेऽस्वाध्यायिकं नवति अथानुज्झिन्न तथापि कुत्सितत्वादाचरित्वाच्च हस्तशतं वर्ज्यते परिष्टापिते तु तत्र तत्स्थानं

ा‍र्द्धं भवतीति पञ्चेन्द्रियशरीरमऽस्वा-
ायिकमित्यऽनन्तरमुक्तमिति ॥

प्रश्न ११२ पूर्वोक्त सूत्र तथा टीकाना
ीवा जेवा पाठ विद्यमान छतां ढुंढक भाइ
नि प्रकाश केम नहीं पमतो होय ? अने
र्ले निंदनीय काम शामाटे करता हशे ?

उत्तर. जेम आंधला मनुष्यने उदय
ामेला चंद्र, सूर्य अने जाज्वल्यमान
नेर्मल कोमो दीवा पण प्रकाशरूप उप-
ार करी शकता नथी, तेवी रीते मतांध
मनुष्योने शास्त्रनो उपदेश पण लागु
पमतो नथी शास्त्र सद्भावनु प्रतिपादन
तो प्रशांत चित्तवाला मध्यस्थने हितकर
थाय छे जेम नवीन चढता तावने एक-
दम शांत करवा आपेलु औषध फायदा-
कारक निवमतुं नथी तेम मूढमतिने
शास्त्र पण दोषने वास्तेज थाय छे.

॥ तदुक्तं लोकतत्त्वनिर्णयग्रंथे श्रीहरिभद्रसूरिभिः ॥

उदितौ चन्द्रादित्यौ, प्रज्वलिता-
दीपकोटिरमलापि ॥ नोपकरोति य-
थान्धे, तथोपदेशस्तमोन्धानाम् ॥१॥
अप्रशान्तमतौ शास्त्र-सद्भावप्रतिपा-
दनम् ॥ दोषायाभिनवोदीर्णे, शम-
नीयमिव ज्वरे ॥ २ ॥

आ महात्मानुं कथन अक्षरश सत्य थयु छे, कारणके ढुंढकोना हितार्थे महात्मा श्रीविजयानंद सूरीश्वरजीए सम्यक्त्व शल्योद्धार ग्रथ बनावीने, तेमना निंदनीय कार्यनो अटकाव करवा शास्त्रोपदेश करेलो ते केटलाएक मूढमतिउने अहितकर थयो, पण गुणग्राही सज्जनोने तो गुणकरज थयो छे एटलुज नहीं वल्के अनेक भव्य जीवो ते पंथमांथी नी-

ती शुद्ध सनातन धर्ममां दाखल थया अने केटलाएक निंदनीय फंदमां फ-
ा वची गया छे जो सर्व ढुंढक चाइ-
ा मध्यस्थताथी ते लेखनो शास्त्रद्वारा
र्णय करी सद्वर्तन करे तो तेओ कोइ
गाए निंदापात्र थाय नहीं. तेमना निं-
पात्र कार्यने लइने अनेक तटस्थ वि-
ान सज्जनोने, जेवा के रा रा॰ वासुदे-
गोविंद आपटे बी ए तथा ढुंढकवि-
ादजीतन किताबकर्त्ता चुनीलालजी
था रासमालाकर्त्ता फारबससाहिब त-
ा गिरधरकवि तथा संतसेवाना हिमा-
ती बाबा नानक जेवाने पोतानी पवित्र
जिह्वानो अने कलम कसवानो उपयोग
रवानी फरज पडी हती तेओ ढुंढीया-
ी बाबतमां शुं कहे छे ते इहां लखवु
अमे दुरस्त धारता नथी जाणवानी इ-

च्छावाळाए तारीख १५ जुलाइ तथा तारीख २६ मी ओगष्ट सने १९०६ नु जैनपत्र जोइ लेवु ॥

प्रश्न ११३ तीर्थंकरादि महापुरुषना हृदयमां श्रीवत्सनुं लक्षण होय छे ते शानु हशे ?

उत्तर दक्षिणावर्त्त रोमथी बनेला अने अधिक शोभावाळा महापुरुषना चिह्नरूप एवा श्रीवत्सथी आप्तपुरुषनुं हृदय युक्त होय छे एवु श्रीलोकप्रकाशमां कह्युं छे

॥ तद्यथा ॥

लोमभिर्दक्षिणावर्त्तै रचितेनाधिकश्रिया ॥ महापुरुषचिह्नेन, श्रीवत्सेनाप्तवक्षस ॥ १ ॥

श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्रमां पण श्रीभरतचक्रवर्तीना अधिकारे तेमज कह्यु छे

॥ तथाहि ॥

पसत्थलोमविरइय सिरिवत्थलंछण विउलवच्छदेसे ॥

प्रश्न ११४. तीर्थंकर भगवान्ना जन्मक्षणे जेम त्रिजुवनमां उद्योत थाय छे तेम निर्वाणसमये अंधकार थाय छे के नहीं ?

उत्तर. सर्व कर्मना नाशसमये शैलेशी अवस्थामां आरूढ थइ पारंगत भगवान् ज्यारे अविनाशी स्थानने पामीने निराबाधपणे सुखे रहे छे, त्यारे क्षणवार अंधकार पण थाय छे.

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

ततोऽधिरुह्य शैलेशीं, सर्वकर्मक्षयक्षणे ॥ संप्राप्य शाश्वतं स्थानं, निर्बाधासुखमासते ॥ १ ॥ क्षणं तदांधकारस्यादित्यादि ॥

प्रश्न ११५ जेम बीजा चक्रवर्तीठने ठ खम्न साधतां मागधादि तीर्थे अठम करवो पमे ठे, तेम तीर्थंकर चक्रवर्ती थाय त्यारे तेमने करवो पडे के नहीं ?

उत्तर जे चक्रवर्ती जिनेश्वर होय ठे तेमने अठम तप करवानुं प्रयोजन नथी. तेमना तो याद करवा मात्रमां आसन कंपवाथी मागधादि देवता हाजर थाय ठे

॥ उक्तं च लोकप्रकाशे ॥

यस्तु चक्री जिनस्तस्य, नाष्टमेन प्रयोजनं ॥ स्मृतिमात्राद्ऽसौ कप्रासनस्तमुपतिष्ठते ॥ १ ॥

प्रश्न ११६ विजय मूहूर्त्तनो टाइम केटलो ?

उत्तर मध्याह्नवेला पहेलांनी अने पाठलनी एक एक घमीने अर्थात् बे घमी-नो विजययोग कहेवामां आवे ठे ते स-

वें कार्यने फतेह्मंद उतारनार तरीके गणाय ठे.

॥ तथोक्तं लोकप्रकाशे ॥

द्वौ यामौ घटिकाहीनौ, द्वौ यामौ घटिकाऽधिकौ ॥ विजयो नाम योगोऽय, सर्वकार्यप्रसाधकः ॥ १ ॥

प्रश्न ११७ देवतादिकना उपद्रवने नाश करनार दंमरत्न विद्यमान ठते सगर चक्रवर्तीना पुत्रोने ज्वलनप्रज नागेंद्रथी उपद्रव केम थयो ?

उत्तर. उपद्रवनो नाश करनार दंमरत्न विद्यमान ठतां सगरचक्रीना साठ हजार पुत्रोने नागेंद्रथी उपद्रव थयो, अने ते सर्वे मरणने शरण थया तेनुं कारण एवुं ठे के ते अनुपक्रम उपद्रव हतो. उपद्रव वे प्रकारना थाय ठे एक सोपक्रम अने बीजो अनुपक्रम दंडरत्नथी सोपक्रम उपद्रवनो नाश थाय ठे, पण

प्रश्न ११५ जेम बीजा चक्रवर्तीओने ठ खंम साधतां मागधादि तीर्थे अठम करवो पमे ठे, तेम तीर्थंकर चक्रवर्ती थाय त्यारे तेमने करवो पडे के नहीं ?

उत्तर जे चक्रवर्ती जिनेश्वर होय ठे तेमने अठम तप करवानु प्रयोजन नथी. तेमना तो याद करवा मात्रमां आसन कंपवाथी मागधादि देवता हाजर थाय ठे.

॥ उक्तं च लोकप्रकाशे ॥

यस्तु चक्री जिनस्तस्य, नाष्टमेन प्रयोजन ॥ स्मृतिमात्रादऽसौ कंप्रासनस्तमुपतिष्ठते ॥ १ ॥

प्रश्न ११६ विजय मूहूर्त्तनो टाइम केटलो ?

उत्तर मध्याह्नवेला पहेलांनी अने पाठलनी एक एक घमीने अर्थात् वे घमीनो विजययोग कहेवामां आवे ठे. ते स-

स्वभाव होवाथी चर्मरत्न कहेवामां आवे छे, अने दंडरत्न पण पृथ्वीमय छे, छतां काष्टदंडनी सादृश्यताथी दंडरत्न कहेवाय छे. एवी रीते बुद्धिशालीओए साते रत्नोमां पृथ्वीत्व जाणवुं.

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

पार्थिवत्वेऽपि तत्साम्या-च्चर्मेति व्यपदिश्यते॥ दंडोऽप्येवं पार्थिवस्तत्साम्यात्तद्व्यपदेशभाक् ॥ भाव्यमेवं पार्थिवत्वं, सप्तानामऽपि धीधनैः ॥ १ ॥

प्रश्न ११९. चक्रवर्तीना नव निधानमां शुं चीज छे तथा ते निधान अने चक्रीनी फोज क्यां स्थिति करे छे ?

उत्तर चक्रवर्तीना नव निधानमां शाश्वतां दिव्य पुस्तको छे, अने तेमां संपूर्ण विश्वनी व्यवस्था बतावेली छे. आ प्रकारे कोइ आचार्यनुं मानवुं छे, त्यारे मतांतरे एम मानवामां आवे छे के ते

निरुपक्रमनो नहीं समवसरणमां वीरज्ञगवान्ना शिष्योना दाहनी माफक निरुपक्रम उपद्रव तो थाय छे ज. एवो लोकप्रकाशमां लेख छे ते आ प्रमाणेः—

॥ तथाहि ॥

ज्वलनप्रज्ञनागेंद्रात्सगरस्यांगजन्मनाम् ॥ योऽज्रूदुपद्रव· सत्यऽप्यस्मिन्स त्वऽनुपक्रम· ॥ १ ॥ ध्वंसः सोपक्रमस्यैवोपद्रवस्य ज्ञवेदितः ॥ इतरस्तु ज्ञवत्येव, वीरांतेवासि दाहवत् ॥ २ ॥

प्रश्न ११७ चक्रवर्तीनु चर्मरत्न चामडानु नथी, तथा दंडरत्न काष्ठमय नथी, ते वतां तेने चर्मरत्न अने दंमरत्न कहेवामा आवे छे तेनु शुं कारण ?

उत्तर चर्मरत्नमां पार्थिवत्व छे तथापि तेमा चामडाना जेवो संकोच विकोच

स्वजाव होवाथी चर्मरत्न कहेवामां आवे ठे, अने दंमरत्न पण पृथ्वीमय ठे, ठतां काष्ठदंडनी सादृश्यताथी दंडरत्न कहेवाय ठे. एवी रीते बुद्धिशालीओए साते रत्नोमां पृथ्वीत्व जाणवुं.

॥ तदुक्तं लोकप्रकाशे ॥

पार्थिवत्वेऽपि तत्साम्या-च्चर्मेति व्यपदिश्यते॥ दंडोऽप्येवं पार्थिवस्तत्साम्यात्तद्व्यपदेशभाक् ॥ भाव्यमेवं पार्थिवत्वं, सप्तानामऽपि धीधनैः ॥ १ ॥

प्रश्न ११ए चक्रवर्तीना नव निधानमां शुं चीज ठे तथा ते निधान अने चक्रीनी फोज क्यां स्थिति करे ठे ?

उत्तर चक्रवर्तीना नव निधानमां शाश्वतां दिव्य पुस्तको ठें, अने तेमां संपूर्ण विश्वनी व्यवस्था बतावेली ठे. आ प्रकारे कोइ आचार्यनुं मानवुं ठे, त्यारे मतांतरे एम मानवामां आवे ठे के ते.

कल्पपुस्तकोमां प्रतिपादन करेला पदार्थो पण ते ते निधिओमां साक्षात् प्रगट थाय छे तथा नगर जेवडा ते निधि नगरीमा माइ शके नहीं, तेथी पातालमार्गे आवी चक्रीना पुरनी बहार रहे छे एवी रीते चक्रीनी चतुरंग सेना पण अंदर अवकाश न मलवाथी पुरीमां प्रवेश करती नथी

॥ उक्तं च लोकप्रकाशे ॥

पुस्तकानीह नित्यानि, सति दिव्यानि तेषु च ॥ आख्यातास्त्यऽखिला विश्वस्थितिरेकमिदं मतम्॥ १ ॥ मतातरे तु तत्कल्प-पुस्तकप्रतिपादिताः ॥ साक्षात्प्राडुर्भवत्यर्थास्तेषु तेषु निधिष्विह ॥ २ ॥ पातालमार्गेणायाति, तिष्ठति च पुराद्बहिः॥ तेषां नगरतुल्यानां, पुर्यामनवकाशत.॥३॥

एवं सेनाश्वतस्तोपि, पत्त्यश्वेभरथात्मिकाः ॥ पुर्यां न प्रविशंत्यंत-रवकाशविवर्जिताः ॥ ४ ॥

प्रश्न १२० ज्यारे श्रीऋषभदेव भगवाने केशनी पांचमी मुठी खभा उपर लोटती राखी त्यारे कच्छ, महाकच्छादिक मुनिओए केम कर्युं हतुं ?

उत्तर. स्वामीनी पाछल दीक्षित थयेला अने स्वामीना मार्गने अनुसरनारा ते कच्छादिक मुनिओए पण केशनी पांचमी मुठी खभा उपर स्थित राखी हती.

॥ प्रोक्तं च श्रीलोकप्रकाशे ॥

अनुप्रव्रजितास्तेऽपि स्वामिमार्गानुगामिनः ॥ अरक्षन् पंचमं केशमुष्टिं स्कंधोपरि स्थितम् ॥ १ ॥

प्रश्न १२१. शत्रुंजय पर्वत प्राये शाश्वतो कहेवाय छे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर कालक्रमथी ए पर्वतनो नाश थाय छे तेथी अशाश्वतो, अने समूल नाश थतो नथी तेथी शाश्वतो एवी रीते उभय धर्मवालो होवाथी ते शत्रुंजय पर्वत शाश्वतप्राय कहेवाय छे

॥ उक्तं च लोकप्रकाशे ॥

एष चाऽशाश्वतो नाशान्मूलानाशाच्च शाश्वतः ॥ ततः सोभयधर्मत्वाच्छाश्वतप्राय उच्यते ॥ १ ॥

प्रश्न १२२ पाचमा आरामां शुद्ध साधु छे के नहीं ?

उत्तर हालमां पण नीतिनिपुण, उग्रतपस्वी अने चारित्रना महात्म्यथी आश्चर्य उत्पन्न करनारा साधुओ जयवंता वर्ते छे वास्ते विवेकी पुरुषोए आ प्रकारे मध्यस्थ दृष्टिथी विचार करी पांचमा आरामां शुद्ध साधुविषयिक सशा-

य न करवो. एवुं लोकप्रकाशमां जाहेर करेलुं छे.

॥ तथाहि ॥

विजयंतेऽधुनाप्येवं, मुनयो नयकोविदाः ॥ अत्युग्रतपसश्चारुचारित्रमहिमाद्भुताः ॥ १ ॥ एवं मध्यस्थया दृष्ट्या, पर्यालोच्यं विवेकिभिः ॥ न कार्यः शुध्धसाधूनाम्, संशयः पंचमेऽरके ॥ २ ॥

प्रश्न १२३ संध्यासमये सामायिक लीधा बाद पच्चखाण वखते मुहपत्ति-पडिलेहणनो आदेश केवी रीते मागवो?

उत्तर. सेनप्रश्नमां एवो खुलासो कर्यो छे के त्रण नवकार गणी खमासमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहुं ? ए प्रकारे आदेश मागवो.

॥ तथाहि ॥

नमस्कारत्रयं च कथयित्वा क्षमाश्रमणपूर्वं इच्छाकारेण संदिसह जगवन्मुहपत्ति पडिलेहुं इत्यादेशमार्गणम् ॥

प्रश्न १२४ दत्ति पच्चरखाण केवी रीते करवु ?

उत्तर 'सपाण जोयण पचदत्तिअ आयबिलं पच्चरखाइ' इत्यादि प्रकारे दत्ति पच्चख्खाण लेवानु सेनप्रश्नमां कथन छे

प्रश्न १२५ केवलज्ञान थया अगाउनी अवस्थामां सर्व तीर्थंकरनु अवधिज्ञान तुल्य होय के नहीं ?

उत्तर सर्व तीर्थंकरनुं प्राथमिक अवधिज्ञान सरखु न होय, पण वर्धमान् अवधि होइ शके, कारणके जे तीर्थंकर जे देवलोकादिकथी आवे तेमने ते गतिमा जेटलुं अवधिज्ञान होय तेटलु इ-

हां पण साथे आवे, एवुं सेनप्रश्नमां कथन छे

प्रश्न १२६. साधु तथा श्रावक जपमाला प्रमुखनी स्थापना केवी रीते करे ?

उत्तर. साधु बे नवकार गणी अने श्रावक त्रण नवकार गणी जपमालादिकनी स्थापना करे, पण उठावतां तो बन्ने जण एकज नवकार गणे ॥ इति सेनप्रश्ने ॥

प्रश्न १२७. उपधान विना नवकारादि भणी शकाय के नहीं ?

उत्तर जीतव्यवहारथी उपधान विना पण नवकारादि भणी शकाय, एकांत निषेध नथी इति सेनप्रश्ने ॥

प्रश्न १२८ चौद पूर्वधर जघन्यथी लांतक देवलोके जाय एवो नियम छे त्यारे कार्त्तिक शेठनो जीव प्रथम देवलोके केम गयो ?

उत्तर कार्त्तिक शेठ प्रथम देवलोके गया ते तो पूर्वना विस्मरणथी संजव थाय ठे एवुं सेनप्रश्नमां कथन ठे.

प्रश्न १२ए श्रावक श्राविका उपधानमां वांचना केवी रीते ले ?

उत्तर श्राविकाओ उजी रहीने अने श्रावको चैत्यवंदन मुद्राथी उपधान वांचना सांजले एवु श्रीहीरप्रश्नमां कह्युं ठे.

॥ तद्यथा ॥

उपधानवाचना श्राद्ध्य ऊर्ध्वस्थिताः शृण्वंति श्राद्धास्तु चैत्यवंदनमुद्रया ॥

प्रश्न १३० अन्यदर्शनीय लोकोने चोथुं व्रत उच्चराववानी त्रुट ठे के केम ?

उत्तर अन्यदर्शनीय चोथु व्रत उच्चरवानी मागणी करे तो तेने नदि विना पण उच्चराववु तेमा कोइ तरेहनो बाध नथी एवुं श्रीहीरप्रश्नमा कह्युं ठे

॥ तथाहि ॥

अन्यतीर्थीयः तुर्यव्रतमुच्चारयति तदा नंदिविनापि उच्चार्यते निषेधः कोऽपि न ॥

प्रश्न १३१. गृहस्थना आचारने धारण करनार यति प्रतिक्रमण केवी रीते करे?

उत्तर. गृहस्थाचारी यतिवेषवालो मुख्यवृत्तिए सामायिक ग्रहण करीने प्रतिक्रमण करे ॥ इति श्रीहीरप्रश्नग्रंथे प्रोक्तमस्ति ॥

॥ तद्यथा ॥

गृहस्थाचारधरो यतिवेषवान्मुख्यवृत्त्या सामायिकग्रहणं कृत्वा प्रतिक्रमणं करोति ॥

प्रश्न १३२. श्रीदशवैकालिकादि उत्कालिक सूत्र क्यारे गणवुं शुरू गणाय ?

उत्तर. दिनरातनी चार संध्याओ व-

र्जी ज्यारे मरजी होय त्यारे दशवैकालि-
कादिक गणवु शुरू गणाय

॥ तदुक्तं श्रीहीरप्रश्ने ॥

अहोरात्रिमध्ये संध्याचतुष्टयं वि-
हाय दशवैकालिकादि गणन शुध्य-
ति ॥

प्रश्न १३३ समवसरणमां तीर्थंकर के-
वा रूपे होय छे ?

उत्तर हीरप्रश्नमा हीरा जेवो लेख छे
के श्रीतीर्थंकर जगवान् समवसरणमां—
नथी गृहस्थवेषमां, नथी साधुवेषमां
नथी स्वलिंगमां, नथी कुलिंगमां, पण
लोकोत्तर रूपमां होय छे

प्रश्न १३४ परमाधामी जव्य के अजव्य?

उत्तर हीरप्रश्नमां बन्ने प्रकारना पर-
माधामी कह्या छे

प्रश्न १३५ पोसहवाली बाइओ रस्ता-
मा गीत गाइ शके के नहीं ?

उत्तर पोसहवाली बाइओ रस्तामां गीत गाय ते शास्त्राधारे नथी एवुं श्रीहीरप्रश्नमां निवेदन छे

प्रश्न १३६ चौदपूर्वी केटला भव जाणी शके ?

उत्तर संपूर्ण चौदपूर्वी असंख्याता भवो जाणी शके एवुं श्रीसेनप्रश्नमां कह्युं छे

॥ तथाहि ॥

संपूर्णचतुर्दशपूर्वविदोऽसंख्येयान् भवान् जानति

प्रश्न १३७ परमाधामीनी करेली वेदना त्रण नरकमां होय छे छतां लक्ष्मणजीने चोथी नरके परमाधामीकृत वेदना केम थइ ?

उत्तर त्रण नरकमां परमाधामीनी वेदना होय छे ते प्रायिक वचन छे एवु सेनप्रश्नमां कथन छे.

प्रश्न १३० चरक, परिव्राजकादि मिथ्यादृष्टिओमां सकाम निर्जरा होय के नहीं?

उत्तर सेनप्रश्नमा बन्ने प्रकारनी निर्जरा चरकादिकमां मानेली छे

प्रश्न १३९ पिंडविशुद्धि ग्रंथकर्त्ता जिनवल्लभसूरि खरतर गच्छीय छे के बीजा?

उत्तर पिंडविशुद्धिकर्त्ता जिनवल्लभसूरि खरतर गच्छीय नथी एवो सेनप्रश्नमां निर्णय करेलो छे

प्रश्न १४० प्रात काले चउव्विहार उपवासनुं प्रत्याख्यान कर्युं होय तेने सायंकाले फरीथी पच्चरखाण करवानी जरुर छे के केम ? तथा छठ करनारने बीजे दिन छठनु पच्चरखाण लेवु के नहीं ?

उत्तर सवारे चउव्विहार उपवास करनारने साजे फरीथी प्रत्याख्यान करवानी जरुर नथी, पण प्रतिक्रमणवेलाए मनमां याद करवु तेवी रीते छठ करना-

रे पण बीजे दिन मनमां धारी लेवुं एवुं सेनप्रश्नमां निवेदन छे ॥

प्रश्न १४१. बे हजार ने चार युगप्रधान, केवा प्रतापी समजवा ?

उत्तर. बे हजार ने चार युगप्रधान मांहेला प्रख्यात श्रीसुधर्मास्वामी अने जंबूस्वामी तो तद्भव मोक्षगामी थया छे, अने बाकीना विश्वोत्तम एवा ते सर्व आचार्यो एकावतारी समजवा ते युगप्रधान महात्माओ ज्यां विचरे छे त्यां दश गाउनी अंदर दुष्कालादि उपद्रवो नाश पामे छे एवा अनेक अतिशय युक्त मोटा सत्ववंत तेओ होय छे आ प्रकारे लोकप्रकाशमां प्रकाशित करेलुं छे.

॥ तथाहि ॥

एकावताराः सर्वेऽमी, सूरयो जगदुत्तमाः ॥ श्रीसुधर्मा च जंबूश्च ख्या-

तौ तन्नवसिद्धिकौ ॥ १ ॥ अनेकातिशयोपेता, महासत्त्वा भवंत्यऽमी ॥ प्रति सार्धद्वियोजन्यां, दुर्भिक्षादीनुपद्रवान् ॥ २ ॥

प्रश्न १४२ योगवहनपूर्वक गुरुमुखथी सिद्धांत वांचना लेवानु कोइ शास्त्रमां फरमान छे ?

उत्तर श्रीजिनेश्वरे कहेला अगोपांग भेदथी भिन्न सिद्धांतोनो योगोद्वहनपूर्वक मेळव्यो छे स्वगुरु मुखकमलथी परमार्थ जेमणे एवा महात्मा होय एवु श्रीमध्यानव्यारया ग्रथमां निवेदन कर्युं छे

॥ तथाहि ॥

जिनोक्तसिद्धांतानां अंगप्रविष्टानंगप्रविष्टभेदभिन्नाना गृहीतो योगवहनेन स्वीकृत स्वगुरुमुखकमलात्परमार्थो रहस्य येस्ते ॥

प्रश्न १४३. ज्यां चोमासुं रह्या होय त्यां साधुओ क्यां सुधी वस्त्रादिक न ग्रहण करी शके ?

उत्तर ज्यां चोमासुं रह्या होय त्यां चोमासा बाद बे मास सुधी साधु साध्वीओने वस्त्रादिक लेवुं कल्पे नहीं एवुं श्रीसेनप्रश्नमां कह्युं छे.

प्रश्न १४४ श्री अष्टापद तीर्थनी यात्रा करनार तद्भव मोक्षगामी केवी रीते मनाय छे ?

उत्तर तपसंयमथी उत्पन्न थएली लब्धिवडे जेओ श्रीअष्टापद गिरिनी यात्रा करे तेओ तेज भवमां मुक्ति जाय एवो श्रीहीरप्रश्नमां संभव बतावेलो छे

॥ तथाहि ॥

अष्टापदगिरौ ये तपसंयमोत्थलब्ध्या यात्रां कुर्वंति ते तद्भवसिद्धिगामिन इति संभाव्यते ॥

प्रश्न १४५ सर्वे इंद्र एकावतारी छे के केम ?

उत्तर सर्वे इन्द्र एकावतारी नथी एवु श्रीहीरप्रश्नमां निवेदन कर्युं छे

प्रश्न १४६ सर्वे नारद तद्भव मोक्षगामी छे के केम ?

उत्तर सर्वे नारद तद्भव मोक्षगामी नथी एवु श्रीहीरप्रश्नमा दर्शाविलु छे

प्रश्न १४७ केटलाएक अजाण कच्छी लोको आयविलमां सोपारी वापरे छे ते वपराय के नहीं ?

उत्तर आयविलमा राधेला पोंक तथा लवींग, पिपर, हरडे न कल्पे एवु श्रीहीरप्रश्नमा कह्यु छे वास्ते सोपारी प्रमुख तंबोल न कल्पे एवुं सिद्ध थाय छे, पण काला मरी अने सुंठ वापरी शकाय छे

प्रश्न १४८. उपांग सूत्रोनी रचना कोण करे छे ?

उत्तर. उपांगनी रचना श्रीस्थविर महाराज करे एवुं श्रीहीरप्रश्नमां प्रदर्शित कर्युं छे

प्रश्न १४९ साधारण जिनालयमां प्रतिमा कोना नामथी जोइए ?

उत्तर साधारण जिन मंदिरमां गामना नामथी प्रतिमाजी जोइए

तथाच हीरप्रश्ने प्रोक्तमस्ति ॥

साधारणप्रासादे प्रतिमायां कार्यमाणायां ग्रामनाम्ना प्रतिमा विलोक्यते ॥

प्रश्न १५०. बे इंद्रिय एलनी चोइन्द्रिय भमरी केवी रीते बनी जाय छे ?

उत्तर एलना कलेवरमां तेज एलनो जीव मरण पामीने अथवा बीजो कोइ

जीव चोइंद्रिय जमरीपणे उत्पन्न थाय ठे, पण तेज जवमां एलनी जमरी वनी जाय ठे एम समजवु नहीं एवु श्रीहीरप्रश्नमां स्पष्ट कहेलु ठे

प्रश्न १५१ नरकमा केटला प्रकारनी वेदना थाय ठे ?

उत्तर शीत, उष्ण, क्षुधा, तृषा, खुजली, जय, शोक, पराधीनता, ज्वर अने दाहनो व्याधि ए दश प्रकारनी नरकमां वेदना थाय ठे एवु आरूगुण विवरणमां वर्णवेलुं ठे.

॥ तद्यथा ॥

दसविह वेयण निरए, सी १ उसिण २ खु ३ प्पिवास ४ कडुअ ५ । जय ६ सोग ७ पारवस्स ८ जरोअ ९ वाहीअ १० दसमोअ॥१॥

प्रश्न १५२ नरकमां केटला प्रकारना रोग थाय ठे ?

उत्तर पांचे[1] क्रोड, अडसठ लाख, नवाणु हजार, पांचसें, चोरासी प्रकारना रोगो अप्रतिष्ठान नरकावासामां छे ते बताववा आऊगुण विवरणमां नीचे मुजब गाथा आपेली छे

॥ तथाहि ॥

पणकोडीअडसठी,लक्खानवनवइ-
सहसपंचसया। चुलसी अहियान-
रए, अपइठाणमि वाहीउ ॥१॥

प्रश्न १५३ कया पांच वकार अनर्थ उत्पन्न करे छे ?

उत्तर. वैर १ वैश्वानर[2] २ व्याधि ३ वाद ४ अने व्यसन[3], ५ ए पांच वकार वृद्धि पाम्या थका महा अनर्थने करनारा थाय छे

१ सधयण सूत्रमा (५६८९९५८४) प्रकारना रोग छठी सातमी नरके दर्शाव्या छे २ अग्नि ३ सात व्यसन

॥ तथोक्तं श्राद्धगुणविवरणे ॥

वैर वैश्वानर व्याधि, वाद व्यस-
नलक्षणाः ॥ महाऽनर्थाय जायते,
वकाराः पच वर्ष्दिता. ॥ १ ॥

प्रश्न १५४ नरलोकमां ७ नरको क-
हेवाय छे ते कई ?

उत्तर १ कुग्राममां रहेठाण २ कुनृपनी
सेवा ३ कुत्सित अजक्ष्य जोजन ४ क्रो-
धिष्ट स्त्री ५ कन्यानु बहुत्व अने ६ कं-
गाल हालत ए ७ प्रकारनी मनुष्य लो-
कमा नरको गणाय छे

॥ यदुक्तं श्राद्धगुणविवरणे ॥

कुग्रामवासः कुनरेंद्रसेवा,
कुजोजनं क्रोधमुखी च जार्या ॥
कन्याबहुत्व च दरिद्रता च,
षट् जीवलोके नरका भवंति॥१॥

प्रश्न १५५ वहिरात्मा अने अंतरात्मा शुं चाहे छे ?

उत्तर वहिरात्मा पोताने सुंदर रूप, दीर्घायु, घणु वल अने प्रचूत द्रव्यादिकनी संपदा मले एम चाहे छे. त्यारे विज्ञानी अंतरात्मा पवित्रकपणे आ वधाथी मुक्त थवा चाहे छे इति शुद्धोपयोगविचारप्रकरणे प्रोक्तमस्ति

॥ तथाहि ॥

रूपायुर्वलवित्तादि, संपत्ति स्वस्य वांछति ॥ वहिरात्माऽथवा ज्ञानी, साद्यात्तेभ्योऽपि विच्युतिम् ॥ १ ॥

प्रश्न १५६ मुक्ति कोनी थाय अने कोनी न थाय ?

उत्तर जेनी आत्मस्वरूपमां निश्चल स्थिति छे तेज मुनिनी मुक्ति थाय छे, अने जेनी आत्मस्वरूपमा चोकस रीते स्थिरता नथी तेनी निश्चय मुक्ति नथी.

ए प्रकारे शुद्धोपयोग प्रकरणमां निरूपण कर्युं छे

॥ तथाहि ॥

मुक्तिरेव मुनेस्तस्य, यस्यात्मन्यचलस्थिति ॥ न तस्यास्ति ध्रुवं मुक्तिर्न यस्यात्मन्यवस्थिति ॥ १ ॥

प्रश्न १५७ आत्मा केवी रीते सिद्धत्व प्राप्त करे छे ?

उत्तर जेम दीवानी वाट दीपकने पामीने प्रदीप रूप बने छे तेम आत्मा पण सिद्धात्मानु आराधन करी सिद्धता मेळवे छे

॥ तदुक्त शुद्धोपयोगप्रकरणे ॥

आत्मानं सिद्धमाराध्य, प्राप्नोत्यात्मापि सिद्धताम् । वर्त्तिः प्रदीपमासाद्य, यथाभ्येति प्रदीपताम् ॥ १ ॥

प्रश्न १५८. आत्मा शरीरथी भिन्न छे एवुं सांजलवा के बोलवाथी मोक्षे जवाय के नहीं ?

उत्तर. ज्यांसुधी आत्मा भेदाभ्यासमां निष्ठित थतो नथी त्यांसुधी शरीरथी आत्मा जुदो छे एवुं सांजलतो के बोलतो प्राणी मोक्षे जइ शकतो नथी.

॥ तथोक्तं शुद्धोपयोगप्रकरणे ॥

शरीराद्भिन्नमात्मानं, शृण्वन्नपि वदन्नपि॥ तावन्न मुच्यते यावन्नभेदाभ्यासनिष्ठितः ॥ १ ॥

प्रश्न १५९ आत्मज्ञानी मरण समये शरीरनो केवी रीते त्याग करे छे ?

उत्तर. आत्मज्ञानी आत्माथी देहने अने देहथी आत्माने जुदो जोइ जेम घृणास्पद गंदा वस्त्रने छोडी देवामां आवे छे तेम असंगात्मा मरण वखते पोताना देहनो निर्ममत्वताथी त्याग करे छे.

॥ तथाचोक्तं शुद्धोपयोगप्रकरणे ॥

पृथग् दृष्ट्वात्मनः कायं, कायादा-
त्मानमात्मवित् ॥ तथा त्यजत्यस-
गोंगं, यथा वस्त्रं घृणास्पदम् ॥ १ ॥

प्रश्न १६० ज्यारे आत्मा शरीरथी भिन्न छे एवु सांभलवा के बोलवाथी मुक्त थवातु नथी त्यारे आत्मभावना केवी रीते करवी ?

उत्तर आ आत्मा शरीरथी भिन्न छे एवा प्रकारनी आत्मावडे आत्मामां आत्मभावना करवी के जेथी फरीने आ शरीर छे तेज आत्मा छे एवी अगसंगतिने [illegible]मां पण आ आत्मा प्राप्त थाय नहीं, [illegible]चंद्राचार्यविरचित योगप्रदीपाधि-[illegible] शुद्धोपयोगविचारप्रकरणमा [illegible]त्मान्युं छे

[illegible]सि॰६ ॥ तथाहि ॥

[illegible]न्येस्तनोस्तरू—ज्ञा०योऽय-

मात्मनात्मनि ॥ स्वप्नेऽप्ययं यथाऽन्येति, पुनर्नांगेन संगतिम् ॥ १ ॥

प्रश्न १६१. प्रमाण एटले शुं अने ते केटला प्रकारे जैनो माने छे ?

उत्तर. सारी रीते पदार्थना निर्णयने प्रमाण कहेवामां आवे छे, अने जैनो प्रत्यक्ष तथा परोक्ष एवां बे प्रमाण माने छे.

॥ तदुक्तं प्रमाणमीमांसायां श्रीहेमचंद्राचार्यैः ॥

१ सम्यगर्थनिर्णयः प्रमाणम्.

२ प्रमाणं द्विधा

३ प्रत्यक्षं परोक्षं च.

प्रश्न १६२ तर्कशास्त्रमां फल कोने कहे छे ?

उत्तर पदार्थ प्रकाशने फल कहेवामां आवे छे.

॥ तथाचोक्तं शुद्धोपयोगप्रकरणे ॥
पृथग् दृष्ट्वात्मनः कायं, कायादात्मानमात्मवित् ॥ तथा त्यजत्यसंगोगं, यथा वस्त्रं घृणास्पदम् ॥ १ ॥

प्रश्न १६० ज्यारे आत्मा शरीरथी भिन्न ले एवु सांजलवा के वोलवाथी मुक्त यवातु नथी त्यारे आत्मजावना केवी रीते करवी ?

उत्तर आ आत्मा शरीरथी भिन्न ले एवा प्रकारनी आत्मावडे आत्मामां आत्मजावना करवी के जेथी फरीने आ शरीर ले तेज आत्मा ले एवी अगसंगतिने स्वप्नमां पण आ आत्मा प्राप्त थाय नहीं, एवुं शुत्तचद्राचार्यविरचित योगप्रदीपाधिकारातर्गत शुद्धोपयोग विचारप्रकरणमा निवेदन कर्युं ले

॥ तथाहि ॥
व्यतिरिक्तस्तनोस्तद्र—ज्ञान्योऽय-

मात्मनात्मनि ॥ स्वप्नेऽप्ययं यथाऽन्ये-ति, पुनर्नांगेन संगतिम् ॥ २ ॥

प्रश्न १६१. प्रमाण एटले शुं अने ते केटला प्रकारे जैनो माने छे ?

उत्तर. सारी रीते पदार्थना निर्णयने प्रमाण कहेवामां आवे छे, अने जैनो प्रत्यक्ष तथा परोक्ष एवां बे प्रमाण माने छे.

॥ तदुक्तं प्रमाणमीमांसायां श्री-हेमचंद्राचार्यैः ॥

१ सम्यगर्थनिर्णयः प्रमाणम्.

२ प्रमाणं द्विधा

३ प्रत्यक्षं परोक्षं च.

प्रश्न १६२ तर्कशास्त्रमां फल कोने कहे छे ?

उत्तर पदार्थ प्रकाशने फल कहेवामां आवे छे.

॥ तदुक्तं प्रमाणमीमांसायाम् ॥

१ फलमर्थप्रकाश·

प्रश्न १६३. क्रिया अने प्रमाणनी स्थिति शेमां छे ?

उत्तर क्रिया कर्ममा अने प्रमाण कर्त्तामां स्थित होय छे एवु प्रमाणमीमांसामां निवेदन कर्युं छे

॥ तथाहि ॥

१ कर्मस्था क्रिया २ कर्तृस्थं प्रमाणम्.

प्रश्न १६४ जय पराजय कोने कहेवामां आवे छे ?

उत्तर पोताना पक्षनी सिद्धिने जय अने स्वपक्षनी असिद्धिने पराजय कहेवामां आवे छे

॥ प्रोक्तं च प्रमाणमीमांसायाम् ॥

१ स्वपक्षसिद्धिर्जयः २ असिद्धिः पराजयः

प्रश्न १६५. आत्मशिक्षा केवी रीते करवी ?

उत्तर रे आत्मन् ! नम्रीभूत ऊर्ध्वमुख कमलना दल साथे लागेला जलबिंदु जेवी चंचल आ संसारनी रचनाने जोतो-थको पण तुं खरी रीते देखतो नथी, ए तारुं नवाइ जेवुं अधत्व छे, जो तने आत्म कल्याणनी इछा होय तो गिरिगुफामां निवास करी संसारनी चेष्टाओने पण मूकी दे अने पर्वत जेवी दृढ प्रतिष्ठाने प्राप्त था. वली रे जीव ! चोराशी लाख प्रकारना उत्पत्ति स्थानथी गंभीर एवा आ संसार समुद्रमां भ्रमण करीने ते सुंदर रत्न जेवुं आ अलभ्य मनुष्यत्व मेलव्युं छे, तेने बनावटी नहीं एवा धर्मकृत्यरूपी कनकनी साथे जोडी देवामां आवे तो खरेखर आश्चर्य छे के, तेनी त्रिभुवनमां पण कोण कीमत करी शके ? अलवत्त कोइ पण तेनी कीमत करी शके नहीं, आ प्रकारे निम-

लाचार्यविरचित संवेगडुमकंदलीमां आत्मशिक्षा करेली छे

॥ तथाहि ॥

उत्तानांबुजपत्रबिंदुतरलां संसारभंगीमिमां, रे पश्यन्नपि नैव पश्यति भवानाध्यं तवालौकिकम् ॥ कल्याणाय किल स्पृहा यदि गिरिप्रासप्रतिष्ठस्तदा, मुंचात्मन् भवचेष्टितान्यपि गिरिप्रासप्रतिष्ठो भव ॥ १ ॥ प्राप्तास्मिन्बहुयोनिलक्षगहने संसारवारानिधौ, मानुष्य भवता सुरत्नमिव रे डुःप्रापमासादितम् ॥ तन्निःकृत्रिमधर्मकर्मकनकेनायोज्यते यद्यहो, त्रैलोक्येपि करोति कः किल तदा तस्येद मूल्य जनः ॥ २ ॥

१ अपरनाम श्रीब्रह्मचन्द्राचार्यकृत

प्रश्न १६६ ब्राह्मणादि अन्यदर्शनीओ ज्यारे 'धनवान्, पुत्रवान, आयुष्यमान् था' एवा प्रकारना आशीर्वाद आपे छे, त्यारे जैनमुनिओ नमस्कार करनाराने धर्मलाभ कहे छे तेनुं शुं प्रयोजन ?

उत्तर जो 'दीर्घायुर्भव' एम कहेवामा आवे तो लांबु जीवन नरकवासीओमां पण पसार थाय छे, तेमां कांइ नवाइ नथी जो संतान माटे 'पुत्रवान् भव' एम कहेवामां आवे तो कुकडाओने घणांए बच्चां होय छे, तेमां पण कांइ महत्ता नथी. सुखने वास्ते 'धनवान् भव' एम कहेवामां आवे तो खरेखर म्लेछ मुकानीओ पासे पण पुष्कल पैसा होय छे, तेमां पण कांइ खरी खुबी कहेवाय नहीं ते कारणथी ज्ञानीओए सर्व प्रकारना सुखने करनारो धर्मलाभ निवेदन करेलो छे अतएव जैनमुनिओ धर्मलाभ कहे छे

॥ तदुक्तं धर्मलाभाष्टके ॥

दीर्घायुर्भव जण्यते यदि तदा तन्नारकाणामपि, संतानाय च पुत्रवान् भव तदा तत्कुर्कटानामपि ॥ सौख्यार्थे धनवान् भवेति नियतं नौवित्तकानामपि, तस्मात्सर्वविधायको निगदितः श्रीधर्मलाभो बुधैः

प्रश्न १६७ केटलाएक भाविको एकल प्रतिमा भरावे छे, केटलाक त्रिकरूपे भरावे छे, कोइ पचतीर्थी तो कोइ चोवीशी अने कोइ एकसो सीतेर जिनना शिलापट्ट कोतरावे छे तेनु शु कारण ?

उत्तर अनेक प्रकारनी प्रतिमा भरावावानु कारण एवु छे के कोइ भक्तिवंत जिनराजनी ऋद्धि देखवाने माटे प्रगट प्रातिहार्य अने देवताना आवागमथी शोभित एवी एक प्रतिमाने करावे छे.

तथा कोइ दर्शन ज्ञान चारित्रना आराधन निमित्ते त्रण जिननी त्रिकरूपे प्रतिमा करावे छे. तथा कोइ पंचपरमेष्ठी नमस्कार मंत्रना उद्यापनार्थे अथवा कल्याणक तपना उजमणा वास्ते पंचतीर्थी प्रतिमा नरावे छे. तथा रुपनादि चोवीश तीर्थंकर नरतक्षेत्रमां थया छे माटे तेना बहुमान विशेषथी कोइ चोवीशी नरावे छे तेमज मनुष्य लोकमां उत्कृष्टा १७० जिन विचरे छे तेथी ते सर्वेनी नक्तिवडे कोइ धनाढ्य १७० जिनबिंब करावे छे.

॥ तदुक्तं वृहद्भाष्ये ॥

जिणरिद्धि दंसणहं, एगं कारेइ केइ नत्तिजुर्ज ॥ पायडिय पाडिहेरं, देवागमसोहियं चेव ॥ १ ॥ दंसणनाणचरित्ताराहणकचे जिणत्तियं कोइ ॥ परमिठिनमोक्कार उद्यमियं कोइ

पचजिणे ॥ २ ॥ कल्लाणतवमहवा, उक्कमियं नरहवासन्नाविति ॥ वद्धमाणविसेसाउ, केई कारति चउवीसं ॥ ३ ॥ उक्कोसं सत्तरिसय, नरलोए विहरइत्ति नत्तीए॥ सत्तरिसयपि कोई, बिंबाण कारइ धणिड्ढो ॥ ४ ॥

प्रश्न १६० जैन मुनिराजना सदुपदेशथी कोइ कच्छना राजाए अमारी प्रवर्तन करावी जैनप्रासाद कराव्यो छे ?

उत्तर तपगछीय श्रीविवेकहर्षगणिना सदुपदेशथी कच्छनरेश श्रीभारमल्लजीए अमारी प्रवर्तनपूर्वक भुजनगरमां राजविहार नामनु मदिर बनाव्युं छे एवुं कच्छ मोटी खाखरना शत्रुंजयावतार नामना देरासरमां आवेला शिलालेखथी साबीत थाय छे ते लेखनी नकल नीचे मुजब.

॥ कच्छ मोटी खाखरना देरासरनो शिलालेख ॥

व्याकरण काव्य साहित्य नाटक संगीत ज्योतिष छंदोऽलंकार कर्कश-तर्क शैव जैन चिंतामणि प्रचंड खंडन मीमांसा स्मृति पुराण वेदश्रुतिपद्धति षट्त्रिंशत्सहस्राधिक ६ लक्षमितश्री-जैनागमप्रमुख स्वपरसिद्धांत गणित जाग्रद्यावनीयादि षड्दर्शनी ग्रंथ विश-देति ज्ञान चातुरी दलितदुर्वादिजनो-न्मादैः ब्राह्मीयावनीयादि लिपी पिद्दा-लिपि विचित्र चित्रकला घटोज्ज्वाल-नावधि विधीयमान विशिष्ट शिष्टचेत-श्चमत्कारकारि श्रृंगारादिरस सरस चित्राद्यलंकारालंकारालंकृत सुरेंद्र भाषा परिणति भव्य नव्यकाव्य पद्-

त्रिंशद्रागिणी गणोपनीत परम भाव रागमाधुर्य श्रोतृजनामृत पीतगीत-रास प्रबध नाना छंदः प्राच्य महा पुरुष चरित्र प्रमाण सूत्रवृत्त्यादि करण यथोक्त समस्या पूरण विविध ग्रंथ-ग्रथनेन नैकश्लोकशत संख्यकरणादि लब्धगीः प्रसादैः श्रोतृश्रवणामृत पारणानुकारि सर्वराग परिणति मनोहारि सुखनादैः स्पष्टाष्टावधान शतावधान कोष्टकपूरणादि पांडित्यानुरंजित महाराष्ट्र कौंकणेश श्रीबुर्हानशाहि महाराज श्रीरामराज श्रीखानखाना श्रीनवरंगखान प्रभृत्यऽनेक भूपदत्त जीवामारि प्रभूत बंदिमोक्षादि सुकृत समर्जित यशः प्रवादैः पं० श्रीविवेकहर्षगणि प्रसादैरस्मद्-

गुरुपादैः ससंघाटकैस्तेषामेव श्रीपरमगुरूणामादेशप्रसादं महाराजश्री भारमल्लजिदाग्रहानुगामिनमासाद्य श्रीभक्तामरादि स्तुति भक्ति प्रसन्नी भूत श्रीऋषभदेवोपासक सुर विशेषाज्ञया प्रथम विहारं श्रीकच्छदेशेऽत्र चक्रे तत्र च स १६५६ वर्षे श्रीभुज नगरे आद्यं चतुर्मासकं द्वितीयं च रायपुर बंदिरे. तदा च श्रीकच्छ मछुकांठा पश्चिम पांचाल वागड जेसला मंरूलाद्यऽनेक देशाधीशैर्महाराज श्रीखेंगारजी पट्टालंकरणैर्व्याकरण काव्यादि परिज्ञान तथाविधैश्वर्यस्थैर्यधैर्यादि गुणापहस्तित सरस्वती महा-नवस्थान विरोध त्याजकैर्याद-

१ व्याजैः--

त्रिंगडागिणी गणोपनीत परम भाव रागमाधुर्य श्रोतृजनामृत पीतगीत-रास प्रबंध नाना छंदः प्राच्य महा पुरुष चरित्र प्रमाण सूत्रवृत्त्यादि करण यथोक्त समस्या पूरण विविध ग्रथ-ग्रथनेन नैकश्लोकशत संख्यकरणादि लब्धगीः प्रसादैः श्रोतृश्रवणामृत पारणानुकारि सर्वराग परिणति मनो-हारि मुखनादैः स्पष्टाष्टावधान शता-वधान कोष्टकपूरणादि पाण्डित्यानुरं-जित महाराष्ट्र कौंकणेश श्रीबुर्हान-शाहि महाराज श्रीरामराज श्रीखा-नखाना श्रीनवरंगखान प्रभृत्यऽनेक भूपदत्त जीवामारि प्रभूत बंदिमो-क्षादि सुकृत समर्जित यशः प्रवादैः पं० श्रीविवेकहर्षगणि प्रसादैरस्मद्-

गुरुपादैः ससंघाटकैस्तेषामेव श्रीप-
रमगुरूणामादेशप्रसादं महाराजश्री
भारमल्लजिदाग्रहानुगामिनमासाद्य
श्रीभक्तामरादि स्तुति भक्ति प्रसन्नी
भूत श्रीऋषभदेवोपासक सुर विशे-
षाज्ञया प्रथम विहारं श्रीकच्छदेशेऽत्र
चक्रे तत्र च सं १६५६ वर्षे श्रीभुज
नगरे आद्यं चतुर्मासकं द्वितीयं च रा-
यपुर बंदिरे. तदा च श्रीकच्छ मरुकांठा
पश्चिम पांचाल वागड जेसला मंम्ब-
लाद्यऽनेक देशाधीशैर्महाराज श्रीखें-
गारजी पट्टालंकरणैर्व्याकरण का-
व्यादि परिज्ञान तथाविधैश्वर्यस्थैर्य-
धैर्यादि गुणापहस्तित सरस्वती
महा-नवस्थान विरोध त्याजेकैर्यद्-

१ त्याजै.-

त्रिंशद्रागिणी गणोपनीत परम भाव रागमाधुर्य श्रोतृजनामृत पीतगीत-रास प्रबंध नाना छंदः प्राच्य महा पुरुष चरित्र प्रमाण सूत्रवृत्त्यादि करण यथोक्त समस्या पूरण विविध ग्रंथ-ग्रथनेन नैकश्लोकगत संख्यकरणादि लब्धगीः प्रसादैः श्रोतृश्रवणामृत पारणानुकारि सर्वराग परिणति मनोहारि सुखनादैः स्पष्टाष्टावधान शतावधान कोष्टकपूरणादि पांडित्यानुरंजित महाराष्ट्र कौंकणेश श्रीबुर्हानशाहि महाराज श्रीरामराज श्रीखानखाना श्रीनवरंगखान प्रभृत्यऽनेक भूपदत्त जीवामारि प्रभूत वंदिमोक्षादि सुकृत समर्जित यशः प्रवादैः पं० श्रीविवेकहर्षगणि प्रसादैरस्मद्-

रूक्तां नत्रस्य वार्षिक व्यवस्थापिका सिध्दांतार्थयुक्तिमाकर्ण्य तुष्टो राजा जयवादपत्राणि च स्वमुद्रांकितानि श्रीगुरुज्यः प्रसादाडुपढोकयति स्म प्रतिपक्षस्य च पराजितस्य तादृश राजनीतिमासूत्र्य श्रीराम इव सम्यग्न्यायधर्मे सत्यापितवान् किंच कियदेतदस्मद्गुरूणाम् ॥ यतः ॥

येर्जिग्ये मलकापुरे विवदिषुर्मूलाभिधानो मुनिः, श्रीमज्जैनमतं यवन्नुतिपदं नीतं प्रतिष्ठानके ॥ न्नट्टानां शतशोऽपीयत्सु मिलितासूद्दीप्य युक्तीर्जिता, यैर्मौनं श्रयितः स वोरिदपुरे वादीश्वरो देवजी ॥१॥ जैनन्यायगिराविवादपदवीमारोप्य निर्घांटितो, पाचीदेश गजालणा पुरवरे दिगंव-

ववंश भास्कर महाराज श्रीभारमल्लजी राजाधिराजैः (विज्ञप्ताः) श्रीगुरुवस्ततस्तदिच्छापूर्वकं संजग्मिवांसः काव्य व्याकरणादि गोष्ठ्या स्पष्टाष्टावधानादि प्रचंड पांडित्य गुणदर्शनेन च रंजितैः राजेंद्रैः श्रीगुरूणां स्वदेशेषु जीवामारी प्रसादश्चक्रे तद्व्यक्तिर्यथा-सर्वदापि गवामारिः पर्यूषणा ऋषिपचमीयुत नवदिनेषु तथा श्राध्दपक्षे सर्वैकादशी रविवार दर्शेषु च तथा महाराज जन्मदिने राज्यदिने सर्व जीवामारिरिति सार्वदिकी सार्वत्रिकी चोद्घोपणा जज्ञे तदनु चैकदा महाराजै पाल्लविधीयमान नभोवार्षिक विप्र विप्रतिपत्तौ तन्निराकरणपूर्वकं श्रीगुरुभि· कारिता श्रीगु-

वंधु प्रतापतेजा यस्य पट्टराज्ञी पुष्पां-
वाइ प्रभृति तनूजा: कुंभजाजी,
हाजाजी, भीमजी, देसरजी, देवोजी,
कमोजी, नामानो रिपुगजघटाकेशरि-
णस्तत्र च शतश: श्रीउंशवालगृहाणि
सम्यग् जिनधर्मं प्रतिवोध्य सर्वं श्राद्ध
सामाचारी शिक्षणेन च परमश्राद्धी कृ-
तानि तत्र च ग्रामग्रामणी भद्रकत्व
दानशूरत्वादि गुणोपार्जितयशःप्रसर
कर्पूर पूर सुरभीकृतब्रह्मांडभांडः
शा. वयरसिकः सकुटुंब: श्रीगुरुणा
तथा प्रतिवोधितो यथा तेन घंघर
शा. शिवापेथा प्रभृति समवहितेन
नव्योपाश्रयः श्रीतपागण धर्मराज-
धानीव चक्रे. तथा श्रीगुरुपदेशेनैव
गुर्जर धरित्र्याः शिलातक्षकानाकार्य

राचार्यराट् ॥ श्रीमज्ञामनरेंड्रसंसदि किलात्मारामवादीश्वर, कस्तेपां च विवेकहर्पसुधियामग्रे धराचंडक ॥२॥ किंचास्मद्गुरुवक्त्रनिर्गतमहाशास्त्रामृताब्धौ रत',सर्वत्रामितमान्यतामवदधे श्रीमद्युगादिप्रन्नोः ॥ तद्भक्त्यै त्तुजपत्तने व्यरचयत् श्रीज्ञारमल्लप्रत्तु', श्रीमज्ञायविहारनाम जिनपप्रासादमत्यज्ञुतम् ॥ ३ ॥

अथ च स १६५६ वर्षे श्रीकछ देशांतर्जैसला मंफले विहरद्भि-श्रीगुरुन्नि-प्रवल धनधान्यान्निराम श्रीखाखर ग्राम प्रतिवोध्य सम्यग् धर्मक्षेत्रं चक्रे यत्राधीशो महाराज श्रीज्ञारमल्लजी न्नाता कुम्ररश्री पंचायणजी प्रमद प्रवल पराक्रमाक्रांतदिक्चक्रश्चक्र-

आगम आदिक पोताना अने परना सिद्धांत, गणित शास्त्र, तथा जागता एवा यवन आदिक छए दर्शनोना ग्रंथ तथा निर्मल एवां प्रकरण संबंधी ज्ञाननी चतुराइवडे करीने दली नाखेल छे इत्यादि मनुष्योनो उन्माद जेउए एवा तथा ब्राह्मी अने फारशी आदिक लिपि तथा चींनीनी लिपिथी थती विचित्र प्रकारनी चित्रकला तथा घडामांथी अग्नि कहाडवा आदिकनी विधिथी अत्यंत उत्तम माणसोनां मनने चमत्कार करनारा तथा शृंगार आदिक रसथी रसयुक्त थयेला अने चित्रबंधादि अलंकारोथी सुशोभित एवी संस्कृत भाषामां बनावेलां मनो-

सघे श्रेयश्च. सं १६५० वर्षे फा०
सुद १० दिने प श्रीविवेकहर्षग-
णिभिर्जिनेश्वर तीर्थ विहारोऽय प्र-
तिष्ठित. ॥ प्रशस्तिरियं विद्याहर्षग-
णिभिर्विरचिता संवतो वैक्रमः ॥

॥ उक्त शिलालेखनुं गुजराती भाषांतर ॥

व्याकरण, काव्य, साहित्य, नाटक, संगीत, ज्योतिष, छंदःशास्त्र, अलंकार शास्त्र, कठिन एवां तर्कशास्त्र, शिवमतनां शास्त्र, जिनमतनां शास्त्र, चिंतामणिना मतनुं प्रचंड खंडन करनारां शास्त्र, मीमांसा शास्त्र, स्मृतिशास्त्र, पुराणशास्त्र, वेदशास्त्र तथा श्रुतिनी पद्धतिनां छ लाख छत्रीश हजार शास्त्रो तथा जैन

प्रकारना रागोनी परिणतिवडे करीने मनोहर छे मुखनो शब्द जेमनो एवा वली स्पष्ट रीते आठ अवधानना तथा सो अवधानना कोष्टकने संपूर्ण करवा आदिकनी पंडिताइवडे करीने खुशी करेला एवा महाराष्ट्र तथा कोकणना राजा श्रीबुर्हानशाह महाराज श्रीरामराजा श्रीखानखाना तथा श्रीनवरंगखान आदिक अनेक राजाउंए दीधेला जीवो माटेना अमारि पटह तथा घणा केदीउंना छुटकारा आदिकना पुण्यथी मेलवेल छे जसवाद जेउंए एवा अमारा गुरु महाराज पंडित श्रीविवेकहर्षगणिए संघाडा सहित तेज श्रीगुरु महाराजनो महाराज श्रीजारमल्लजीना

छर एवां नवां काव्यो बनाववाथी तथा छत्रीश प्रकारनी रागणीउना समूहथी बतावेला उत्कृष्ट जाववाला रागनी मीठाशथी सांजलनारा माणसोने अमृतपान सरखां गीतवाला रास अने प्रबंधोथी तथा नाना प्रकारना छंदोथी जरेला पूर्व महापुरुषोनां चरित्रो तथा न्याय शास्त्रोनी टीका आदिक करवावडे करीने तथा जेवी कहोतेवी समस्या पूरवाथी तथा विविध प्रकारना ग्रंथो रचवावडे करीने तथा अनेक अने सेकडो गमे श्लोको रचवा आदिकवडे करीने मेलवेल छे सरस्वतीनो प्रसाद जेमणे एवा तथा साजलनाराउना कानोने अमृतना पारणा समान एवा सर्व

धैर्यता आदिक गुणोवडे करीने दूर करेल छे सरस्वतीने जेमणे एवा तथा महान् अनवस्था अने विरोधनो त्याग करावनारा अने यादव वंशनी अंदर सूर्य समान एवा महाराजा राजाधिराज श्रीनारमल्लनीए विनंति करवाथी श्रीगुरु महाराजे तेमनी इच्छापूर्वक विहार कर्यो. तेमज काव्य तथा व्याकरण आदिकनी गोष्ठीथी तथा स्पष्ट रीते अष्ट अवधान आदिकनो उत्कृष्ट पंडिताइनो गुण देखाडवावडे करीने खुशी करेला एवा ते राजाए श्रीगुरु महाराज प्रत्ये पोताना देशोमां जीवहिंसा न थवा देवा माटेनो (लेख करी आपवानी) कृपा करी ते लेखनो

आग्रहयुक्त थयेलो आदेश पामीने श्रीभक्तामर आदिकनी स्तुतिपूर्वक भक्तिथी पसन्न थयेला श्रीऋषभदेव प्रभुना उपासक एवा देवविशेषनी आज्ञावडे करीने पहेलो विहार अहीं श्रीकच्छदेशमां कर्यो. वली तेमां पण संवत् १६५६ वर्षे श्रीभुज नगरमां पहेलु चोमासुं अने वीजुं चोमासुं रायपुर बदरमां कर्युं वली ते समये श्रीकच्छ, मच्छुकांठा, पश्चिम, पांचाल, वागड तथा जेसल आदिक अनेक देशना स्वामी एवा तथा महाराज श्रीखेंगारजीनी गादीने शोभावनार एवा तथा व्याकरण अने काव्य आदिकोनां परिज्ञानवाला तथा तेवा प्रकारनी महत्ता स्थिरता तथा

धैर्यता आदिक गुणोवडे करीने दूर करेल छे सरस्वतीने जेमणे एवा तथा महान् अनवस्था अने विरोधनो त्याग करावनारा अने यादव वंशनी अंदर सूर्य समान एवा महाराजा राजाधिराज श्रीआरमल्लजीए विनति करवाथी श्रीगुरु महाराजे तेमनी इच्छापूर्वक विहार कर्यो. तेमज काव्य तथा व्याकरण आदिकनी गोष्ठीथी तथा स्पष्ट रीते अष्ट अवधान आदिकनो उत्कृष्ट पंडिताइनो गुण देखाडवावडे करीने खुशी करेला एवा ते राजाए श्रीगुरु महाराज प्रत्ये पोताना देशोमां जीवहिंसा न थवा देवा माटेनो (लेख करी आपवानी) कृपा करी ते लेखनो

आग्रहयुक्त थयेलो आदेश पामीने श्रीभक्तामर आदिकनी स्तुतिपूर्वक भक्तिथी पसन्न थयेला श्रीऋषभदेव प्रभुना उपासक एवा देवविशेषनी आज्ञावडे करीने पहेलो विहार अहीं श्रीकच्छदेशमां कर्यो. वली तेमा पण संवत् १६५६ वर्षे श्रीभुज नगरमा पहेलुं चोमासुं अने बीजुं चोमासुं रायपुर बदरमा कर्युं वली ते समये श्रीकच्छ, मच्छुकाठा, पश्चिम, पांचाल, वागड तथा जेसल आदिक अनेक देशना स्वामी एवा तथा महाराज श्रीखेंगारजीनी गादीने शोभावनार एवा तथा व्याकरण अने काव्य आदिकोना परिज्ञानवाला तथा तेवा प्रकारनी महत्ता स्थिरता तथा

धैर्यता आदिक गुणोवडे करीने दूर
करेल छे सरस्वतीने जेमणे एवा
तथा महान् अनवस्था अने विरो-
धनो त्याग करावनारा अने यादव
वंशनी अंदर सूर्य समान एवा महा-
राजा राजाधिराज श्रीआरमल्लजीए
विनंति करवाथी श्रीगुरु महाराजे ते-
मनी इच्छापूर्वक विहार कर्यो. ते-
मज काव्य तथा व्याकरण आदि-
कनी गोष्ठीथी तथा स्पष्ट रीते अष्ट
अवधान आदिकनो उत्कृष्ट पंडिता-
इनो गुण देखाडवावडे करीने खुशी
करेला एवा ते राजाए श्रीगुरु महा-
राज प्रत्ये पोताना देशोमां जीवहिंसा
न थवा देवा माटेनो (लेख करी
आपवानी) कृपा करी ते लेखनो

खुलासो नीचे मुजब छे हमेशां गा-
यनी बिलकुल हिंसा थाय नहीं, ते-
मज ऋषिपंचमी सहित पर्युषणना नवे
दिवसोमां,श्राऽद्पक्षमा,सघली अग्या-
रसोए,रविवारे तथा अमावास्याए ते-
मज महाराजना जन्मदिवसे तथा रा-
ज्यदिवसे पण सघला प्रकारना जी-
वोनी हिंसा न थाय एवी रीतनी
सर्व दिशाउमां अने सर्व जगोए
उद्घोषणा करावी त्यारवाद एक
वखते श्रावण मासनुं वार्षिक पर्व
पालवानी महाराजाए आज्ञा करते
छते ब्राह्मणे ते अंगीकार न कर-
वाथी तेने बोलावीने श्रीगुरु महा-
राजे शिक्षा करावी तेमज गुरु महा-
राजे कहेली श्रावण मासनी वार्षिक

व्यवस्थावाळी सिद्धांतना अर्थोनी युक्ति सांभळीने तुष्टमान थयेला राजाए श्रीगुरु महाराज प्रत्ये महेरबानी पूर्वक पोतानी मोहोर छापवाळां सात जयपत्रो आप्यां; अने प्रतिपक्षीने पराजित पत्रो एटले हारवानां पत्रो आप्यां अने तेवी रीतथी राजनीति वतावीने राजाए पोतानो उत्तम प्रकारनो न्यायधर्म श्रीरामनी पेठे सत्य कर्यो. वळी अमारा गुरु महाराजनो एटलो प्रभाव तो शुं हिसावमां छे केमके जे गुरु महाराजे श्रीमलकापुरमां वाद करवानी इच्छावाळा मूला नामना मुनिने जीतेलो छे, तेमज प्रतिष्ठान पुरमां यवनोने महोडेथी पण श्रीजैनधर्मनी जेमणे

स्तुति करावेली छे, वली एटलामां आवी मलेला एवा सेकडो गमे ब्राह्मणोने युक्तियो देखाडीने जेमणे जीतेला छे. तेमज बोरिदपुरमां वादीजना उपरी एवा देवजीने जेमणे मौन करावेलु छे ॥ १ ॥ वली जेमणे जैननी न्यायवाणीथी दक्षिण देशमां रहेला जालणानगरमां विवाद पदवीपर चमावीने दिगंबराचार्यने कहाभी मूकेलो छे, तेमज रामराजानी सभामां जेमणे आत्माराम नामना वादीश्वरने हरावेलो छे एवा ते उत्तम बुद्धिवाला श्रीविवेकहर्षगणि महाराजनी पासे राजा पण शुं हिसावमा छे ॥ २ ॥ वली अमारा श्रीगुरु महाराजना मुखमांथी नीक

लेला महान् शास्त्रोरूपी अमृतना सागरमां लीन थयेला श्रीभारमल्लजी महाराजाए श्रीऋषभदेव प्रभुनी घणी मान्यता धारण करी. तथा तेमनी भक्ति माटे ते श्रीभारमल्लजीए भुजनगरमां राजविहार नामनुं अत्यंत अद्भुत श्रीजिनेश्वर प्रभुनुं मंदिर बनाव्युं ॥ ३ ॥ हवे सं. १६५६ नी सालमां श्रीकच्छदेशनी अंदर रहेला जेसला मंडलमां विहार करनारा श्रीगुरु महाराजे घणां धनधान्योथी मनोहर थयेला एवा श्रीखाखर गामने प्रतिबोधीने सारी रीतनुं धर्मक्षेत्र बनाव्युं के ज्यांना राजा महाराजा श्रीभारमल्लजीना भाइ कुंअरश्री पंचायणजी हता के जेमणे म-

दयुक्त अने प्रवल पराक्रमे करी दि-
शाचक्रने दवाव्युं हतुं तथा जे सूर्य
सरखा प्रताप अने तेजवाला हता.
वली जेमनी पट्टराणी पुप्पांवाइ आ-
दिको हती तथा तेमना पुत्रो कुंअर
ऊजाजी, हाजाजी, नीमजी, देसरजी,
देवोजी तथा कमोजी नामना हता
के जेर्ज शत्रुर्जरूपी हाथीर्जनी श्रेणिने
हरावनामा केसरीसिंह सरखा हता.
वली त्या रहेला सेंकडो गमे ओशवा-
लोना घरोने मम्यक् प्रकारे जिनधर्म
प्रतिवोधीने तथा श्रावक सवंधी
सघली सामाचारी शीखवीने तेमणे
उत्कृष्ट श्रावक वनाव्या वली त्यां
नडीकपणुं, दान तथा शूरापणुं आ-
दिक गुणोथी उपार्जन करेला यशना

फेलावारूपी कपूरना समूहथी सुगंध युक्त करेल छे ब्रह्मांड भांड जेमणे एवा शा. वयरसी नामना गामना पटेलने तेना कुटुंब सहित श्रीगुरु महाराजे एवो तो प्रतिबोध आप्यो के, जेथी तेणे घंघर गोत्रीय शा. शिवा पेथा आदिक सहित श्रीतपागछनी राजधानी सरखो नवो उपाश्रय बनाव्यो. तेमज श्रीगुरुमहाराजना उपदेशे करीनेज गुजरातनी भूमिमांथी सलाटोने बोलावीने शा. वयरसीए श्रीसंभवनाथजीनी प्रतिमा करावी १ तथा तेना शा सायर नामना पुत्रे श्रीआदिनाथनी प्रतिमा करावी २ तथा शा. बीजा नामना पुत्रे श्रीविमलनाथ प्रभुनी

प्रतिमा करावी वली तेनी प्रतिष्ठा (अंजनशलाका) तो शा वयरसीएज स. १६५७ नी सालमां महा सुदि १० सोमवारे श्रीतपागछ नायक ज्ञट्टारक विजयसेनसूरि गुरु महाराजना हुकमथी अमारा गुरु श्रीविवेकहर्षगणिना हाथेज करावी छे. त्यारबाद आ देरासर पण अमारा गुरुना उपदेशवडे करीनेज फागण वदी १० मे उत्तम मुहूर्त्ते उपकेश गछना ज्ञट्टारक श्रीकक्कसूरिए बोधेला श्रीआणंदकुशल श्रावके उंशवाल ज्ञातिना पारिख गोत्रवाला शा वीराना पुत्र डाहा तेना पुत्र जेशा तेना पुत्र शा खाखण तथा तेना पुत्ररत्न शा वयरसीए तथा पुत्र

शा. रणवीर शा. सायर शा. महिक-
रण तथा वहुर्ड उमा, रामा अने
पुरी तथा पौत्र शा मालदेव, शा.
राजा, खेतल, खेमराज, वणवीर, दीदा
तथा वीराआदिक कुटुव सहिते प्रा-
रंच्यु. वली घंघर गोत्रवाला अने
पुनमीया कुलगुरु भट्टारकनी निश्रा-
थी श्रावक थयेला एवा शा. कंथडना
पुत्र शा. नागीया तथा मेरग नामना
सगा भाइर्ज पुत्र पांचासा सहित
तेमां मदद करनारा हता; अने ते-
मणे राजानी निर्मल कृपाथी कुटुंब
सहित तेमा मदद करेली गे. आ
श्रीशत्रुंजयावतार नामनुं देरासर गे.
संवत १६५७ ना फागुण वदी १०
मे प्रारंभेलुं गे तथा संवत १६५ए

ना फागुण सुदि १० मे अही संपूर्ण थयु छे. वली तेथी आनदथी कच्छदेशना शणगार रूप एवा श्रीखाखर नामना नगरमा कल्याण थयुं छे. संवत १६५ए ना फागुण सुदि १० मे पंडित श्रीविवेकहर्षगणिए आ जिनेश्वर जगवान्ना तीर्थ रूप मंदिरनी प्रतिष्ठा करेली छे, अने आ प्रशस्ति विद्याहर्षगणिजीए रचेली छे. संवत विक्रमनो जाणवो.

आ शिलालेखनो जीर्णोध्धार तपगच्छरूपी आकाश मंडलमां सूर्यसमान एवा श्रीविजयानद सूरीश्वरजीना (श्रीआत्मारामजी सूरीश्वरजीना) शिष्य पंडित श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराजना शिष्यरत्न मुनीश्वर

श्रीमद् हंसविजयजी महाराजना सडुपदेशथी तेमना शिष्य पन्यास पदवीने धारण करनारा श्रीमान् संपद्विजयजी महाराजनी प्रेरणाए करीने संवत १ए६ए ना अशाड वदी आठमना दिवसे थयो छे. आ शिलालेखनुं गुजराती जाषांतर जामनगरनिवासी श्रावक हीरालाल हंसराजे करेलु छे.

प्रश्न १६ए उपरना लेखमां दर्शावेलुं छे के जारमल्लजी महाराजाए जुज पत्तनमा श्रीयुगादि प्रजुनो राजविहार नामे अति अद्भुत प्रासाद बधाव्यो, तेना निर्णय माटे कोइनुं ध्यान खेचाय तो तेना दृढ पुरावारूप त्यांना देरासरमां कोइ शिलालेख छे के नहीं ?

उत्तर. श्रीकछ देशना शिरताज जुज

शहेरमां आवेला श्रीऋषभदेव स्वामीना चैत्यमां एक काव्यवध प्राचीन शिलालेख छे तेना केटलाएक अक्षरो भ्रांतिवाला होवाथी तेनो किंचित्तात्पर्यार्थ इहां आपीए छीए

प्रथमना काव्यमां जैनेन्द्रनी जाग्रत् ज्योतिनी उपासना करी छे बीजा काव्यमा कुलदीपक श्रीखेंगार नरेश्वरनी तारीफ करी छे त्रीजाथी आठमा सुधीनां काव्योमां यादववंशीय भारमल्ल भूपाल अने तेमना पुत्रोनी कारवाइनु बहु रसिलुं वर्णन करेलु छे नवमा काव्यमा श्रीभारमल्लजीए तपागछीय श्रीविवेकहर्ष महर्षिने तेडावी तेमनी पासे धार्मिक कथा करावी तेनु तथा ते महर्षिना अष्टावधानादि प्राकृताना गुणथी अने तेमनी अकल होसतथी रजीत थयेला ते कदरदान राजाए सपूर्ण देशमा गोवध बध

कराव्यो तेनुं तथा जैनोना दीक्षोजानी आवकारदायक पर्यूषणादि पर्वमां सर्व प्राणीओनो छुटको कराव्यो तेनुं व्यान करेलुं छे दशमा काव्यमां खुरानसीव जारमल्लजीए जीवोना जान वचाववा तुतल उपर करेलु अजयदान वर्णवेलु छे. अगीआरमा काव्यमां जक्ति जावनो दावो करनार एवा ते राजाए जक्ति माटे मोटा पायापर करावेला अद्भुत राजविहार नामना श्रीयुगादि प्रजुना प्रासादनी नोंध लीधी छे बारमा काव्यमां श्रीनाजेय जिननी तथा चिंतामणि पार्श्वनाथनी तथा शीतलनाथजीनी मूर्तिओ करावी निर्माय बुद्धिवाला अने मूर्तिपूजाना हिमायती एवा ते राजाए श्रीविवेकहर्षगणिनी उपदेशप्रथाने सफल करी पूज्य बुद्धि बतावी ते वर्णवेली छे. तेरमा काव्यमां श्रीतपागण गगनां-

गणमां गगनध्वज जेवा श्रीविजयसेन सूरीश्वरना प्रसादथी श्रीविवेकहर्ष वि-द्धद्दरे जूपने प्रतिबोध आप्यो तेनी सूचना करी ठे चौदमा काव्यमां रायविहारनो निर्माणकाल जाहेरनी जाण माटे मूकता संवत् १६४० ना श्रावण मासनी अजवाली पाचम जाहेर करी ठे पदरमा काव्यमा श्रीशारमल्ल जूपने प्रतिबोधवा संबंधी श्रीविवेकहर्ष सुकविनी कीर्त्तिनु वर्णन करेलु ठे सोलमा अने सत्तरमा काव्यमा अवधानमां सावधान एवा अक्षरचंचु श्रीउदयहर्षजीए निर्माण करेली प्रशस्तिमा विजयसेन सूरीश्वरनी पाटे थयेला श्रीविजयदेव सूरिनो पसाय प्रकट करवा पूर्वक पोताना गुरु श्रीविवेकहर्षगणिनी जक्तिथी आ प्रशस्ति बनावी, एवु जणावी दीधु ठे ठेवटे नेकनामदार श्री-

नारमल्लजी महाराजे आ प्रासादनु काम त्यांना प्रतिष्ठित पुरुष शा तेजा शेठ प्रमुख सकल श्रीतपगच्छना संघने स्वाधीन कर्युं, एवा अक्षरो टांकी यावच्चन्द्रदिवाकर आ प्रासादनी समृद्धि चाहीं गद्यबध सरल अने सादी नापामां ते शिलालेख संपूर्ण करेलो छे.

प्रश्न १७० तीर्थयात्रा करवाथी केवां फल प्राप्त थाय छे ?

उत्तर आरंभनो त्याग, द्रव्यनी सफलता, उंचा प्रकारनुं संघवात्सल्य, सम्यग् दर्शननी स्वच्छता, स्नेही जननुं हित, जीर्ण चैत्यादि धर्मालयोना उद्धार, तीर्थनी उन्नति, जिनशासननो उद्योत, जिनाज्ञानुं पालन, तीर्थंकरनामकर्म उपार्जनमां फतेह, सिद्धिनुं सामिप्य, देव मनुष्यनी आवकारदायक पदवी इ-

त्यादि तीर्थयात्रानां फलो श्रीकथाकोश ग्रथमा निवेदन करेला छे

॥ तद्यथा ॥

आरंभाणा निवृत्तिर्द्रविणसफलता संघवात्सल्यमुच्चैर्नैर्मल्यं दर्शनस्य प्रणयिजनहित जीर्णचैत्यादिकृत्यम् ॥ तीर्थौन्नत्यं प्रभावो जिनवचनकृतिस्तीर्थकृत्कर्मकृत्त्व, सिद्धेरासन्नभाव· सुरनरपदवी तीर्थयात्राफलानि ॥ १ ॥

प्रश्न १७१ कच्छ देशमा कोइ अति प्राचीन जिनप्रासाद हयातीमा छे के नहीं ?

उत्तर कच्छमा आवेला श्रीभद्रेश्वरमा ताजुची उपजावनारो अने एके अवाजे वखणातो एवो एक बावन जिनालयवालो मोटो जिनप्रासाद छे ते घणो

प्राचीन छे, एवुं त्यांना मूल मंदिरमां रहेला शिलालेख उपरथी साबीत थाय छे ते शिलालेखनो केटलोएक सारांश जाहेरना जाण माटे इहां आपीए छीए

प्रारंभमां त्रण काव्योथी कामितकल्पद्रुम श्रीमहावीर स्वामी अने गुणना सागर एवा श्रीपार्श्वनाथनी स्तुतिरूप मंगलाचरणपूर्वक लेखनी शरुआत करी छे तेमां जणाववामां आव्युं छे के "श्रीकच्छ देशमां भद्रावती नामे नगरी हती. ते पुरीमां महर्धिक शिरोमणि हिंमतवाज देवचन्द्र नामनो एक श्रीमान् श्रेष्टिपुंगव निवास करतो हतो ते सुश्रावके लाखो गमे द्रव्य खरची वीर संवत् २३ मां जैन लोकोनी जाहोजलाली सूचवनारुं आ देरासर बंधाव्युं, अने तेमां श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा मूलना-

यकपदे स्थापन करी ' कालांतरे गजा-रानी जींतनो जीर्णोद्धार करवा तेनु खोदकाम करता एक ताम्रपत्र नीकली आव्यु तेना उपर कोतरेला अक्षरोनो तर्जुमो श्रीयुत विजयानंद सूरीश्वर उर्फे मर्हुम मुनिराज श्रीआत्मारामजी महाराजकृत अज्ञानतिमिरभास्कर ग्रथना पृष्ठ १७६ मां छपायेलो छे ते लेखना अनुसारे पण एवीज प्रतीति थाय छे के आ अनुपम जिनालय वीरप्रभुथी २३ मा वर्षे जैनकुलदीपक देवचंद्र शेठे कराव्यु छे त्यारबाद विक्रम सवत् १३१५ ना दुष्काल वखते लोकोमां ज्यारे कगालीयत फेलाइ हती अने कमकमाट उपजावे तेवा खेदमा खरेखर ज्यारे दुनिया डुबी हती त्यारे' ११२ दानशाला खोली स्वदेश परदेशना राजाथी रक पर्यंत लाखो

१ ११२ दानशालानु वृत्तात उपदेशसार ग्रथथी लख्यु छे

मनुष्योने उदारताथी आवकार आपी अन्न पान अने वस्त्रादिकनी असाधारण मदद करीने जेणे सर्व स्थलेथी मेलवेली चंद्र समान उज्वल कीर्त्तिने युगातस्थायी बनावी हती, एवा अनुपम सौजान्यवाला साक्षात् धनददेव जेवा श्रीमान् जैनजोद्धा जगडुशाह शेठे विक्रम संवत् १३१३ मां अनर्गल द्रव्यनो व्यय करी आ श्रीजैनचैत्यनो जीर्णोद्धार कराव्यो, पण अफसोस छे के भद्रावती तो कालक्रमे हीन थती चाली त्यां हालमां भद्रेश्वर गाम वसे छे ॥ इति प्राचीनकालीनोयमितिहास ॥

त्यारबाद कच्छनरेश श्रीदेसरजी महाराजनी सहायथी यतिजी श्रीक्षांतिविजयजीए केटलोएक उद्धार करावी प्रथम जे श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा मूलनायक तरीके हती ते पाछलना शिखरबध

देरामा पधरावी, ने मूलनायकपदे श्रीमहावीर स्वामीनी मूर्ति स्थापन करी त्यारथी श्रा देरासर श्रीमहावीर जिननु छे एवी निर्विवाद जागृति थइ ॥ इत्यर्वाचीनकालीनोऽयमितिहास ॥

श्रा प्रकारे वखतने वीतता जडावती कथाशेष थइ तोपण शासन देवतानी सहायतार्थी अने श्रीसंघना प्रचुरतर पुण्योदयथी अद्यापि पर्यंत श्रा देवल श्राबाद रह्यु, ते जोइ श्रीसंघना चित्तमा परम हितकर प्रशसनीय लागणीवालो अभिप्राय उत्पन्न थयो के इहा प्रति वर्षे फागण मासमा सर्व सघनो मोटो मेलो जरी श्रा तीर्थनी मोटा आडवरथी यात्रा प्रवर्तावीए तो ठीक ते जिज्ञासाने श्रमलमां मूकवा दृढ निश्चय थतां संवत् १९३४ ना वर्षथी मेलावडानी शरुआत थइ त्यारथी वर्षोवर्ष

हजारो माणसोनो मेलो फागण शुद ५ उपर जराय ठे, अने जलयात्रानो वरघोमो काढवापूर्वक सर्व शिखरो उपर ध्वजाओ चढाववामां आवे ठे. आ चैत्य अति पुरातन कालनु होवाथी हालना वखतमां तेने जीर्ण थयेलु जोइ कच्छमांडवीना रहीश शा पीतांवरदास शांतिदासवाला शा मोणसीजाइनी जार्या मीठीवाइए ५०००० कोरीना खरचे संवत् १ए३ए मां आ श्रीमहावीर स्वामी महाराजना मंदिरनो जीर्णोद्धार कराव्यो ॥ इति सांप्रतकालीनोऽयमितिहास. ॥

प्रश्न १७२ चैत्र मासमां साधु साध्वीओ अचित रज संवंधी कायोत्सर्ग न करे तो कांइ हरकत ठे ?

उत्तर. उक्त मासमां त्रण दिन कायोत्सर्ग न करे तो एक वर्ष सुधी सूत्रनो

स्वाध्याय न थइ शके एवु श्रीआवश्यक-
जीमा निरूपण छे

॥ तथाहि ॥

चेतपख सुध्दसमीए अवरन्हे जोग निखिवति दसमीतो परए जावपोणिमा एछतरे तिन्निदिएाउवरुवरीं अचित्तरयोग्घाम्रावएाकाउसग्गंकरेंति तेरसिमादीसु वा तीसुदिएेसु तो सान्नाविगेपडंतेवि सवछरं सज्जाय करेंति अह तं उस्सग्गं न करति तो सान्नाविगेविपडते सज्झायं न करेंति॥

प्रश्न १७२ महान् शास्त्रकारोए साधुपणाने केवु वर्णवेलुं छे ?

उत्तर जेमा राजानो के चोरोनो जय नथी, जे उत्तम कीर्त्ति अर्पण करे छे, जेनामां मनुष्य अने देवोनु हित समायेलु छे, जेनाथी आलोक परलोकमां

सुख थाय छे, एवु आ साधुत्व अत्यंत रमणीक छे.

वली ज्यां जिनराज देव छे, शांतनिधि गुरु छे, कृपासमुद्र धर्म छे, शुद्ध अन्नपान अने वस्त्रवडे प्रवर्त्तन छे, चिदानंद माटे विद्या छे, शरीररक्षा माटे क्षमा छे, गुणमणिमालानो मोटो शणगार छे, तेवा श्रमणपणाने पामीने कल्पवृक्षना लाभनी माफक कयो माणस खुशी न थाय ? अलबत हरेक कोइ खुश थायज

॥ तथाहि ॥

न च राजभयं न च चौरभयं
वरकीर्त्तिकरं नरदेवहितम् ॥
इहलोकसुखं परलोकसुखं,
श्रवणत्वमिद रमणीयतरम् ॥१॥
देवो यत्र जिनो गुरुः शमनिधिर्ध-

र्म्मः कृपावारिधिः, शुद्धैर्वर्त्तनमन्न-
पानवसनैर्विद्या मनःप्रीतये ॥
रक्षार्थं वपुषः क्षमा गुणमणि-
श्रेणिः परं भूषणं, श्रामण्यं तदवाप्य
मायति न कः कल्पद्रुमासौ यथा ॥

प्रश्न १७४ सूर्योदय वखते अमुक तिथिनो टाइम अल्प होय अने तेज दिवसे बीजी तिथिनो टाइम घणो होय तो कइ तिथि प्रमाण राखवी ?

उत्तर सूर्योदय वेलामां जे तिथि होय तेज प्रमाण थाय छे ते सिवायनी घणा टाइमवाली इतर तिथि स्वीकारवामा आवे तो आज्ञाभंग, अनवस्था, मिथ्यात्व अने विराधना दोषने पामे एवु श्रीनिशीथ भाष्यमा निवेदन करेलु छे.

॥ तथाहि ॥

उदयम्मि जा तिहि सा, पमाणमिअरी

कीरमाणीए ॥ आणाभंगणवहा, मि-
च्छत्त विराहणं पावे ॥१॥

प्रश्न १७५ कोइए प्रतिदिन पोसह कर्यो होय तेवो कोइ शास्त्रीय दाखलो छे ?

उत्तर. वृदारुवृत्तिमां एवो एक दाखलो छे के एकदा प्रस्तावे जिनदेव श्रावक पोताना लघु भ्राताने कुटुंबभार सोंपी हंमेश विधिपूर्वक पोसहशालामां पौषध करवा लाग्यो

॥ तथाहि ॥

कुटुंबभारमारोप्य, जिनदेवोऽन्य-
दाऽनुजे ॥
पौषधं पौषधागारे, प्रत्यहं विधि-
वद् व्यधात् ॥ १ ॥

प्रश्न १७६. तपरूप घरट्ट केवो छे अने ते शुं करे छे ?

उत्तर. क्षमारूप माकडीवालो, दृढ-

तारूप हाथावालो अने मनरूप मजबूत खीलावालो तपरूप तीव्र घरट्ट कर्मरूपी धान्यनो चूरो करे छे

॥ तदुक्तं श्रीपालचरित्रे ॥

तपस्तीव्रघरट्टोयं, क्षमामर्कटिकान्वितः
धृतिहस्तो मन कीलः, कर्मधान्यानि चूरयेत् ॥ १ ॥

प्रश्न १७७ चिंता अने चिता ए बेमा अधिकता कोनी छे ?

उत्तर चिंता चिताथी पण अधिक छे, कारणके चिंता शब्द अनुस्वार युक्त होय छे अने चिताने ते होतो नथी वली चिता तो एकवारज शरीरने बाले छे, त्यारे चिंता सतत देहने दग्ध करे छे

॥ उक्तं च श्रीपालचरित्रे ॥

चिंता चितातोऽप्यधिका–नुस्वारेण युता यत ॥

चिंतैकशो दहेद्देहं, चिंता दहति सर्वदा ॥ १ ॥

प्रश्न १७८. पासथ्थादिकने वांदवामां काइ नुकशान छे ?

उत्तर पासथ्थादिकने वंदन करनारनी कीर्त्ति के कर्मनिर्जरा होती नथी, पण ते कायक्लेश तथा कर्मबंध करे छे

॥ यदुक्तं श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमे ॥

पासत्थाई वंदमाणस्स, नेव कित्ती न निज्जरा होइ ॥ कायकलेस एमेव, कुणइ तह कम्मबधं च ॥ १ ॥

प्रश्न १७९ महान् नरो उपर कोइ कष्ट आवी पडे त्यारे अने ग्रहण लागे त्यारे जिज्ञासा जाग्रत राखनार मनुष्ये केवी रीते वर्तवु ?

उत्तर. देव, साधु, राजा अने स्व-

जनो कष्टमां आवी पडे त्यारे अने ग्रहण वेलाए विवेकी माणसे छती शक्तिए भोजन न करवु

॥ प्रोक्तं च श्राद्धविधौ ॥

देवसाधुपुरस्वामि,स्वजनव्यसने सति
ग्रहणे च न भोक्तव्य, शक्तौ सत्यां विवेकिना ॥ १ ॥

उपर बतावेला श्लोक उपरथी साबीत थाय छे के ग्रहणना दिवसे जे लोको पाणी प्रमुख पदार्थोने फेकी दे छे अने मृन्मय भाजनोने फोडी नाखी स्नानादिकनो मोटो आरंभ करे छे ते निरर्थक छे जो सार्थक होय तो घृतादि बहु मूल्यवाला पदार्थो फेकी दइ कांच प्रमुखना भाजनोने केम फोडी नाखता नथी ? आवा परस्पर विरुद्ध आचरण तो केवल उपहास्यजनक होय छे वास्ते

सुज्ञ जनोए आ हानिकारक रीवाज पण वेशक तावडतोव ढवावी देवो जाइए, कारणके महाभारतादिकमां पण कह्युं ठे के जेटलुं पाप माठीमारने एक वर्षमां थाय ठे तेटलु पाप अगलित पाणी ग्रहण करी वापरनारने एक दिवसमां थाय ठे

॥ तथाहि ॥

संवत्सरेण यत्पाप, कैवर्त्तस्येह जायते ॥

एकाहेन तदाप्नोति, अपूतजलसंग्रही ॥ १ ॥

प्रश्न १०० गृहस्थ लोकोना पत्रमां ' श्रीपंच ' लखवामां आवे ठे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर. नीचे वतावेली पांच प्रकारनी लक्ष्मीथी युक्त गृहस्थ होय ठे, वास्ते 'शाह श्रीपच' लखवामां आवे ठे.

॥ तथाहि ॥

प्रथम धान्य ने बीजे धन, त्रीजे स्त्री ने चोथे तन ॥ पाचमे होय पशुनो संच, लखाय कागलमा श्रीपच ॥१॥

प्रश्न १०१ हरेक कोइ साधु उपधाननी क्रिया करावी शके के नहीं ?

उत्तर तरंवतरंगिणी नामना शास्त्रमां कह्युं छे के महानिशीथ सूत्रादिना योगानुष्ठान करनाराउंएज उपधानादिक करावबु युक्त छे, पण योगोद्वहन कर्या सिवायना मुनिउंए उपधानादि क्रिया करावबी योग्य नथी तथापि कोइ करावे तो जिनाज्ञा भगादि दोषवडे ससारमा परिभ्रमण करवानो प्रसग आवे ते हेतुथी हरेक मुनिए उपधान क्रिया करावबी नहीं

॥ तथाहि ॥

कृतमहानिशीथादियोगानुष्ठानानामे

वोपधानवाद्नादियुक्त नेतरेषामाज्ञा-
न्नंगादिदोषैःसंसारपरिभ्रमणप्रसगात्

प्रश्न १०७ जैन सिद्धांतमां अपश-
कुन के डुर्निमित्तना प्रतिघातनो कोइ
हितकर उपाय वतावेलो छे ?

उत्तर जो कदापि वहार के ग्रामां-
तरे गमन करतां अथवा वीजा कोइ
कार्यना प्रारंभमां वस्त्रादिनुं स्खलन वा
अपशुकन के डुर्निमित्त थाय तो ते स-
र्वेना प्रतिघातने वास्ते पंच मंगलरूप
आठ श्वासोह्वास प्रमाण नवकार मंत्रनुं
ध्यान करवु, अथवा गमे ते स्वाध्याय
रूप वे श्लोकनुं चिंतवन करवुं तेम न
वने तो जेटला कालमां वे श्लोकनुं चि-
तवन करी शकीए त्यां सुधी तेज वखते
एकाग्रचित्ते कायोत्सर्गमां स्थित थइ
शुभ अत करणवाला थवु आ प्रकारनुं

फरमान जैन धर्मना पवित्र पुस्तक श्रीव्य-
वहार सूत्रनी वृत्तिमां छे.

॥ तथाहि ॥

इहयदि वहिर्गमने प्रयोजनांतरप्रारम्भे वा वस्त्रादे स्खलन भवति आदिशब्दात् शेषाऽपशकुनदुर्निमित्तपरिग्रहः तेषु सर्वेषु स्खलनादिषु समुपजातेषु तत् प्रतिघातनिमित्त पंचमंगलमष्टोच्छ्वासप्रमाण नमस्कारसूत्रं ध्यायेत् यदि वा यौ वा तौ वा स्वाध्यायभूतौ द्वौ श्लोकौ चिंतयेत् अथवा यावता कालेन द्वौ श्लोकौ चिंत्येते तत्क्षण तावत काल एकाग्र. कायोत्सर्गस्थ. सन् शुभमना भूयात् ॥

प्रश्न १०३ औषध अने भेषजमा शो फरक छे ?

उत्तर औषधमा अनेक वस्तु मळेली

होय छे, तेम ज्ञेषजमां द्रव्यसंयोग होतो नथी अथवा हरडे प्रमुखने औषध कहेवामां आवे छे, त्यारे पीवा प्रमुखमां वपराती दवाने ज्ञेषज कहेवाय छे

॥ यदुक्तं गच्छाचारलघुटीकायाम् ॥

॥ तथाहि ॥

तत्रौषधमनेकद्रव्यसंयोजितं तद्व्यतिरिक्तं ज्ञेषजं यद्वा औषधं हरीतक्यादि ज्ञेषज पेयादि च ॥

प्रश्न १७४. सारंजी श्वेत वस्त्रवाला गच्छने सेववो के केम ?

उत्तर. खाटकीगृह सदृश्य घंटी, उखल, चुल्लक, जलगृह अने सावरणीना आरंजमां प्रवर्त्तनार अने समुद्रफेन जेवा सफेद वस्त्रना वेषवडे उज्वल एवा गच्छने सेववो नही, एवु गच्छाचार सूत्रनुं फरमान छे

॥ तद्यथा ॥

सूणारंजपवत्त, गढं वेसुजालं न
सविज्ञा ॥

॥ टीका यथा ॥

शुनारंजप्रवृत्तं षड्जीवमर्दनपर
खंडन्याद्यारंजकर्तारं वा गढं साध्वा
जासगण वेषेण कल्पकवलीचोलपट्ट
रजोहरणमुखपोतिकादिलक्षणेनेप-
थ्येन साधुद्रव्यलिंगेनेत्यर्थः उज्वल
सागरडंडीरवत् परमश्वेत वेषोज्वल
न सेवेत हु खलहु संसारवर्द्धकत्वात्॥

प्रश्न १७५ निर्जरा अने मोक्षमा श
फरक छे ?

उत्तर गछाचार पयन्नानी टीकाम
जणाववामा आव्यु छे के मोटा प्रज्ञावि
गछमा निवास करनारा साधुओ विस्ती
निर्जरा करवापूर्वक मोक्ष मेलवी शके

छे त्यां निर्जरा अने मोक्षनो तफावत दर्शावतां निर्जराने देशकर्मक्षयरूप अने मोक्षने सर्वकर्मक्षयरूप वतावेल छे

॥ तथाहि ॥

महाननुज्ञावः प्रज्ञावो यस्यासौ महानुज्ञाव तत्र गछे वसतां वासंकुर्वतां निर्जरा देशकर्मक्षयरूपा उपलक्षणत्वात् सर्वकर्मक्षयरूपो मोक्षो ज्ञवतीति शेष. ॥

प्रश्न १०६ एकी वखते वावीश परीपह वेदवामां आवे के नहीं ?

उत्तर. नवमा गुणस्थान सुधी सर्वे परीपहनो संज्ञव छे, पण वेदवामा तो वीशज परीपह आवे छे, कारणके जे समयमां शीतनो अनुज्ञव करे ते समयमां उष्णत्व वेदे नहीं, अने जे समयमां उष्णत्वना अनुज्ञव होय ते समये शीतत्व

॥ तद्यथा ॥

सूणारंभपवत्त, गहं वेसुजलं न सविज्जा ॥

॥ टीका यथा ॥

शुनारंभप्रवृत्तं षड्जीवमर्दनपर खंडन्याद्यारंभकर्तारं वा गह्न साध्वाभासगण वेषेण कल्पकवलीचोलपट्ट-रजोहरणमुखपोतिकादिलक्षणनेपथ्येन साधुद्रव्यलिंगेनेत्यर्थ उज्वलं सागरडंडीरवत् परमश्वेत वेषोज्वलं न सेवेत ङ खलदु संसारवर्द्धकत्वात्॥

प्रश्न १०५ निर्जरा अने मोक्षमां शो फरक छे ?

उत्तर गच्छाचार पयन्नानी टीकामा जणाववामां आव्यु छे के मोटा प्रभाविक गच्छमा निवास करनारा साधुउं विस्तीर्ण निर्जरा करवापूर्वक मोक्ष मेलवी शके

छे त्यां निर्जरा अने मोक्षनो तफावत दर्शावतां निर्जराने देशकर्मक्षयरूप अने मोक्षने सर्वकर्मक्षयरूप बतावेल छे

॥ तथाहि ॥

महाननुभाव. प्रभावो यस्यासौ महानुभाव. तत्र गछे वसतां वासंकुर्वतां निर्जरा देशकर्मक्षयरूपा उपलक्षणत्वात् सर्वकर्मक्षयरूपो मोक्षो भवतीति शेष. ॥

प्रश्न १०६ एकी वखते बावीश परीषह वेदवामां आवे के नहीं ?

उत्तर. नवमा गुणस्थान सुधी सर्व परीषहनो संभव छे, पण वेदवामां तो वीशज परीषह आवे छे, कारणके जे समयमां शीतनो अनुभव करे ते समयमां उष्णत्व वेदे नहीं, अने जे समयमां उष्णत्वना अनुभव होय ते समये शीतत्व

वेदे नहीं, तेमज जे समये चर्या अनुभवतो होय ते समये नैषेधिकीनो अनुभव होय नहीं, अने जे समये नैषेधिकी होय ते समये चर्या होय नहीं

॥ ह्येतदपि गच्छाचारटीकायां प्रोक्तमस्ति ॥

॥ तद्यथा ॥

नवमगुणस्थानकं यावत्सर्वे परीषहाः सन्नवंति पुनर्वेदयंति विंशतिमेव यतो यस्मिन् समये शीतं वेदयति न तस्मिन् उष्णत्व वेदयति यस्मिन्नुष्ण तस्मिन् शीतं न तथा यस्मिन् चर्यां वेदयति तस्मिन्नैषेधिकीं नयस्मिन्नैषेधिकीं तस्मिन् चर्यां न वेदयतीति ॥

प्रश्न १०७ सचित माटी के पाणीमा

थइ गमन करवानुं आवी पके त्यारे साधु साध्वीए वेमांथी कयो रस्तो लेवो ?

उत्तर जलमां माटी अने त्रसादि अनेक जीवोनो संनव होवाथी जलमार्ग गेमी स्थलमार्ग उपर चालवुं

प्रश्न १०० सचित माटी के वनस्पति सिवायनो मार्ग न होय तो केम करवु ?

उत्तर वनस्पतिमां पण तेज पूर्वोक्त दोषनो संनव होवाथी त्यां न चालतां पृथ्वी उपर चालवु

प्रश्न १०ए सचित माटी के त्रस जीववालो रस्तो होय तो क्या जवु ?

उत्तर त्रस जीव रहित अथवा विरल त्रस जीववाला मार्गे यत्नाथी जवु, पण जो निरंतर त्रस जीव पथराइ गया होय तो मृत्तिकावाला मार्गे जवुं

प्रश्न १९० एक तरफ जल अने बीजी तरफ वनस्पति होय तो कयो रस्तो लेवो ?

उत्तर उदकमां नियमथी वनस्पतिनो सद्भाव छे माटे अप्कायनी विराधना उपरांत बीजी पण हिंसा थाय छे तेथी वनस्पतिवालो मार्ग लेवो उपर बतावेला चार प्रश्नोनो खुलासो गच्छाचार टीकामां नीचे मुजब आपेलो छे

॥ तथाहि ॥

पृथिव्युदकयोर्गमने प्राप्ते पृथिव्यां गम्यं उदके पृथ्वीत्रसादिसद्भावात् ॥ १ ॥ पृथिवीवनस्पत्यो. पृथिव्या च गम्य वनस्पतौ तद्दोषसंभवात् ॥ २ ॥ पृथिवीत्रसयोस्त्रसरहिते विरलत्रसे वा गम्यं निरतरे तु पृथिव्याम् ॥ ३ ॥ जलवनस्पतिकाययोर्व-

नस्पतिना गम्यम् उदके नियमाद्वन-स्पतिसद्भावात् ॥ ४ ॥

प्रश्न १९१. गीतार्थ मुनि कोने कहेवा ?

उत्तर वर्तमान कालमां जे श्रुतज्ञान वर्त्ते छे तेनो गुरु परंपराथी अर्थ ग्रहण करनार एटले अर्थ निश्चय करनार गीतार्थ कहेवाय छे

॥ उक्तं च गच्छाचारटीकायाम् ॥

वर्तमानकाले यत्सूत्रं वर्त्तते तस्य गुरुपरपरया गृहीतार्थाः विनिश्चितार्थाः गीतार्था भवंति ॥

प्रश्न १९२ साधुजने विचरतां कदापि रस्तामां नाव प्रमुखथी उतरया तेवुं नदी आदिकनुं जल आवे त्यारे केम करवुं ?

प्रश्न २९० एक तरफ जल अने बीजी तरफ वनस्पति होय तो कयो रस्तो लेवो ?

उत्तर उदकमां नियमथी वनस्पतिनो सद्भाव छे माटे अप्कायनी विराधना उपरांत बीजी पण हिंसा थाय छे तेथी वनस्पतिवालो मार्ग लेवो उपर बतावेला चार प्रश्नोनो खुलासो गच्छाचार टीकामां नीचे मुजब आपेलो छे

॥ तथाहि ॥

पृथिव्युदकयोर्गमने प्राप्ते पृथिव्यां गम्य उदके पृथ्वीत्रसादिसद्भावात् ॥ १ ॥ पृथिवीवनस्पत्यो पृथिव्या च गम्य वनस्पतौ तद्दोषसंभवात् ॥ २ ॥ पृथिवीत्रसयोस्त्रसरहिते विरलत्रसे वा गम्य निरंतरे तु पृथिव्याम् ॥ ३ ॥ जलवनस्पतिकाययोर्व-

नरपतिना गम्यम् उदके नियमाद्वन-स्पतिसद्भावात् ॥ ४ ॥

प्रश्न १ए१. गीतार्थ मुनि कोने कहेवा ?

उत्तर वर्तमान कालमां जे श्रुतज्ञान वर्त्ते ठे तेनो गुरु परंपराथी अर्थ ग्रहण करनार एटले अर्थ निश्चय करनार गीतार्थ कहेवाय ठे

॥ उक्तं च गच्छाचारटीकायाम् ॥

वर्तमानकाले यत्सूत्रं वर्त्तते तस्य गुरुपरपरया गृहीतार्थाः विनिश्चितार्थाः गीतार्था नवंति ॥

प्रश्न १ए२. साधुर्डने विचरतां कदापि रस्तामां नाव प्रमुखथी उतरया तेवुं नदी आदिकनुं जल आवे त्यारे केम करवुं ?

उत्तर• होनी प्रमुखथी उतराय तेवु नाना प्रमाणवालु जल आवे त्यारे नीचे बताव्या मुजब यत्न करवो जेमके बे योजन अर्थात् आठ गाउ फरीने पग रस्ते जवातु होय तो नावमां न वेसवु कदापि स्थल मार्गे शरीर तथा उपगरणना नाश करनारा चोर, सिंह के हाथी होय अथवा ते मार्गे योजन के उतरवानी जगा न मले तेवु होय तो दोढ योजन संघट्टे जवु, एटले घुटण नीचे अडधी जंघा सुधीना पाणीमा जवु, पण नावमा न वेसवुं जो उक्त संघट्ट प्रमाण जलवालो मार्ग न होय अने होय तो सदोष होय तो एक योजन सुधीना फेरवाला नाभिप्रमाण जलमा जवु, पण नावमा नहीं वेसवुं जो नाभिप्रमाण जलवालो लेप मार्ग पण नथी अने छे तो पूर्वोक्त दोषयुक्त छे, त्यारे तो अर्ध योजनना फेरवाला लेपोपरी

मार्गे जवुं अर्थात् नाजिथी वधारे जल-
वाला मार्गे जवुं, पण नावमां न वेसवु.
हवे तेवो मार्ग पण न होय अने
होय तो सदोप होय त्यारे छेवटे नावमां
वेसीने पण उतरवु एवीज रीते दोढ
योजनना चक्रवाला स्थलमार्गे जवुं, पण
नाजि उपरना जलमां न उतरवुं स्थल
मार्ग न होय अथवा सदोप होय तो एक
योजनना संघट्टे अर्थात् अर्ध जंघाप्रमाण
जलमार्गे जवुं, परंतु नाजि उपरना ज-
लमां न उतरवु. हवे संघट्ट प्रमाण जल-
मार्ग पण न होय अथवा सदोप होय
तो अर्ध योजनवाला लेपमार्गे एटले ना-
जिप्रमाण जलमार्गे जवुं, पण नाजि उ-
परना जलमां न उतरवु एज प्रमाणे
एक योजनना चक्रमार्गे स्थलमां जवुं,
पण नाजिप्रमाण जलवाला लेपमार्गे न
जवु कदापि स्थलमार्ग न होय अने

॥ १ ॥ सढजोयणवकेणं, थलेण ले- वोवरिं च वज्जेइ ॥ अ‹ढजोयणलेवेण १ संघट्टेणेगजोयणेणं च ॥ २ ॥ २ ॥ एगजोयणथलेणं, संघट्टेण‹ढजोयणे- ण मुणी ॥ लेवं वज्जइय तहा, घट्टं अ‹ढजोयण थलेण ॥ ३ ॥ एवं म- ग्गाजावे, नावाइर्हिपि कारणे मुणि- णो ॥ गछंतस्सवि दोसो, न कोवि जणिउं जिणंदेर्हिं ॥ ४ ॥

प्रश्न १९२ गुरुने वंदन करवाथी शो लाज ?

उत्तर. गुरुने वंदना करवाथी अन्त्यं- तर तपनो लाज छे, कारण के ते विनय- रूप छे एवुं श्रीमलयगिरिनिर्मित आवश्यकवृत्तिना प्रथम खंममां द- र्शाव्युं छे.

॥ तद्यथा ॥

वंदनस्य विनयरूपत्वात् तस्य चाभ्यंतरतपोभेदत्वात् ॥

तथा श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमा २९ मा अध्ययनमां पण कह्युं छे के श्रीगुरुवंदन करवावडे नीच गोत्रकर्म खपावे, अर्थात् नीच गोत्रमां अवतरे नहीं, उच्च गोत्रकर्म बांधे, एटले उच्च गोत्रमां अवतरे सौभाग्यपणु याने सर्वलोकवल्लभत्व हासल करवापूर्वक अप्रतिहत एवुं आज्ञाफल उत्पन्न करे, अर्थात् कोइथी पण निवारण न करी शकाय तेवुं आज्ञाप्रधान प्रभुत्व निपजावे, तेमज वली दाक्षिण्यभाव एटले सर्व लोकना अनुकूलत्वने जन्म आपे

॥ तत्सूत्र यथा ॥

वदणएणं नीयगोय कम्म खवेइ उच्चगोय कम्मं निबंधइ सोहग्गं च

अप्पडिहयं आणाफलं निवत्तेइ दाहिणाभावं च जणयइ ॥

प्रश्न १९४. आगमनो अक्षरार्थ शो छे?

उत्तर जेनावडे सर्व प्रकारे वस्तुतत्त्व जाणीए तेने आगम कहीए आ प्रकारे श्रीमलयगिरिविरचित आवश्यक वृत्तिमा अक्षरार्थ करेलो छे, अने ते श्रुत ज्ञाननु नामांतर छे.

॥ तद्यथा ॥

आसमंतात् गम्यते वस्तुतत्त्वमनेनेत्यागमः श्रुतज्ञानम् ॥

प्रश्न १९५ धारणा कोने कहेवी, अने ते केटला प्रकारनी छे?

उत्तर निर्णय करेला अर्थने याद राखवो तेनुं नाम धारणा छे, अने ते अविच्युति, वासना अने स्मृति एवा

त्रण प्रकारनी छे तेनो अर्थ आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिमां श्रीमलयगिरि महाराजे आ प्रकारे करेलो छे निर्णीत अर्थना उपयोगथी अंतर्मुहूर्त्त सुधी नहीं पतित थवु तेनु नाम अविच्युति धारणा छे तेणे करेला संस्कारने वासना नामनी धारणा कहे छे ते वासना संख्याता अथवा असंख्याता काल सुधी रहे छे तेनो तात्पर्यार्थ एवो छे के संख्यात वर्षनी उमरवालाने संख्यात काल यावत् अने असंख्य वर्षनी जींदगीवालाने असंख्येय काल सुधी होय छे त्यारबाद कालांतरे कोइक तेवा पदार्थने देखवा प्रमुखना कारणने लइ संस्कार स्फुट थये छते एवु ज्ञान थाय छे के तेज आ पदार्थ छे के जे प्रथम मारा जाणवामा आव्यो हतो आवा प्रकारनी स्मृति धारणा होय छे

॥ पूर्वोक्त वृत्तिलेशो यथा ॥

तस्यैवार्थस्य निर्णीतस्य धरणं धारणा सा च त्रिधा । अविच्युति-र्वासना-स्मृतिश्च । तत्र तदुपयोगाद्-विच्यवनमविच्युति ।सा चांतर्मुहूर्त्त-प्रमाणा ततस्तया आहितो यः संस्कारः सा वासना सा च संख्येय-मसंख्येय वा कालं यावद्भवति संख्ये-यवर्षायुषां संख्येयं कालमसंख्येयव-र्षायुषामसंख्येय कालमिति भावार्थः। ततः कालांतरे कुतश्चित्तादृशार्थदर्श-नादिकात् कारणात् संस्कारस्य प्र-बोधे यत् ज्ञानमुदयते तदेवेदं य-न्मया प्रागुपलब्धमित्यादिरूप सा स्मृति ॥

प्रश्न १७६. नाम, स्थापना अने द्रव्य

ए त्रण तात्त्विक ठे के केवल जावज तात्त्विक ठे ?

उत्तर श्रीआवश्यक सूत्र वृत्तिमां मगलना अधिकारे श्रीमलयगिरिजी महाराज फरमावे ठे के नाम, स्थापना, द्रव्य ए त्रणे जाव मंगलना अंगरूप होवाथी तात्त्विक ठे तेज वातनी साबीती आपे ठे के मगलिक एवु सिद्ध महाराजादिकनु नाम सांजलीने अथवा अरिहंत जगवान्नी प्रतिमानां दर्शन करीने किंवा जूतकालमां साधुत्व पालनार साधुना मृतक शरीरने के जावीकालमा साधुपणु पालनार वालकना शरीरने जोइने प्राये कोइक निकट मोक्षगामीने सम्यग् दर्शनादिरूप जाव मंगलना परिणाम थाय ठे वास्ते खरु जोता ए चारे निक्षेपा यथार्थ ठे. तेमा काइ पण शक नथी

॥ तथाहि ॥

नामस्थापनाऽव्याणि तात्त्विकानि जावमंगलांगत्वात् तदंगता च तत् परिणामकारणत्वात् ॥ तथाहि ॥ मंगलान्निधानं सिद्धाद्यभिधानं चोपश्रुत्य जगवदर्हत्प्रतिमां वा दृष्ट्वा नूतयतिजावं जव्ययतिजाव वा शरीरं चोपलज्योपजायते प्रायः कस्याप्यासन्नमुक्तिगामिनः सम्यग्दर्शनादिरूपजावमंगलपरिणामः ॥ उक्तं च ॥ अहवा नामं ठवणा, दवाइं जावमंगलगाइ ॥ पाएण जावमंगल, परिणामनिमित्तजावातो ॥ १ ॥

प्रश्न १७७. चक्षुओने फायदो अने नुकशान शाथी पहोचे छे ?

उत्तर चक्षुओने फायदा नुकशाननां

अनेक कारणो छे ते पैकी आ पण एक छे के कठोर किरणोथी पसार पामता सूर्य सन्मुख चिरकाल पर्यंत जोइ रहे-नारना चक्षुमां हानि पहोंचे छे, अने चंद्रकिरणकलाप तथा कल्लोलमालाथी शोभितुं जल तथा लीलां फाडनी घटाने निहालनारनां नेत्रमां फायदो थाय छे, कारणके सूर्यनां तीक्ष्ण किरणो, चंद्रनां शीतल किरणो, कल्लोलमालाने स्पर्शेला पवन अने वृक्षघटानी छायामा पसार थइ आवेलो ठंडो पवन तेमां निमित्त-भूत थाय छे

॥ उक्तं च तदेवावश्यकवृत्तौ ॥

जरठकरप्रसरमऽभिसर्प्पयंतमं-शुमालिनं चिरविलोकमानस्य भवति चक्षुषो विघातः । शशांककरनिकरं तरंगमालोपशोभितजलं शाडलतरु-मंडलं वाऽलोकमानस्यानुग्रह ॥

प्रश्न १ए७. केटलाएक परवादीर्ठ शब्दने आकाशनो गुण माने ठे ते समीचीन ठे के नहीं ?

उत्तर शब्दने आकाशनो गुण मानवो डुरस्त नथी, कारणके तेम मानवाथी शब्दनी अंदर अमूर्त्ततानो प्रसंग आवे ठे. ए वात सिद्ध ठे के जे वस्तुनो जे गुण होय ते वस्तुना समान धर्मवालो होय ठे जेमके आत्मा अरूपी ठे तो तेनो ज्ञानगुण पण अरुपी ठे एवी रीते शब्द पण जो आकाशनो गुण होय तो आकाश अमूर्त होवाथी तेनो गुण जे शब्द ते पण अमूर्त होवो जोइए, परतु तेनु लक्षण इहां लागु न पमवाथी आ वावत सयौक्तिक नथी. (मूर्तिविरहोह्यमूर्त्तता) ए अमूर्त्ततुं लक्षण ठे; अने शब्दमां तो मूर्तिविरह ठे नहीं, कारणके तेनो स्पर्श थाय ठे. तेज वातनी सावीती आपे ठे के स्पर्श-

वाला शब्दो होय छे, केमके पाषाणनी माफक शब्दसघट्टथी पण उपघात जोवामा आवे छे आ आपेलो हेतु कांइ असिद्ध नथी, कारणके तत्काल जन्मेला वालकोना कान पासे गाढ जोरे वजावेला झल्लरीना झारकार अवाजथी तेमना काननु फुटवु आपणे जोइ शकीए छीए आ प्रकारना उपघातनु करवापणु स्पर्श विना सम्भवतु नथी जेमके आकाशमा स्पर्श नथी तो ते कोइनो उपघात पण करी शके तेम नथी ते कारणथी विपक्षमां जवाना असम्भवे आ हेतु अनैकान्तिक पण नथी अतएव शब्दो स्पर्शवाला छे केमके पथ्थरनी माफक तेमनो आघात थवाथी गिरिगुफादिकमां शब्दो उत्पन्न थाय छे आ हेतु बन्ने पक्षवाला कवुल राखे छे ते एवी रीते के तीव्र प्रयत्नथी उच्चारण करेला शब्दना

आघातथी गिरिगुफादिकमां दरेक दि-
शाए फेलाता शब्दोने आपणे सांजलीए
ठीए, तेथी ते स्पर्शवाला सिद्ध थाय ठे,
अने स्पर्शवाला होवाथी ते मूर्त्तिमान्
पण ठे. (रूपस्पर्शादिसन्निवेशो मूर्त्तिः)
एवुं वचन ठे. तेथी केवी रीते तेओ श-
ब्दोनुं आकाशगुणत्व सिद्ध करे ठे ए
अमे समजी शकता नथी अपरंच आ-
काश एक ठे के अनेक? जो एक ठे तो लाख
योजनथी पण शब्द संजलावो जोइए, का-
रणके आकाशमां एकत्व अने शब्दमां त-
द्गुणता होवाथी निकट दूरादि जेदनो अ-
जाव ठे जो अनेक आकाश ठे एम
मानवामां आवे तो वदनदेशमां रहेलो
ते शब्द बीजी जगाए रहेला श्रोता-
जनो शी रीते सांजली शके? केमके
मुखस्थानस्थ आकाशना गुणत्ववाला ते
शब्दोनो सांजलनारना कर्णगत आका-

शनी साथे संबंध नथी वली आक्षेप करवामां आवे छे के शब्दने आकाशनो गुण मान्या विना तेनी स्थिति थइ शकती नथी अने पदार्थ मात्रने स्थित थवु ए तो आवश्यक छे, तेमां रूप रस गंध स्पर्शना आश्रय तो पृथ्वी आदि चार महाभूत छे, त्यारे शब्दनो आश्रय आकाश ए स्वत सिद्ध समजाय छे आ पण तेउंनु मानवु अयुक्त छे. एम मानवाथी तो अलबत पृथ्वी प्रमुखमां पण आकाशना गुणत्वनो प्रसंग आवशे केमके ते पण आकाशमाज रहे छे जो एम कहेवामां आवे के आश्रयण मात्र तेना गुणनु निबधन नथी किंतु समवाय छे, अने ते संबंध तो शब्दनो आकाश साथे छे पण पृथ्व्यादिकनो समवाय गगन साथे नथी त्यारे अमे पूछीए छीए के तमे समवाय

कोने कहो छो ? शुं पृथ्वी प्रमुखनो रू-
पादि साथे जेम संबंध छे तेम आप-
समां एकमेक साथे लोली भावथी र-
हेवुं तेने कहो छो ? जो एम कहो तो
ते बनी शके तेम नथी केमके शब्दनो
आकाशगुण गगन साथे एकमेक लोली
भावथी कोइने पण स्वीकृत नथी वली
एम कहेवामां आवे के शब्द आका-
शमां मालुम पडे छे, तेथी आकाशनो
गुण कहीए छीए बस त्यारे तो आका-
शमांना तूलने पण गगननो गुण कहो,
केमके ते अर्क तूल पण आकाशमां उ-
पलभ्यमान थाय छे तेमां वली एम क-
हेवा मागशो के अर्क तूलादिकनुं तो
परमार्थथी भूम्यादि स्थान छे अने आ-
काशमां तो वायुसंचारथी उपलभ्य था-
य छे जो एम छे त्यारे तो अमे पण
अलबत कही शकीए छीए के शब्दनुं

पण परमार्थथी कर्णादि स्थान छे, बल्के आकाशमां अवस्थिति तो पवननी प्रेरणाना वशथी थाय छे तेज वातनो पुरावो आपीए छीए के जे जे तरफ वायुसचार थाय छे ते ते तरफ शब्द पण जाय छे, तेथीज आपणे पवनप्रतिकूल दिशामा शब्द सांभली शकता नथी आ बाबतमा प्रज्ञाकर गुप्ते पण कह्युं छे के आसमानमां आकमानुं तूल पवनथी जेम प्रेरित थाय छे तेम शब्दने माटे पण समजवुं. शुं वायुथी प्रतिकूल चालवानु शब्दनी बाबतमां कोइ पण शास्त्रज्ञ कहे छे ? नहि नहि सर्वे पण्डितो सानुकूलज कहे छे तेथी ए सिद्ध थयु के शब्द आकाशनो गुण नथी, एटलुज नहीं बल्के ते पुद्गलमय छे इति तात्पर्य्यार्थ ॥ आनी साक्षी तारना संदेशा अने हालना जमानामा नवी शोध प्रमाणे

शब्दोने फोनोग्राफमां उतारवामां आव्या छे ते पण आपे छे

॥ तदुक्तं आवश्यकवृत्तौ श्रीमन्मलयगिरिपूज्यैः ॥

केचित्पुनः श्रोत्रेन्द्रियस्य प्राप्यकारितामप्यभ्युपगच्छंतः शब्दस्याबरगुणत्वं प्रतिपन्नास्तदश्लीलमाकाशगुणतायां शब्दस्याऽमूर्त्तत्वप्रसक्तेः । यो हि यद्गुणः स तत्समानधर्म्मा यथा ज्ञानमात्मनस्तथा ह्यमूर्त्त आत्मा ततस्तद्गुणो ज्ञानमप्यमूर्त्तमेव । एवं शब्दोऽपि यद्याकाशगुणस्तर्ह्याकाशस्याऽमूर्त्तत्वात् शब्दस्याऽपि तद्गुणत्वेनाऽमूर्त्तता भवेत् । न चाऽसौ युक्तिसंगता तल्लक्षणायोगात् । मूर्त्तिविरहोह्यमूर्त्तता । न च शब्दाना मू-

र्त्तिविरहः स्पर्शवत्वात्। तथाहि स्पर्श
वत शब्दाः तत्संपर्के उपघातदर्श
नाल्लोष्ठवत् न चायमसिद्धो हेतुर्यते
दृश्यते सद्यो जातबालकानां कर्णदे
शान्यर्णगाढास्फालितझल्लरीझात्का
रश्रवणतः श्रवणस्फोटो न चेत्थम्
पघातकृतत्वमस्पर्शवत्वे संभवति
या विहायसस्तलो विपक्षे गमनास
भवान्नानैकान्तिकोऽपि अतश्चस्पर्श
तः शब्दास्तैरभिघाते गिरिगह्वरभि
त्त्यादिषु शब्दोत्थानात् लोष्ठुवत् अ
यमपि हेतुरुभयोरपि सिद्धस्तथा
श्रूयते तीव्रप्रयत्नोच्चारितशब्दाऽभि
घाते गिरिगह्वरादिषु प्रतिशब्दाः
तिदिक् तत स्पर्शवत्वान्मूर्त्ता एव
रूपस्पर्शादिसन्निवेशो मूर्त्तिरितिव

नात् ततः कथमिवाकाशगुणत्वं शब्दानामुपपत्तिमत् । अपि च । तदाकाशमेकमनेकं वा यद्येकं तर्हि योजनलक्षादपि श्रूयेत आकाशस्यैकत्वेन शब्दस्य तद्गुणतया दूरासन्नादिभेदाभावात् अथानेकमेवं सति वदनदेश एव विद्यत इति कथ भिन्नदेशवर्त्तिभिः श्रोतृभि· श्रूयते । वदनदेशाकाशगुणतया तस्य श्रोतृगतश्रोत्रेंद्रियाकाशसंबंधाभावात् । अथ श्रोत्रेंद्रियाकाशसंबद्धतया तच्छ्रवणमभ्युपगम्यते तन्न श्रेयानाकाशगुणत्वाभ्युपगमः । नन्वाकाशगुणत्वमतरेण शब्दस्यावस्थानमेव नोपपद्यते । अवश्यं हि पदार्थेन स्थितिमता भवितव्य । तत्र रूपस्पर्शरसगंधाना पृथिव्यादिमहा-

गाणत्वात् । यद्येवं तर्हि शब्द-
परमार्थतः स्थानं श्रोत्रादि
ाकाशेऽवस्थानं तद्वायुना सं-
णत्वात् । तथाहि यतो यतो
ंचरति ततस्ततः शब्दोऽपि
। वातप्रतिकूल शब्दस्याऽ-
त् ॥ उक्त च प्रज्ञाकरगुप्तेन ॥
व प्रेर्यते तूलमाकाशे मातरि-
। तथा शब्दोऽपि किं वायोः
कोऽपि शब्दवित् ॥ १ ॥ त-
ागुणः शब्द किंतु पुद्गल-
ति ॥

र १एए गुरुलघु अने अगुरुलघु
)

र जैन शासनमां मुख्यत्वे वे
एक व्यवहार अने बीजो नि-

ाुना

अथ तेमां व्यवहारनय वस्तुने चार प्रकारे वदे छे ते एवी रीते के गुरु, लघु, गुरुलघु अने अगुरुलघु ए चार प्रकार पैकी जे द्रव्य उंचु के आडुअवळुं फेंक्युं होय तोपण पाछुं स्वाभाविक रीते नीचे पडे ते गुरु द्रव्य कहेवाय छे जेमके पथ्थर आदि १

जे द्रव्य कुदरती रीते ऊर्ध्वगमन स्वभाववालु होय ते लघु गणाय छे जेमके दीपशिखादि. २

जे ऊर्ध्व अधोगति स्वभाववालुं न होइ तिर्य्यग्गमन धर्मने धारण करनार होय ते गुरुलघु द्रव्य जाणवु जेम पवन ३

तेमज जे उची नीची के तिर्छी गतिमाहेला एक पण स्वभाववालु न होय अथवा सर्वत्र गमन करे ते अगुरुलघु द्रव्य छे जेमके आकाश तथा परमाणु प्रमुख. ४

किंचिल्लघु । किंचिद्गुरुलघु किंचिदगुरुलघु तत्र यदूर्ध्वं तिर्यग्वा प्रक्षिप्तमपि पुनर्निसर्गादधो निपतति द्रव्यं तद्गुरु यथा लोष्ठादि । यत्तु द्रव्यं निसर्गत एवोर्ध्वगतिस्वभावं तल्लघु यथा दीपकलिकादि । यत्पुनर्नोर्ध्वगतिस्वभावं नाप्यधोगतिस्वभावं किंतु स्वभावेनैव तिर्यग्गतिधर्मक तद्गुरुलघु यथा वायुः । यत्तूर्ध्वाऽधस्तिर्यग्गतिस्वभावानामेकतरस्वभावमपि न भवति सर्वत्र वा गच्छति तदऽगुरुलघु यथा व्योमपरमाण्वादि । निश्चयनयः पुनरेवमाह । न सर्वगुर्वेकांतेन किमपि वस्त्वस्ति गुरोरपि लोष्ठादेः प्रयोगादूर्ध्वादिगमनदर्शनात् । नाप्येकांतेन सर्वलघ्वप्यस्ति । अतिलघो-

रपि वाय्वादेः करताडनादिना अधोगमनादिदर्शनात् तस्माद्द्विविधमेव वस्तु तद्यथा ॥ गुरुलघु अगुरुलघु च। तत्र यद्बादरं नून्नूधरादिकं तत्सर्वं गुरुलघु शेष तु जाषाप्राणापानमनोवर्गणादिकं परमाणुद्व्यणुकव्योमादिकं च सर्वमगुरुलघु ॥ उक्तं च निच्चयतो सवगुरुं सवलहुं वा न विद्मए दवं ॥

वायरमिह गुरुलघुय, अगुरुलहुं सेसयं दवं ॥ १ ॥ तत्रेयं गाथा निश्चयनयमतेन ॥

प्रश्न २०० मन.पर्य्यवज्ञानी घटपटादि पदार्थने देखे के नहीं ?

उत्तर. मन.पर्यवज्ञानवान् यद्यपि मनोद्रव्य सूक्ष्म छे तोपण देखी शके

छे, परंतु चितनीय घटादि स्थूल वस्तुने तो ते जोइ शकता नथी

॥ उक्तं च तदेवावश्यकवृत्तौ ॥

मन पर्यायज्ञानी मनोद्रव्याणि सूक्ष्माण्यऽपि पश्यंति चितनीयं तु घटादिकं स्थूलमपि न पश्यंति ॥

प्रश्न २०१ श्रीहेमचंद्राचार्य महाराजे त्रेसठ शलाका पुरुषचरित्र कया सूत्रना आधारे बनाव्यु ?

उत्तर कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचंद्र महाराजे देवतानी प्रसन्नताथी प्रथमानुयोग मेलवी एक रातमा तेनो सार लइ तदनुसारे त्रेसठ शलाका पुरुषनां चरित्रोनी रचना करी एवु अंचलमतनी शतपदीना सदुत्तररूप पोताना बनावेला श्राद्धविधिविनिश्चय ग्रथमां श्रीहर्षभूपणगणिए लख्यु छे

॥ तद्यथा ॥

श्रीहेमाचार्याः प्रथमानुयोगं देवताप्रसादाल्लब्ध्वैकरात्रावऽवधार्य च तदनुसारेण त्रिषष्टिचरित्राणि जंग्रथुरिति ॥

प्रश्न २०२ हंस समान शिष्य केवो होय ?

उत्तर हंस जेम क्षीर अने नीर एकत्र मलेलुं होय तोपण तेमांथी जलनो त्याग करी दुध पीए ठे तेवी रीते शिष्य पण जे गुरुना अनुपयोगथी संजवित दोषोनो त्याग करी केवल गुणोनेज ग्रहण करे ते हंस समान होइ एकांते योग्य गणाय ठे

॥ तथोक्तं नंदीसूत्रपर्यायवृत्तौ. ॥

यथा हंसः क्षीरमुदकमिश्रितमपि उदकमऽपहाय क्षीरमापिबति तथा

॥ उक्तंच ॥

अवतणेण जीहाए
कूचिया होइ खीरमुदयंमि ॥
हंसो मोतूणजलं
आपिवयइ पयं तह सुसीसो ॥ १ ॥

प्रश्न २०४. साधुओ अतिचार दोपनी विशुद्धि माटे हमेश दिवस अने रात्रिना अवसानमां प्रतिक्रमण करे छे छतां पक्खि चोमासी अने संवछरी प्रतिक्रमण शामाटे करता हशे ?

उत्तर जेम कोइ माणस तेल आमला अने जलादिकथी शरीरनो संस्कार करी नाह्यो होय तोपण धूप विलेपन अने नूपण वस्त्रादिवके उत्तरकरण करे छे एवी रीते साधुउ पण दिवसना प्रतिक्रमणथी विशुद्ध चारित्रवंत होय छे, तथापि पक्खि प्रमुख विशेप प्रतिक्रमणथी उत्तरकरण करे छे. वली जेम घरने प्रतिदिन

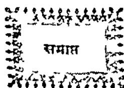
साफ करवामां आवे छे, तोपण पक्ष सधीमां विशेष प्रकारे साफसुफ कराय छे तेवी रीते इहां पण पक्खि चोमासी अने संवछरी प्रतिक्रमणनी बाबतमां समजवु आ प्रमाणे पाक्खिसूत्रनी बृहद्वृत्तिमां श्रीयशोदेवसूरि महाराज लखे छे

॥ तद्यथा ॥

यथा कश्चित्पुरुषस्तैलामलकजलादिभिः कृतशरीरसंस्कारोपि धूपनविलेपनभूषणवस्त्रादिभिरुत्तरकरणं विधत्ते एवं साधवोऽपि दिनप्रतिक्रमणेन विशुद्धचरणा अपि पाक्षिकादिषु विशेषप्रतिक्रमणेनोत्तरकरणं कुर्वंति शुद्धिशेष कुर्वत इत्यर्थ ।किंच। जह गेह पइदिवसं सोहियं तहवि पक्खसंधीसु सोहिजइ सविसेस एव इह इपि नायवं ॥

॥ इति तपगच्छगगनांगणदिनमणि-
श्रीविजयानंदसूरीश्वरशिष्यपण्डि-
तश्रीलक्ष्मीविजयजिच्छिष्यहंस-
विजयविरचिता प्रश्नोत्तरपु-
ष्पमाला संपूर्णा लिखिता
च प्रथमपन्न्यासश्रीसंप-
द्विजयगणिना संवत्०
१९६३ माघशुक्ल-
दशम्याम् ॥

प्रमादाद्वा मतेर्मांद्यात्,
प्रोक्तमुत्सूत्रमत्र यत् ॥
तन्मिथ्यादुष्कृतं मेऽस्तु,
शोधनीयं च धीधनै ॥ १ ॥



शुद्धिपत्र.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६५	१	विलोक्य	त्रिलोकय
७४॰	१२	वरसचि	वररुचि
१६०	१७	धा–	धान्याना वि–
२०६	४	प्रमाणे –	प्रमाणे–
२३७	१३	जिणशुद्धि	जिणरुद्धि
२३ए	१५	चित्राद्यलकारा लकारा	चित्राद्यलकारा
२४३	१	व्यवस्थापिका	ऽव्यवस्थापिका
२४३	१६	पाची	ऽपाची
२६४	१७	दाल्रत थी	दोलतथी
२७०	५	सूरीश्चर	सूरीश्वर
२७४	५	पराए	परेए
२७६	५	यथा	यथा ॥ २ ॥
२०१	२	जा–	जो–
२०६	३	सविज्ञा	सनिज्ञो
२०६	१०	डडीरवत्	डिंडिरवत्
२०७	१७	जण्णत्वना	जण्णत्वनो
२ए१	१५	जतरया	जतराय
२ए७	१७	स्मृति	स्मृति
३०२	१०	वाऽलोक	वाश्चालोक
३१ए	४	जग्र–	जग्र–
३२२	१७	इपि	यपि
३२४	६	प्रथम	प्रथम

शुद्धपत्र.

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६५	१	विलोक्य	विलोकय
७४	१२	वरसचि	वररुचि
१६०	१७	धा–	धान्याना वि–
२०६	४	प्रमाणे.–	प्रमाणे–
२३७	१३	जिणशुद्धि	जिणऋद्धि
२३९	१५	चित्राद्यलंकारा सकारा	चित्राद्यलंकारा
२४३	१	व्यवस्थापिका	व्यवस्थापिका
२४३	१६	पाची	ऽपाची
२६४	१७	दाखत थी	दोखतथी
२७०	५	सूरीश्वर	सूरीश्वर
२७४	५	परण	परेण
२७६	५	यथा	यथा ॥ २ ॥
२८१	२	जा–	जो–
२८६	३	सविज्ञा	सन्निज्ञो
२८६	१०	इंडीरवत्	डिंडिरवत्
२८७	१७	त्पण्णरयना	त्पण्णरयनो
२९१	१५	छतरया	छतराय
२९७	१७	स्मृति	स्मृति
३०२	१८	वाऽऽलोक	वाऽऽलोक
३१९	४	जम–	जम्–
३२२	१७	इपि	यपि
३२४	६	प्रयम	प्रथम